सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 122, नई दिल्ली, शुक्रवार 11 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 "आप" ने 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने की मांग उठाई...
06 भारत को एक राष्ट्र के रूप में जल सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी
08 बलांगीर से नुआपाड़ा तक नई रेलवे लाइन का निर्माण किया जाएगा

रेलवे क्रॉसिंग को सीसीटीवी और आधुनिक उपकरणों से लैस करने का आदेश, सुरक्षित रेलयात्रा की है तैयारी

परिवहन विशेष न्यूज

रेलवे क्रॉसिंग पर होने वाले हादसों को रोकने के लिए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अफसरों के साथ मीटिंग की। सभी लेवल क्रॉसिंग पर सीसीटीवी कैमरे और रिकॉर्डिंग सिस्टम लगाने के निर्देश दिए गए हैं। बंद किए गए क्रॉसिंग को फिर से खोलने की नीति पर भी विचार किया जाएगा। मंत्रालय का लक्ष्य है कि रेलवे को आधुनिक बनाकर यात्रियों का सफर सुरक्षित बनाया जा सके।

नई दिल्ली। रेलवे क्रॉसिंग पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने और लोगों की परेशानी दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। इस संबंध में केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक में सभी लेवल क्रॉसिंग (एलसी) पर सीसीटीवी कैमरे, रिकार्डिंग प्रणाली आदि लगाने का निर्देश दिया। इसके साथ ही पांच दिवसीय सुरक्षा निरीक्षण अभियान भी शुरू किया गया।

विचार-विमर्श करने के बाद लिए गए।

महत्वपूर्ण निर्णय

अधिकारियों ने बताया कि अपने पिता के निधन के एक दिन बाद ही रेल मंत्री ने बुधवार को टेलीफोन के माध्यम से रेलवे सुरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने के लिए समीक्षा बैठक की। 'लेवल क्रॉसिंग गेट सुरक्षा' पर अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श करने के बाद महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

सभी एलसी गेट पर सीसीटीवी कैमरे, रिकॉर्डिंग प्रणाली लगाने के साथ ही इंटरलॉकिंग का कार्य करने, बिजली आपूर्ति में सुधार के लिए सोलर पैनल लगाने, बैटरी बैकअप की व्यवस्था करने को कहा गया गया है।

वायस लागर प्रणाली को भी करेंगे एक्टिवेट

आदेश में यह भी कहा गया है कि सड़क यातायात के लिए बंद किए गए क्रॉसिंग को फिर से खोलने की नीति की समीक्षा की जाएगी। उसके बाद कोई निर्णय लिया जाएगा। गैर इंटरलॉक गेट पर वायस लागर प्रणाली की कार्यशीलता की पुष्टि मंडल रेल प्रबंधक करेंगे।

रोड अंडरब्रिज और रोड ओवरब्रिज के निर्माण में लाएंगे तेजी

आवाज की रिकॉर्डिंग की जांच भी जाएगी। सभी एलसी गेट पर स्पीड ब्रेकर, चेतावनी बोर्ड आदि में आवश्यक सुधार किए जाएंगे। इस तरह के क्रॉसिंग को समाप्त करने के लिए रोड अंडरब्रिज और रोड ओवरब्रिज के निर्माण कार्य में तेजी लाई जाएगी।

उन क्रॉसिंग की सूची तैयार करने का भी निर्देश दिया गया है जहां विवाद या मारपीट की घटनाएं घटित होती हैं। सभी क्षेत्रीय रेलवे को कम समय में इन कार्यों को पूरा करने का निर्देश दिया गया है।

क्यों दिया गया है रेल मंत्रालय की ओर से यह आदेश

बीते कुछ वर्षों में रेलवे में दुर्घटनाओं में कमी तो आई है लेकिन यह अब भी पूरी तरह से बंद नहीं हो सके हैं। ऐसे में रेल मंत्रालय का प्रयास है कि आधुनिक उपकरणों से रेलवे को लैस करने से रेलयात्रियों का सफ़र सुरक्षित किया जा सके। यह आदेश इसी लक्ष्य की प्राप्ती के लिए दिया गया है।

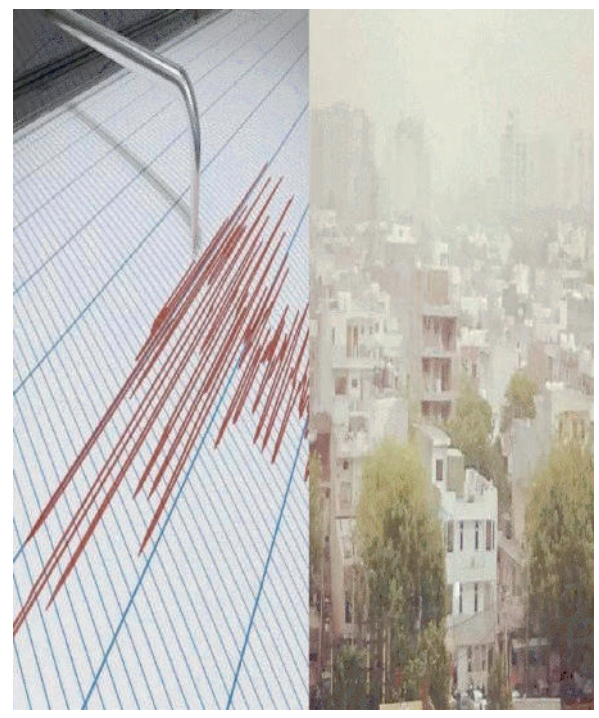

अचानक 3 मिनट तक क्यों थम गए दिल्ली मेट्रो के पहिए? दिल्ली एनसीआर के लोगों में दहशत; बयां किया डरावना दृश्य

दिल्ली में गुरुवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए जिसके चलते दिल्ली मेट्रो की ट्रेनों को एहतियात के तौर पर कुछ समय के लिए रोक दिया गया। लोगों ने बताया कि उन्हें जमीन हिलने जैसा महसूस हुआ। भूकंप का केंद्र हरियाणा के झज्जर जिले में था जहां इसकी तीव्रता 4 .4 मापी गई। दिल्ली-एनसीआर में पहले भी भूकंप आ चुके हैं जिसके कारण लोगों में डर का माहौल है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में गुरुवार को भूकंप के झटके महसूस किए गए। इस कारण मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के अनुसार, एहतियात के तौर पर दिल्ली मेट्रो ट्रेनों को 2-3 मिनट के लिए रोक दिया गया। एक यात्री अरशद ने कहा, "ट्रेन सुबह लगभग 9.04-9.05 बजे रुकी। हमें (भूकंप) महसूस नहीं हुआ।" इस बीच, दिल्ली-एनसीआर के लोगों ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई जमीन को जोर से हिला रहा हो।

हरियाणा के गुरुग्राम में एक व्यक्ति ने कहा, ₹हम यहां बैठकर चाय पी रहे थे, तभी मुझे अचानक तेज भूकंप का झटका महसूस हुआ। मैंने सभी को इमारत से बाहर निकलने के लिए कहा। सभी लोग बाहर भागे।₹ गुरुग्राम में एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "कुछ सेकंड के लिए, ऐसा लगा जैसे जमीन जोर से हिल रही हो। हम सभी बाहर भागे।"

गाजियाबाद में भी महसूस हुए झटके

गाजियाबाद के स्थानीय लोगों की भी ऐसी ही प्रतिक्रियाएं सामने आईं। गाजियाबाद के एक दुकानदार ने कहा, "भूकंप काफी तेज था। मैं अपनी दुकान पर था, जब भूकंप आया, ऐसा लगा जैसे कोई दुकान हिला रहा हो।"

एक अन्य स्थानीय व्यक्ति ने कहा, ₹मैं ठीक उसी समय जाग गया था जब झटका लगा। मैं डर गया था। कुछ दिन पहले ही एक और भूकंप आया था। दिल्ली-एनसीआर में अक्सर भूकंप आते रहते हैं। इसलिए हमें सुरक्षा और सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए।₹ दिल्ली के एक निवासी ने कहा, ₹मैंने भूकंप के झटके महसूस किए। यह थोड़ा डरावना था। ऐसा होने पर हमें सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए।"

दिल्ली के आसपास के इलाकों में झटके महसूस हुए

राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के अनुसार, सुबह हरियाणा के झज्जर जिले में 4.4 तीव्रता का भूकंप आया। दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद और आसपास के इलाकों में भूकंप के तेज़ झटके महसूस किए गए। एनसीएस के अनुसार, भूकंप सुबह 9:04 बजे झज्जर में 10 किलोमीटर की गहराई पर आया।

राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (एनसीएस) के अनुसार, 17 फरवरी को रिक्टर पैमाने पर 4.0 तीव्रता का एक ऐसा ही भूकंप दिल्ली-एनसीआर में 5 किमी की गहराई पर आया। सुबह 5:36 बजे तेज झटके महसूस किए गए। अचानक आए झटकों से लोग दहशत में अपने घरों से बाहर निकल आए।

कांवड़ यात्रा: 15 की बजाय हर 10 मिनट में मिलेगी नमो भारत ट्रेन, यात्री बढ़ने की संभावना पर बढ़ाई फ्रीक्वेंसी

गाजियाबाद में कांवड़ यात्रा के दौरान नमो भारत ट्रेन की फ्रीक्वेंसी बढ़ाई जाएगी। 11 जुलाई से हर 10 मिनट में ट्रेन मिलेगी पहले 15 मिनट में मिलती थी। सावन में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने के कारण एनसीआरटीसी ने यह फैसला लिया है। यह सुविधा सुबह 8-11 और शाम 5-8 बजे तक ही मिलेगी। निजी वाहनों से पार्किंग पर दबाव बढ़ेगा।

गाजियाबाद: कांवड़ यात्रा के दौरान नमो भारत ट्रेन के लिए लोगों को ज्यादा समय तक इंतजार नहीं करना पड़ेगा।

इस दौरान 15 मिनट के स्थान पर 10 मिनट में ट्रेन प्लेटफार्म पर पहुंचेगी। कांवड़ यात्रा के दौरान नमो भारत ट्रेन में यात्रियों की संख्या बढ़ जाएगी।

सावन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु हरिद्वार से कांवड़ लाने के लिए यात्रा करते हैं। दिल्ली-मेरठ और आसपास के क्षेत्र के बड़े स्तर पर श्रद्धालु कांवड़ लाते हैं। 11 जुलाई से सावन शुरू हो जाएगा।

यात्रियों और श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एनसीआरटीसी (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम) ने नमो भारत ट्रेन की फ्रीक्वेंसी बढ़ाने का फैसला लिया है।

कांवड़ यात्रा के दौरान नमो भारत ट्रेन 15 मिनट के बजाय 10 मिनट के अंतराल पर चलेगी। यह सुविधा सुबह आठ से 11 बजे तक और शाम को पांच बजे से आठ बजे के बीच ही मिलेगी।

वर्तमान में नमो भारत ट्रेन 11 स्टेशनों के बीच 55 किलोमीटर दौड़ रही है। वहीं, कांवड़ यात्रा शुरू होने पर अधिक संख्या में निजी वाहन चालक भी नमो भारत ट्रेन से यात्रा करेंगे। ऐसे में स्टेशनों की पार्किंग पर दबाव बढ़ जाएगा।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

ड्राइवरों की हड़ताल से राज्य में बड़ा तेल संकट पैदा हुआ

मनोरंजन सासमल, वरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: ड्राइवरों के आंदोलन के कारण राज्य में तेल का बड़ा संकट पैदा हो जाएगा। दो दिनों से तेल टैंकरों की आवाजाही नहीं हुई है। कल भी कोई टैंकर नहीं आया था। इसलिए आज राज्य में तेल खत्म हो जाएगा। संकट की स्थिति होगी, ऐसा पेट्रोल पंप मालिक संघ के महासचिव संजय लाठ ने कहा। हड़ताल जारी रहने पर भी पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन पेट्रोलियम क्षेत्र को इससे बाहर रखने की मांग कर रहा है।पेट्रोल पंपों में आमतौर पर तीन दिन का स्टॉक होता है। रोज़ाना 3,607 किलोलीटर पेट्रोल और 8,500 किलोलीटर डीज़ल की ज़रूरत होती है। आज कई टैंकों में तेल खत्म हो जाएगा। शाम तक, हर जगह तेल खत्म हो जाएगा।

तेल आंदोलन की जीवन रेखा है। स्वास्थ्य, क़ानून-व्यवस्था पर बुरा असर पड़ेगा। क़ीमतें बढ़ेंगी। सवाल उठता है कि इतनी ज़रूरी सेवा क्यों बंद की गई है?

सरकार को सख़्त आदेश जारी करने चाहिए। अगर कोई इसे रोकता है तो कार्रवाई होनी चाहिए। पाराद्वीप, जटनी, झारसुगुड़ा, बालासोर में तेल डिपो हैं। पाराद्वीप से तेल कालाहांडी जा रहा है। पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन ने सरकार से तुरंत हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है। सरकार को बातचीत करके ज़रूरी सेवाएँ बहाल करनी चाहिए। कहा जा रहा है कि डिपो से तेल लोड करके ज़िला कलेक्टर और एसपी के ज़रिए पेट्रोल पंप तक पहुँचाना ज़रूरी है।

ओडिशा ड्राइवर्स एसोसिएशन संचालन समिति की स्टीयरिंग हड़ताल के मुद्दे पर आपूर्ति एवं उपभोक्ता कल्याण मंत्री कृष्ण चंद्र पात्रा ने बात की है। उन्होंने कहा कि गुरुवार रात तक बातचीत के बाद समस्या का समाधान हो जाएगा। सरकार ड्राइवरों की ज़्यादातर माँगें मान लेगी। हम राज्य में ईंधन की कमी नहीं होने देंगे।मंत्री ने कहा कि किसी को घबराने की ज़रूरत नहीं है, टैंक में तेल भरा है। बाज़ारों में खाने-पीने की चीज़ों की कोई कमी नहीं है। अगर कोई कालाबाज़ारी करता है, तो उसके ख़िलाफ़ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

श्रावण (11 जुलाई से 09 अगस्त 2025) में विशेष अद्भुत व अनौखी होती है श्रावण मास में ब्रज की छटा

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

ब्रज में श्रावण मास की छटा अद्भुत व अनौखी होती है। जो कि देखते ही बनती है। हर ओर अत्यंत हर्षोल्लास रहता है। वन-उपवन और कुंज लताओं की हरीतमा के मध्य नृत्य करते मयूरों के झुंड श्रावण के आगमन पर अपने पंख फैलाकर कुहुकने लगते हैं। वर्षा की नन्ही रिमझिम व बड़ी फुहारों के मध्य समूचा ब्रज प्रिया-प्रियतम में भाव निमग्न होकर झूमने लगता है। यहां श्रावण का अर्थ है- झूले, कजरी, बरसते मेघ, भीगता मन, खनकती चूड़ियाँ और खिलती महंदी। प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि वह आकाश को छू ले। यहां के विभिन्न मंदिरों में झूलों, हिंडोलों, रासलीला, मल्हार गायन व सत्संग-प्रवचन आदि की विशेष धूम रहती है। देश-विदेश के विभिन्न दूरवर्ती स्थानों से आये भक्त-श्रद्धालुओं व पर्यटकों का जमघट इस धूम का और अधिक सम्वर्धन कर देता है। इस माह में प्रायः प्रत्येक मन्दिर-देवालयों में हिंडोले सजाये जाते हैं। हिंडोले उन्हें कहते हैं कि जिनमें बैठकर ठाकुर जी झूला झूलते हैं। ₹भक्ति रसामृत सिंधु₹ ग्रंथ में यह लिखा है कि भक्ति के जो 64 अंग हैं उनमें एक अंग हिंडोला उत्सव भी है। साथ ही मन्दिरों को केले के पत्तों, फूल-पत्तियों, कांच की रंगीन पिछ्वाईयों व पर्दों आदि से सजाया जाता है, जिसे कि घटा कहते हैं। कभी काली घटा, कभी हरी घटा, कभी लाल घटा। कुछ मन्दिरों में नित्य नए-नए प्रकार के हिंडोले सजाये जाते हैं। जिनमें ठाकुर विग्रह विराजित कर उनका मालपूए, घेवर व फैनी आदि से भोग लगाया जाता है। वस्तुतः ब्रज के प्रायः सभी ठाकुर विग्रह पूरे श्रावण मास यह मिष्ठान अगोरते रहते हैं। भगवान शिव को श्रावण मास अत्यंत प्रिय है। जो व्यक्ति पूरे श्रावण मास भर उनकी पूजा-अर्चना व व्रत आदि के द्वारा उन्हें प्रसन्न कर लेते हैं, उनकी समस्त मनोकामनायें पूर्ण हो जातीं हैं। श्रीधाम वृन्दावन के वंशीवट क्षेत्र स्थित गोपीश्वर महादेव मंदिर में इस मास शिव भक्तों का तांता लगा रहता है। भक्तगण उनका रुद्राभिषेक कर भांति-भांति से उनकी पूजा-अर्चना करते हैं।

ब्रज में श्रावण शुक्ल तृतीया को हरियाली तीज का त्योहार अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस पर्व में माँ पार्वती की पूजा का विधान है। ऐसा माना जाता है कि इसी व्रत के फल-स्वरूप पार्वती जी ने भगवान शिव को प्राप्त किया था। ब्रज में हरियाली तीज का त्योहार यहां की जीवन-शैली का एक अविभाजित हिस्सा है। यहाँ यह त्योहार भगवान श्रीकृष्ण और उनकी आल्हादिनी शक्ति राधा रानी के ₹झूलनोत्सव₹ के रूप में तीज से लेकर रक्षा बंधन तक पूरे 13 दिनों अत्यंत धूमधाम के साथ मनाया जाता है। साथ ही यहाँ इन दिनों सर्वत्र हिंडोला उत्सव की बहार आ जाती है। इस उत्सव के दौरान यहां के हर एक मन्दिर में हिंडोला पड़ जाता है और उनमें नित्य-प्रति संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य झूले के पदों का गायन प्रारंभ हो जाता है। स्वर्ण व रजत मण्डित एवं विशाल व कलात्मक हिंडोले केवल ब्रज के मंदिरों में हीं दिखाई देते हैं। जो कि यहां के मंदिरों के वैभव व सम्पन्नता के प्रतीक हैं।

ब्रज के मन्दिरों में ₹हिंडोला उत्सव₹ अर्थात ₹झूलनोत्सव₹ का शुभारंभ महाप्रभु बल्लभाचार्य के समय में हुआ था।

हरियाली तीज पर वृन्दावन का विश्वविख्यात ठाकुर बाँके-बिहारी मंदिर सभी के आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहता है। क्योंकि यहां वर्ष भर में केवल इसी एक दिन ठाकुर बाँके बिहारी जी महाराज को सोने व चांदी से बने अत्यंत भव्य व विशाल 218 किलो वजनी हिंडोले में झुलाया जाता है। यह हिंडोला सन 1947 में ठाकुर श्री बाँके बिहारी महाराज के अनन्य भक्त सेठ स्व. हरगुलाल बेरीवाला ने वाराणसी से कुशल कारीगरों को बुलाकर बनवाया था। यह हिंडोला उत्कृष्ट कारीगरी का नायाब नमूना है।

ठाकुर राधा-रमण मन्दिर वृन्दावन का प्रख्यात मन्दिर है। यहां हरियाली तीज के प्रथम तीन दिन सोने, अगले तीन दिन चांदी और फिर पूर्णिमा तक के शेष साथ दिन तक फूल-पत्ती आदि के भव्य हिंडोलों में लम्बे-लम्बे झोटे देकर ठाकुर जी को झुलाया जाता है।

वृन्दावन के ठाकुर राधादामोदर मन्दिर में हरियाली तीज से रक्षा बन्धन पर्यंत झूलन यात्रा महोत्सव की अत्यधिक धूम रहती है। इस दौरान ठाकुर जी को काष्ठ से सुसज्जित हिंडोले में झुलाया जाता है। इस दर्शन हेतु भक्त श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ता है। साथ ही लोग-बाग इस मंदिर की चार परिक्रमा भी करते हैं। क्योंकि यह मान्यता है कि इस मंदिर की चार परिक्रमा करने गिरिराज गोवर्धन की सप्तकोसीय परिक्रमा का पुण्य फल प्राप्त होता है।

उत्तर को दक्षिण से जोड़ने वाले वृन्दावन के प्रख्यात ठाकुर रँगलक्ष्मी मन्दिर में चांदी और शाहजी मन्दिर में सोने के हिंडोले में ठाकुर जी को झुलाया जाता है। शाहजी मन्दिर में रक्षा बंधन के दिन भक्त-श्रद्धालुओं को झाड-फ़ानूश से सुसज्जित बसन्ती कमरे के दर्शन भी कराए जाते हैं। यह कमरा वर्ष भर में केवल रक्षा बंधन व बसंत पंचमी पर ही खोला जाता है।

राधारानी की क्रीड़ा स्थली बरसाना के श्रीजी मन्दिर में भी हिंडोला उत्सव हरियाली तीज से रक्षा बन्धन तक मनाया जाता है। इस दौरान राधारानी के श्रीविग्रह को भव्य स्वर्ण हिंडोले में गीत-संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के साथ झुलाया जाता है। जबकि नंदगांव के नन्दबाबा मन्दिर में ठाकुर जी को विशालकाय चांदी के हिंडोले में झुलाया जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण के अग्रज ठाकुर दाऊदयाल की नगरी बल्देव के दाऊजी मन्दिर में श्रावण शुक्ल एकादशी से श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तक भगवान श्रीकृष्ण के अग्रज दाऊजी व उनकी भार्या रेवती मैया के श्रीविग्रहों के समक्ष जगमोहन में 15-15 फुट के स्वर्ण व रजत जड़ति हिंडोले स्थापित कर दिये जाते हैं। साथ ही स्वर्ण जड़ति दर्पण में पड़ने वाले दाऊजी और रेवती मैया के प्रतिविम्बों को उक्त हिंडोलों में झुलाया जाता है। क्योंकि इन दौनों के विग्रह बड़े होने के कारण हिंडोलों में विराजित नही किये जा सकते हैं।

मथुरा के ठाकुर द्वारिकाधीश मन्दिर एवं गोकुल के विभिन्न बल्लभकुलीय मन्दिरों में श्रावण के प्रारंभ से रक्षाबंधन तक निरन्तर एक माह प्रतिदिन ठाकुर जी को हिंडोले में अत्यंत भाव व श्रद्धा के साथ झुलाया जाता है।यहाँ सोने का एक एवं चांदी के दो विशालकाय हिंडोले हैं। द्वारिकाधीश मन्दिर में हिंडोला उत्सव प्रायः श्रावण कृष्ण द्वितीया से प्रारंभ होकर भाद्र कृष्ण द्वितीया तक चलता है। इस दौरान श्रावण शुक्ल अष्टमी को लाल घटा, श्रावण शुक्ल दशमी को गुलाबी घटा, श्रावण शुक्ल द्वादशी को काली घटा, श्रावण शुक्ल चतुर्दशी को लहरिया घटा सजाई जाती है।

इस अनूठे हिंडोला झूलनोत्सव के दर्शन करने के लिए अपने देश के सुदूर प्रांतों से और विदेशों से भी असँख्य दर्शनार्थी यहां प्रतिवर्ष आते हैं। जो कि यहां के विभिन्न मंदिरों में सजाये गए हिंडोलों और घटाओं के मध्य राधा-कृष्ण के अद्भुत रूप-माधुर्य का दर्शन सुख प्राप्त कर कृतार्थ होते हैं। इस प्रकार समूचा ब्रज पूरे श्रावण मास सोने, चांदी व पुष्पों से आच्छादित हिंडोलों के द्वारा श्यामा-श्याम मय रहता है।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार व आध्यात्मिक पत्रकार हैं)
डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

#अस्त्र_एवं_शस्त्र_में_अंतर:

आज से हम अस्त्र-शस्त्रों पर एक श्रृंखला आरम्भ कर रहे हैं।

आम तौर पर हम अस्त्र एवं शस्त्र का उपयोग एक ही पर्यायवाची के रूप में करते हैं जैसा कि हमने पहले वाक्य में किया, किन्तु वास्तव में इन दोनों में अंतर होता है।

दोनों ही आयुध हैं और दोनों का ही प्रयोग शत्रु को ह्लाहत करने के लिए किया जाता है, किन्तु इनके उपयोग की विधि अलग-अलग है।

इससे पहले कि हम विभिन्न प्रकार के अस्त्र एवं शस्त्रों के विषय में जानें, हमें ये ज्ञान होना आवश्यक है कि वास्तव में ये दोनों होते क्या हैं।

इस लेख में हम इन दोनों के बीच का मूल अंतर समझेंगे।

अगर अस्त्र एवं शस्त्र के बीच के अंतर को एक वाक्य में बताया जाये तो वो ये है कि "अस्त्र ऐसे आयुध होते थे जो दूर से छोड़े जा सकते थे और शस्त्र ऐसे आयुध होते थे जिसे हाथ में लेकर ही प्रहार किया जा सकता था और उससे बहुत दूर तक नहीं छोड़ा जा सकता था।"

अस्त्रों में बाण, चक्र इत्यादि का वर्णन आता है वहीँ शस्त्रों में अधिक आयुध आते हैं जैसे तलवार, खड्ग, गदा, भाला इत्यादि।

शस्त्र सभी योद्धा के पास हुआ करते थे किन्तु ये आवश्यक नहीं था कि अस्त्र सभी योद्धा के पास हों।

यही कारण है कि आम भाषा में हम योद्धा को "शस्त्रधारी" कहते हैं, "अस्त्रधारी" नहीं।

कुछ अस्त्र ऐसे होते थे जो बहुत #शक्तिशाली होते थे और देवताओं से प्राप्त किये जाते थे।

उसे #दिव्यास्त्र कहते थे और उसे मन्त्रों द्वारा सिद्ध और #प्रक्षेपित किया जा सकता था।

दिव्यास्त्र की सहायता से कोई भी योद्धा बड़ी मात्रा में शत्रुओं की प्राणहानि कर सकता था।

दिव्यास्त्र कई हैं जैसे आग्नेयास्त्र, वरुणास्त्र, पर्जन्यास्त्र, पर्वतास्त्र इत्यादि।

शस्त्रों में स्वयं के कौशल और बाहुबल का परिचय देना होता था, तो हम ये कह सकते हैं शस्त्र के सञ्चालन में शक्ति और युक्ति दोनों लगते थे।

आम तौर पर दिव्य या मन्त्रसिद्ध शस्त्रों का बहुत वर्णन नहीं आता है किन्तु कुछ शस्त्र ऐसे हैं जो दिव्य थे और मन्त्रों से सिद्ध किये जा सकते थे।

जैसे भगवान विष्णु की कौमोदीकी गदा, नन्दक तलवार, भगवान शंकर का त्रिशूल और इंद्र का वज्र इत्यादि।

अस्त्र और शस्त्रों को मुख्यतः 4 भागों में बांटा गया है:

#अमुक्ता:
ऐसे आयुध जिन्हे फेंका नहीं जाता था।
जैसे गदा, खड्ग, परशु, तलवार इत्यादि।
इस श्रेणी में मुख्यतः शस्त्र ही आते हैं।

#मुक्ता:
ऐसे आयुध जिन्हे फेंका जा सकता था।
इसमें अस्त्र एवं शस्त्र दोनों आते हैं किन्तु अधिकतर अस्त्र ही होते हैं।

इसके भी दो प्रकार माने गए हैं:

#पाणिमुक्ता:
ऐसे आयुध जिसे हाथ से छोड़ा जा सके।
जैसे भाला, त्रिशूल इत्यादि।

इसके अतिरिक्त कई ऐसे दिव्यास्त्र होते थे जिसे मंत्रसिद्ध कर हाथ से छोड़ा जा सकता था।

#यंत्रमुक्ता:
ऐसे आयुध जिसे छोड़ने हेतु किसी यंत्र की आवश्यकता होती हो।
जैसे बाण को छोड़ने के लिए धनुष की आवश्यकता होती है।

#मुक्तामुक्त:
ऐसे आयुध जो पकड़कर या फेंक कर दोनों तरीके से उपयोग में लाये जा सकते हों।
जैसे त्रिशूल एवं भाला।

#मुक्तसंनिवृत:
ऐसे आयुध जिसे छोड़ कर पुनः लौटाया जा सकता हो।
इसमें मुख्यतः दिव्यास्त्र ही होते थे।
जैसे भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र।

देवताओं के अस्त्रों को दिव्यास्त्र कहा जाता था जिसे मंत्रसिद्ध कर उपयोग में लाया जाता था।

दिव्यास्त्र कई थे और प्रत्येक देवता का अपना दिव्यास्त्र होता था।

किसी मनुष्य को दिव्यास्त्र प्राप्त करने हेतु देवताओं को प्रसन्न करना होता था।

जैसे महाभारत में भीष्म, द्रोण, कर्ण और अर्जुन के पास अनेकानेक दिव्यास्त्र थे।

अधिकतर दिव्यास्त्र मंत्रसिद्ध होते थे इसी कारण उसका ज्ञान दूसरे लोगों को दिया जा सकता था किन्तु कुछ दिव्यास्त्रों को हस्तानांतरित नहीं किया जा सकता था और उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद वो पुनः अपने देवता के पास लौट जाता था।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु और श्री मदभागवत कथा की विशेष

गुरु पूर्णिमा पर ज्ञान, श्रद्धा और समर्पण का पर्व है, जो आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय'

जामुई बिहार खैरा मे गौरी शंकर प्रिया ने विशेष रूप से चर्चा करते हुए बताया कि

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान अत्यंत उच्च और पूजनीय माना गया है। 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है प्रकाश। जो अज्ञान के अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाए, वही सच्चा गुरु होता है। गुरु हमें सही दिशा दिखाते हैं, जीवन को सार्थक बनाते हैं। गुरु पूर्णिमा का पर्व गुरु पूर्णिमा का महत्व

पर बिहार के जमुई की साधारण परिवार में जन्मी गौरी शंकर प्रिया ने कहा गुरु पूर्णिमा आषाढ़ मास की पूर्णिमा तिथि को मनाई जाती है। इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है क्योंकि इसी दिन महर्षि वेदव्यास का जन्म हुआ था, जिन्होंने वेदों को चार भागों में विभाजित कर मानवता को ज्ञान का अमूल्य खजाना दिया। यही कारण है कि उन्हें सभी गुरुओं का गुरु माना जाता है।

गुरु का जीवन में स्थान

प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से लेकर आज के आधुनिक शिक्षण संस्थानों तक, गुरु का स्थान अपरिवर्तित रहा है। वे न केवल विषय ज्ञान देते हैं बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिकता, अनुशासन और आदर्शों का बीजारोपण भी करते हैं। कबीरदास जी ने कहा है:

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताए॥'

यह दोहा गुरु की महिमा को दर्शाता है, जो ईश्वर का मार्ग दिखाते हैं।

गुरु पूर्णिमा के दिन छात्र और अनुयायी अपने-अपने गुरु के पास जाकर उन्हें श्रद्धा और सम्मान अर्पित करते हैं। मंदिरों, आश्रमों और शिक्षण संस्थानों में विशेष कार्यक्रम, प्रवचन, भजन और पूजा-अर्चना की जाती है। कई लोग इस दिन उपवास रखते हैं और आत्मचिंतन करते हैं।

आज के समय में जब शिक्षा व्यवसाय बनती जा रही है, तब गुरु पूर्णिमा जैसे पर्व हमें गुरु-शिष्य परंपरा की पवित्रता और गहराई का स्मरण कराते हैं।

आधुनिक समय में आध्यात्मिक गुरु की भूमिका

आज के समय में भी शिक्षक (गुरु) समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तकनीक के युग में जहां इंटरनेट और मोबाइल ने सूचनाओं की भरमार कर दी है, वहां सही और गलत की पहचान कराने वाला मार्गदर्शक केवल एक गुरु ही हो सकता है।

सांसारिक ज्ञान के अलावा गुरु का एक और रूप है - आध्यात्मिक गुरु। यह गुरु शिष्य को आत्मा, परमात्मा, मोक्ष और जीवन के वास्तविक उद्देश्य का ज्ञान कराता है। जैसे – श्री रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद का संबंध, संत कबीर और उनके शिष्य रैदास का जुड़ाव। यह दर्शाते हैं कि आध्यात्मिक गुरु शिष्य को लोक और परलोक दोनों में सफल बनाता

गुरु पूर्णिमा केवल एक पर्व नहीं, यह कृतज्ञता का प्रतीक है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन में सफलता केवल किताबों के ज्ञान से नहीं, बल्कि एक सच्चे गुरु के मार्गदर्शन से ही मिलती है। हमें चाहिए कि हम अपने गुरुओं का सम्मान करें, उनके दिखाए मार्ग पर चलें और ज्ञान को जीवन में उतारें। तभी यह पर्व वास्तव में सार्थक होगा।

सनातन धर्म में गुरु और शिष्य की परंपरा आदिकाल से ही चली आ रही है। तभी तो संत करीबदास लिखते है कि ₹ गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाये, बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो मिलायेर₹।

इस तिथि को आषाढ़ पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा और वेद व्यास जयंती के नाम से भी जाना जाता है। गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु पूजन और आशीर्वाद लेने का विशेष महत्व होता है। वैसे तो हर माह की पूर्णिमा का विशेष महत्व होता है लेकिन आषाढ़ माह की पूर्णिमा गुरु को समर्पित होती है। दिन शिष्य अपने गुरुओं का आभार व्यक्त करते हुए उनका नमन करते हैं। गुरु ही व्यक्ति को अज्ञानता से निकालकर प्रकाश रूपी ज्ञान की तरफ ले जाता है। शास्त्रों के अनुसार इस तिथि पर महर्षि वेद व्यास का जन्म हुआ है। वेद व्यास जी ने पहली बार इस जगत को चारों वेदों का ज्ञान दिया था। महर्षि वेदव्यास को प्रथम गुरु की उपाधि दी गई हैं। आइए जानते हैं गुरु पूर्णिमा की तिथि, मुहूर्त और महत्व के बारे में।

सनातन धर्म में गुरु और शिष्य की परंपरा आदिकाल से ही चली आ रही है। तभी तो संत करीबदास लिखते है कि " गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाये, बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो मिलायेर₹। कबीरदासजी का यह दोहा गुरु के प्रति सम्मान को व्यक्त करते हुए है। 'गुरु बिन ज्ञान न होहि'

का सत्य भारतीय समाज का मूलमंत्र रहा है। माता बालक की प्रथम गुरु होती है, क्योंकि बालक उसी से सर्वप्रथम सीखता है। भगवान्-दत्तात्रेय ने अपने चौबीस गुरु बनाए थे। गुरु की महत्ता बनाए रखने के लिए ही भारत में गुरु पूर्णिमा को गुरु पूजन या व्यास पूजन किया जाता है। गुरु मंत्र प्राप्त करने के लिए भी इस दिन को काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। आप जिसे भी अपना गुरु बनाते हैं, आज के दिन विशेषरूप से उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है।

सावन के महीने में श्रीमद् भागवत कथा का क्या महत्व है बहुत ही अच्छा होता है

कथा की सार्थकता जब ही सिध्द होती है जब इसे हम अपने जीवन में व्यवहार में धारण कर निरंतर हरि स्मरण करते हुए अपने जीवन को आनंदमय, मंगलमय बनाकर अपना आत्म कल्याण करें। अन्यथा यह कथा केवल ' मनोरंजन ', कानों के रस तक ही सीमित रह जाएगी ।

भागवत कथा से मन का शुद्धिकरण होता है। इससे संशय दूर होता है और शांति व मुक्ति मिलती है। इसलिए सद्गुरु की पहचान कर उनका अनुकरण एवं निरंतर हरि स्मरण, भागवत कथा श्रवण करने की जरूरत है।

श्रीमद भागवत कथा श्रवण से जन्म जन्मांतर के विकार नष्ट होकर प्राणी मात्र का लौकिक व आध्यात्मिक विकास होता है। जहां अन्य युगों में धर्म लाभ एवं मोक्ष प्राप्ति के लिए कड़े प्रयास करने पड़ते हैं, कलियुग में कथा सुनने मात्र से व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है। सोया हुआ ज्ञान वैराग्य कथा श्रवण से जाग्रत हो जाता है। कथा कल्पवृक्ष के समान है, जिससे सभी इच्छाओं की पूर्ति की जा सकती है।

भागवत पुराण हिन्दुओं के अट्ठारह पुराणों में से एक है। इसे श्रीमद् भागवत या केवल भागवतम् भी कहते हैं। इसका मुख्य विषय भक्ति योग है, जिसमें श्रीकृष्ण को सभी देवों का देव या स्वयं भगवान के रूप में चित्रित किया गया है। इस पुराण में रस भाव की भक्ति का निरूपण भी किया गया है। भगवान की विभिन्न कथाओं का सार श्रीमद्भागवत मोक्ष दायिनी है। इसके श्रवण से परीक्षित को मोक्ष की प्राप्ति हुई और कलियुग में आज भी इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिलते हैं। श्रीमदभागवत कथा सुनने से प्राणी को मुक्ति प्राप्त होती है

सत्संग व कथा के माध्यम से मनुष्य भगवान की शरण में पहुंचता है, वरना वह इस संसार में आकर मोहमाया के चक्कर में पड़ जाता है, इसीलिए मनुष्य को समय निकालकर श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण करना चाहिए। ब'चों को संस्कारवान बनाकर सत्संग कथा के लिए प्रेरित करें। भगवान श्रीकृष्ण की रासलीला के दर्शन करने के लिए भगवान शिवजी को गोपी का रूप धारण करना पड़ा। आज हमारे यहां भागवत रूपी रास चलता है, परंतु मनुष्य दर्शन करने को नहीं आते। वास्तव में भगवान की कथा के दर्शन हर किसी को प्राप्त नहीं होते। कलियुग में भागवत साक्षात श्रीहरि का रूप है। पावन हृदय से इसका स्मरण मात्र करने पर करोड़ों पुण्यों का फल प्राप्त हो जाता है। इस कथा को सुनने के लिए देवी देवता भी तरसते हैं और दुर्लभ मानव प्राणी को ही इस कथा का श्रवण लाभ प्राप्त होता है। श्रीमद्भागवत कथा के श्रवण मात्र से ही प्राणी मात्र का कल्याण संभव है।

जन जन के संत की भव्य आगवानी हुई अशोकनगर मध्य-प्रदेश में

' संत समाज व शासन प्रशासन जब साथ होता है तो संगम की यह त्रिवेणी जब संस्कृति परंपरा और संस्कारों की और अग्रसर होती है। यहां तो देश के अखण्ड भारत की परिकल्पना है जों तभी साकार होती है। जब समाजजन इसी प्रकार एकता व भाईचारे का परिचय देते हैं । यह सिंह गर्जना जिन शासन के शेर जगतपूज्य मुनिपुंगव निर्यापक श्रमण दिगंबर जैन संत श्री सुधा सागर जी ने कही । आज पूज्य महाराज जी ससंघ मध्यप्रदेश के अशोकनगर में भव्य आगवानी देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। मध्य प्रदेश के सागर जिले के ईशुरवारा गांव में जन्मे जय कुमार जैन ने आचार्य श्री विद्यासागर जी से 1983 में मुनि दीक्षा ग्रहण की थी। पूर्व नाम क्षुल्लक व ऐलक दीक्षा में परम सागर जी था। उसके बाद मुनिपुंगव निर्यापक श्री सुधा सागर जी बने। आप की कठोर तप साधना के बल से आप ने बहुत सारे पंचकल्याणक मंदिरों के जीर्णोद्धार कार्य आज भी अस्मणिय है। सबसे खास जब जयपुर के सांगानेर में भूगर्भ से दो बार यक्ष रक्षित रत्नमयी चैत्यालय निकलकर जैन समाज को चमत्कृत किया। तभी से आप की पहचान जिन शासन के शेर के रूप में पहचानी जाने लगी। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक के रुप में भक्त उन्हें राम के सबसे बड़े भक्त हनुमान के रूप में जानने लगे। आज मध्यप्रदेश के अशोकनगर में सुभाष गंज जैन मंदिर प्रांगण में मंगल आगवानी पर आज गुरूवार के दिन गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर धर्मसभा में परम पूज्य मुनि श्री सुधा सागर महाराज जी ने कहा कि श्रवण संस्कृति व भारत की पवित्र और मंगलमयी संस्कृति विचारों का केन्द्र नहीं आचार का केंद्र है। धर्म विचारों के साथ श्रवण संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान देता है। आचार का माहौल या आचरण के इस श्रवण संस्कृति में इस मंगल बेला भारत अब संस्कारो का रसपान कर रहा है। प्रथम दर्शन शगुन बहुत बड़ा होता है तभी तो आज हजारों जन समुदाय व भक्तों की इस भीड़ में शासन प्रशासन के अधिकारी भी नंगे पैर चल रहें थे। यह बहुत बड़ी बात है दिगंबर जैन समाज के लिए। दिगंबर जैन संत के दर्शन का शगुन कभी भी फेल नहीं होता, यह अच्छा शुभ अवसर है अशोक नगर के लिए। क्योंकि जगत कल्याण के भाव से प्रसार प्रचार करने को यह चातुर्मास में देखने को मिलेगा। आज गुरूवार व गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन मंगल आगवानी यह भी तो शुभ संकेत है। आज तक ललितपुर की आगवानी सबसे ज्यादा प्रसिद्ध थी पर आज अशोक नगर ने ठक्कर देकर अव्वल आ गये है। जो भी किया गया वह बहुत ही बढ़िया है जब देवता भी मुस्कराहट बिखरा रहे हैं। आज यहां का वातावरण उत्साह व उमंगता के रूप में प्रवेश के समय हर एक घर के बहार कोई भी समाज के हो उन्होंने अपने अपने घरों के बहार झाड़ लगाई कहने लगे की गुरुदेव आने वाले हैं। इतनी सकारात्मक सोच जब सिख धर्म मुसलमान व अन्य हिन्दु धर्म के अनुयायियों ने भी बड चढ़ कर इस नगर आगवानी में हिस्सा लिया। बिना किसी विकल्प के सब कार्य पूर्ण हो गये। इस नगर आगवानी में 33 जेसीबी मशीनों से पुष्प वर्षा व चांदी की 121 थालियों से पाद प्रक्षालन हुआ। ऐसे पूज्यनीय गुरु के दर्शन से सभी धन्य हुए।

संकलनकर्ता व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान नसियां जी इन्दौर

शराब और सोमरस में अंतर

सबसे ज्यादा चाय-काफ़ी, और उससे भी पहले बियर, वाइन, व्हिस्की, शराब एक ऐसा आहार है जो आपके शरीर को जरुरत से ज्यादा गरम कर देता है। और शरीर में जरुरत से ज्यादा गर्मी आने के कारण ही मनुष्य वो सब करता है जो सामान्य स्थिति में उससे वो करने की अपेक्षा नही की जा सकती।

सोमरस

विशेष रूप से ऋग्वेद में तो कई ऋचाएं विस्तार से सोमरस बनाने और पीने की विधि का वर्णन करती हैं। हमारे धर्मग्रंथों में मदिरा के लिए मद्यपान शब्द का उपयोग हुआ है, जिसमें मद का अर्थ अहंकार या नशे से जुड़ा है। इससे ठीक अलग सोमरस के लिए सोमपान शब्द का उपयोग हुआ है, जहां सोम का अर्थ शीतल अमृत बताया गया है।

क्या है सोमरस ?

सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात यह है कि सोमरस मदिरा की तरह कोई मादक पदार्थ नहीं है। मदिरा के निर्माण में जहां अन्न या फलों को कई दिन तक सड़ाया जाता है, वहीं सोमरस को बनाने के लिए सोम नाम के पौधे को पीसने, छानने के बाद दूध या दही मिलाकर लेने का वर्णन मिलता है। इसमें स्वादानुसार शहद या घी मिलाने का भी वर्णन मिलता है। इससे प्रमाणित होता है कि सोमरस मदिरा किसी भी स्थिति में नहीं है।

सोमरस और शराब एक नहीं

ऋग्वेद में सोम में दही और दूध को मिलाने की बात कही गई है, जबकि यह सभी जानते हैं कि शराब में दूध और दही नहीं मिलाया जा सकता। भांग में दूध तो मिलाया जा सकता है लेकिन दही नहीं, लेकिन यहां यह एक ऐसे पदार्थ का वर्णन किया जा रहा है जिसमें दही भी मिलाया जा सकता है। इसलिए यह बात का स्पष्ट हो जाती है कि सोमरस जो भी हो लेकिन वह शराब या भांग तो कतई नहीं थी और जिससे नशा भी नहीं होता था।

तो आपके शरीर को बहुत ज्यादा गरम करे ऐसी शराब अगर है तो ये प्रकृति के अनुकूल नही है, और जो आपके प्रकृति के अनुकूल नही है वो आपकी संस्कृति के भी अनुकूल नही है।

क्योंकि आपके प्राकृतिक संस्कार ही संस्कृति को निर्धारित करेंगे, नही तो वो आपकी संस्कृति के अनुकूल नही है तो शराब न पिये।

राजीव दीक्षित भाई ने कुछ परिक्षण किये,

जब भी एक साधारण स्वस्थ व्यक्ति को कोई भी शराब पिलाई जाये तो तुरंत उसका ब्लड प्रेशर बढना शुरू हो जाता है। अगर इसको आयुर्वेद की भाषा में कहा जाये तो तुरन्त उसका पित्त बढना शुरू हो जाता है, पित्त माने आग लगना शुरू होती है शरीर में।

अब हमारा शरीर तो समशीतोष्ण है, जब आग लगेगी शरीर में, तो शरीर की सारी प्रतिरक्षा प्रणाली इस आग को शांत करने में लग जायेगी, और परिरक्षा प्रणाली को काम करने के लिए रक्त इंधन के रूप में चाहिए, जिससे आप का रक्त शरीर का सारे अंगो से भाग कर वहाँ आ जायेगा जहाँ आपकी आग को शांत करने का काम चलेगा, अर्थात पेट की तरफ सारा रक्त आ जायेगा।

मतलब रक्त को जहाँ जाना चाहिए, वहाँ नही होगा,

ब्रेन को चाहिए वहाँ नही है,
हार्ट को चाहिए वहाँ नही है,
किडनी को चाहिए वहाँ नही है,
लीवर को चाहिए वहाँ नही है..

और वो सब आ गया पेट में, और ये रहेगा दो से पाँच घंटे तक माने 2 से 5 घंटे तक आपके शरीर के बाकी ओर्गन्स रक्त की कमी से तड़पेंगे और उनमे खराबी विकृति आना शुरू हो जायेंगे। इसलिए शराब पीने वालो के अन्दर के सारे अंग ख़राब होते है और उनको मृत्यु का डर सबसे ज्यादा होता है।

इसलिए भारत की प्रकृति और संस्कृति में शराब का स्थान नही है।

लोग कहते है कि पहले तो सोमरस था ही !!

सोमरस और शराब में बहुत बड़ा अंतर है..

सोमरस और शराब में अंतर उतना ही है जितना डालडा और देशी गाय के घी में है।

सोमरस आयुर्वेद का एक औषधीय रूप है जो आपके शरीर के शांत पित्त को बढाने का काम करता है, भूख ज्यादा ठीक से लगे इसके लिये सोमरस पिया जाता है भारत में।

जानिए शराब और सोमरस में जमीन असमान का अंतर कैसे है ?-

शराब क्या करती है जो पित्त आपके शरीर में शांत है उसको भड़का देती है, एक सुलगना होता है, एक भड़कना होता है। आग कहीं धीरे-धीरे सुलग रही है तो खतरे की सम्भावना बहुत कम हैं और आग भड़क के लग गयी है तो आस पड़ोस के बिल्डिंग जल जाएगी।

तो शराब वो है जो पित्त को भड़काती है और सोमरस पित्त को सुलगाती है।

सुलगा हुआ पित्त तो हमे चाहिये, पर भड़का हुआ नही चाहिये, हमे शराब नही चाहिये..

अगर चाहिये तो सोमरस चाहिये।

अगर कोई सोमरस पीता है तो उसे जिन्दगी में कभी भी पित्त का रोग नही होगा। सोमरस बहुत ही संतुलित है

भारतीय संस्कृति का हिस्सा नही है शराब। और इतनी शराब जो लोग पीने लगे है वो यूरोप की नक़ल से आयी, दुर्भाग्य से 450 साल तक हम भारतवासी यूरोपियन की संगत में फंस गये या उनके गुलाम हो गये, तो उनकी नक़ल कर कर के हमने ये शुरू कर दिया।

इसलिये मित्रों लेना ही है तो सोमरस का सेवन करें न कि शराब का।

हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र और बिहार तक वोटर लिस्ट में छेड़छाड़ का पैटर्न सामने आया:

मुख्य संवाददाता

दिल्ली:बिहार में विधानसभा चुनावों से पहले मतदाता सूची को लेकर चल रही विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा उठाए गए सवालों के बाद आम आदमी पार्टी ने चुनाव आयोग और भारतीय जनता पार्टी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी और वरिष्ठ नेता अनुराग ढांडा ने गुरुवार को बयान जारी करते हुए कहा कि एक बार फिर यह पूरी तरह साफ हो गया है कि भारतीय जनता पार्टी हर चुनाव से पहले मतदाता सूची में गड़बड़ी करवाती है और चुनाव आयोग उसकी मदद करता है। बीजेपी का यह तरीका नया नहीं है। हरियाणा, महाराष्ट्र, दिल्ली – हर चुनाव से पहले एक पैटर्न के तहत मतदाता सूची में बड़े स्तर पर छेड़छाड़ की गई है। कहीं लाखों नाम काटे गए, कहीं फर्जी नाम जोड़े गए और कहीं जातिगत व क्षेत्रीय संतुलन को बिगाड़ने के लिए जानबूझकर फेरबदल किया गया।

अनुराग ढांडा ने कहा कि अब वही साजिश बिहार में दोहराई जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने आज जिस मुद्दे पर चुनाव आयोग से जवाब मांगा है, वही मुद्दा आम आदमी पार्टी और जनता लगातार उठाते आ रहे हैं। लेकिन न तो चुनाव आयोग और न ही केंद्र की मोदी सरकार ने अब तक कोई स्पष्ट जवाब दिया है।

उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग जैसी संस्था पर अब पूरे देश में गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। यह वही संस्था है, जिस पर जनता को निष्पक्ष चुनाव कराने की जिम्मेदारी सौंपती है। लेकिन अब यह संस्था एकतरफा तरीके से काम करती दिखाई दे रही है। खासकर चुनावों से ऐन पहले जब गोपनीय तरीके से मतदाता सूची में फेरबदल किया जाता है, तो यह पूरा चुनावी ढांचा ही सवालों के घेरे में आ जाता है।

आम आदमी पार्टी चुनाव आयोग से तीन प्रमुख मांग करती है। पहली – बिहार में चल रही विशेष मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रक्रिया को तत्काल प्रभाव से रोका जाए। दूसरी – इस पूरी प्रक्रिया की स्वतंत्र और न्यायिक जांच करवाई जाए। तीसरी – सभी राजनीतिक दलों को समयबद्ध और पारदर्शी जानकारी दी जाए, जिससे चुनावों में भागीदारी निष्पक्ष और विश्वासजनक बनी रहे।

उन्होंने यह भी कहा कि यह अब सिर्फ विपक्षी दलों की चिंता नहीं रही, बल्कि जनता भी परेशान है। आयोग को चाहिए कि वह आत्ममंथन करे और अपने कामकाज की समीक्षा करके निष्पक्षता बहाल करे।

"आप" ने 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने की मांग उठाई तो भाजपा के मेयर ने सदन को ही स्थगित कर दिया- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली। दिल्ली नगर निगम के सदन में गुरुवार को 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने का मुद्दा गरमाया रहा। नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग के नेतृत्व में ''आप'' पार्षदों ने इन कर्मचारियों को तत्काल पक्का करने की पुरजोर मांग उठाई तो भाजपा के मेयर राजा इकबाल सिंह ने सदन को ही स्थगित कर दिया। इसके विरोध में ''आप'' पार्षदों ने सदन में जमकर नारेबाजी। अंकुश नारंग ने कहा कि ''आप'' की सरकार में इन कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पास किया गया था। एमसीडी में भाजपा की सरकार है। लिहाजा हमारी मेयर से मांग है कि वह कमिश्नर को निर्देश देकर इसे लागू कराएं। लेकिन दलित विरोधी चार इंजन की भाजपा सरकार एमसीडी के कर्मचारियों को उनका अधिकार नहीं देना चाहती है।

दिल्ली नगर निगम में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने कहा कि जब एमसीडी में ''आप'' की सरकार थी, तब हमने 12 हजार कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पास किया और कर्मचारियों को वेतन और सेवानिवृत्ति लाभ देने के लिए बजट में 800 करोड़ रुपए का प्रावधान भी किया था। लेकिन अब भाजपा की एमसीडी सरकार इस प्रस्ताव को लागू नहीं कर रही है। इन 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने का श्रेय भाजपा खुद ले ले, लेकिन इन कर्मचारियों को पक्का कर दे। यह कर्मचारियों का अधिकार है। लेकिन भाजपा की चार इंजन की सरकार कर्मचारियों को उनका अधिकार नहीं देना चाहती है।

अंकुश नारंग ने कहा कि भाजपा दलित विरोधी है। भाजपा हमेशा दलितों के खिलाफ काम करती है। भाजपा जानबूझ कर दलित कर्मचारियों को पक्का नहीं कर रही है। आम आदमी पार्टी की सरकार ने 12 हजार कर्मचारियों को पक्का कर दिया था। भाजपा के मेयर राजा इकबाल सिंह एमसीडी के कमिश्नर को दिशा निर्देश देकर उसको लागू करवाएं। इसमें क्या परेशानी की बात है।

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की पूर्ण बहुमत की सरकार होने पर कर्मचारियों को पक्का किया था, तब से हम एमसीडी के कमिश्नर से इसे लागू करने की मांग कर रहे हैं। उसके बाद एमसीडी में भाजपा की सरकार आ गई। तो मेयर को कमिश्नर से इसे लागू करवाना चाहिए। लेकिन मेयर नहीं चाहते हैं कि ये कर्मचारी पक्के हों।

अंकुश नारंग ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार के दौरान भाजपा ने एमसीडी में सिर्फ नकारात्मक भूमिका निभाई है। भाजपा ने कभी कोई मीटिंग नहीं होने दी और ना तो सदन को ही चलने दिया। विपक्ष के हाथ में होता है कि सदन चलेगा या नहीं चलेगा। आम आदमी पार्टी ने भाजपा की सरकार में एमसीडी का सदन चलवा कर दिखाया। आज हमने सदन में 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने की आवाज उठाई तो मेयर ने सदन को ही स्थगित कर दिया। हमारी मांग है कि भाजपा की एमसीडी 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करे। ये सभी कर्मचारी पक्के होने चाहिए।

दिल्ली के जाफराबाद इलाके से एक सनसनी खेज हत्या की खबर सामने आई है, जिसे जाफराबाद पुलिस ने चंद घंटों में सुलझाया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर दिल्ली

नई दिल्ली : तीन आरोपियों की गिरफ्तारी के साथ-साथ अपराध में इस्तेमाल चाकू भी बरामद कर लिया गया 10 जुलाई 2025 की रात करीब 12:10 बजे, जाफराबाद थाने में एक चाकूबाजी की घटना की सूचना मिली। इस घटना में 23 वर्षीय फरदीन को उनके पिता द्वारा जेपीसी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

पुलिस जांच में सामने आया कि फरदीन अपने दोस्त जावेद के साथ गली नंबर 10 के पास बारिश से बचने के लिए खड़ा था। तभी उनसी नजर आदिल पर पड़ी, जो गली नंबर 10 का निवासी है और जिसने फरदीन और जावेद से 2,000 रुपये उधार लिए थे। जब फरदीन ने आदिल से पैसे वापस मांगे, तो आदिल गुस्से में आ गया और उसने फरदीन पर चाकू से हमला कर दिया। हमले के बाद आदिल मौके से फरार हो गया। पुलिस के अनुसार, इस दौरान आदिल का भाई कामिल और उनके पिता शकील भी मौके पर मौजूद थे और उन्होंने कथित तौर पर आदिल को उकसाया।

जाफराबाद थाने की एक विशेष टीम, जिसका नेतृत्व थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सुरेंद्र कुमार कर रहे थे, ने तुरंत कार्रवाई शुरू की। इस टीम में सब-इंस्पेक्टर सुखबीर, एएसआई परवीन, हेड कांस्टेबल अशोक, हेड कांस्टेबल जोगेंद्र, कांस्टेबल उदहम और कांस्टेबल आशीष शामिल थे। भजनपुरा के एसीपी विवेक त्यागी के निर्देशन में क्राइम और एफएसएल टीमों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और साक्ष्य एकत्र किए।

पुलिस ने बीएनएस की धारा 103/3(5) के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की। कड़ी मेहनत और सुरागों के आधार पर पुलिस ने तीन आरोपियों—आदिल (30 वर्ष), कामिल (28 वर्ष) और उनके पिता शकील (58 वर्ष), जो गली नंबर 10/5, जाफराबाद के निवासी हैं—को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपियों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया, और उनके कब्जे से अपराध में इस्तेमाल किया गया चाकू भी बरामद कर लिया गया।

आरोपियों का आपराधिक इतिहास:

जांच में पता चला कि मुख्य आरोपी आदिल पहले 3 आपराधिक मामलों में शामिल रहा है, जबकि उसका भाई कामिल 4 मामलों में शामिल रहा है। जाफराबाद पुलिस की त्वरित कार्रवाई ने इस हत्याकांड को चंद घंटों में सुलझा लिया है, लेकिन इस घटना ने एक बार फिर इलाके की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच अभी जारी है, और जल्द ही अन्य तथ्य सामने आ सकते हैं।

परफॉर्मेंस कैमीसर्व लिमिटेड व पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड के बीच 5.5साल का रीगैसिफिकेशन समझौता हुआ

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दीपक फर्टिलाइजर्स एंड पेट्रोकेमिकल्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड (डीएफपीसीएल) समूह की कंपनी परफॉर्मेंस केमिसर्व लिमिटेड (पीसीएल) व पेट्रोनेट एलएनजी लिमिटेड के बीच 5.5 साल का रीगैसिफिकेशन समझौता

इसके तहत डीएफपीसीएल समूह द्वारा आयात की जाने वाली तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) का रीगैसिफिकेशन होगा।

पीसीएल दीपक माइनिंग सॉल्यूशंस लिमिटेड (डीएमएसएल) की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है और डीएमएसएल स्वयं दीपक फर्टिलाइजर्स एंड पेट्रोकेमिकल्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड (डीएफपीसीएल) की पूर्ण स्वामित्व वाली इकाई है।

समझौते की शर्तों के तहत, पीएलएल अपने दाहेज टर्मिनल पर कैलेंडर वर्ष 2026 में प्रारंभिक रैंप-अप अवधि के बाद, प्रतिवर्ष लगभग 25.6 टीबीटीयू एलएनजी प्राप्त करेगा, भंडारण करेगा और रीगैसिफिकेशन करेगा।

इस समझौते के चलते पीएलएल को करीब 1,200 करोड़ के राजस्व का अनुमान है, जिसमें अनुबंध अवधि के दौरान 20 फीसदी तक अतिरिक्त राजस्व अर्जित करने की संभावना भी है।

रीगैसिफाइड गैस का उपयोग मुख्य रूप से तलोजा स्थित डीएफपीसीएल समूह की विनिर्माण इकाइयों में किया जाएगा।

यह समझौता से ऊर्जा एवं अवसंरचना क्षेत्र की कंपनी पीएलएल के दीर्घकालिक व्यवसायिक क्षितिज के विस्तार को और सुदृढ़ करता है।

वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान पीएलएल ने अपने दो टर्मिनलों के माध्यम से लगभग 18 एमएमटीपीए एलएनजी का संचालन किया, जिसमें दाहेज टर्मिनल न केवल प्रमुख केंद्र रहा बल्कि वैश्विक स्तर पर सबसे व्यस्त रीगैसिफिकेशन टर्मिनलों में से एक है।

इससे पहले, डीएफपीसीएल ने नॉर्वे स्थित वैश्विक ऊर्जा कंपनी इक्विनोर के साथ एलएनजी बिक्री और खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

यह रीगैसिफिकेशन समझौता 10 जुलाई 2025 को पीएलएल के नई दिल्ली स्थित कॉर्पोरेट कार्यालय में हुआ। इस अवसर पर पीएलएल के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी एके सिंह तथा डीएफपीसीएल एवं पीसीएल के चेयरमैन शैलेश सी. मेहता उपस्थित थे।

पीएलएल के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ ए. के. सिंह ने कहा, "हम अपने मूल्यवान भागीदारों के बढ़ते पोर्टफोलियो में डीएफपीसीएल का स्वागत करते हैं। इस तरह के सहयोग से न केवल हमारी विस्तारित रीगैसिफिकेशन क्षमता का उपयोग बढ़ेगा, बल्कि राष्ट्र की ऊर्जा सुरक्षा और औद्योगिक विकास में भी सार्थक योगदान होगा। यह समझौता पीएलएल की एक प्रमुख ऊर्जा एवं अवसंरचना प्रदाता की स्थिति को और सुदृढ़ करता है और भारत की ऊर्जा टोकरी में प्राकृतिक गैस की हिस्सेदारी बढ़ाने के भारत सरकार के दृष्टिकोण को समर्थन प्रदान करता है।"

पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन ने बांटी खुशियाँ

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन की ओर से नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत पुलिस प्रशासन द्वारा एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रजनेश सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राम गोपाल करियारे एवं अन्य पुलिसकर्मी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं व बच्चों को नशे से दूर रहकर एक सकारात्मक जीवन जीने की प्रेरणा देना था। पुलिस अधिकारियों ने बच्चों को नशे से होने वाले नुक़सान के बारे में जागरूक किया और समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने का संदेश दिया। इस पुनीत अवसर पर पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन की अध्यक्ष पायल लाठ के नेतृत्व में संस्था द्वारा 170 बच्चों को किताबें, पेन और अध्ययन सामग्री वितरित की गईं। पाठ्य सामग्री पाकर बच्चों के चेहरों पर ख़ुशी और उत्साह साफ झलक रहा था. संस्था की अध्यक्ष पायल का यह गहरा विश्वास है बच्चे ही देश का भविष्य हैं। हम उन्हें जैसा सिखाएंगे, वे वैसा ही सीखेंगे। अगर उन्हें नशे की चीजें दिखाएंगे, तो वे उसी राह पर चलेंगे, लेकिन अगर हम उन्हें किताब, कॉपी और खेल की सामग्री देंगे, तो वे शिक्षा और सकारात्मकता की दिशा में बढ़ेंगे।

यह कार्यक्रम पुलिस प्रशासन और सामाजिक संगठनों के बीच सहयोग का एक सुंदर उदाहरण था। पायल लाठ ने कहा कि हम पुलिस विभाग का आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने हमें इस सामाजिक कार्य में सहभागी बनने का अवसर दिया। इस अवसर पर सचिव चंचल सलूजा एवं उपाध्यक्ष प्रशांत सिंह राजपूत मौजूद रहे।

बच्चों को कंप्यूटर की ट्रेनिंग दी गई, और कई बच्चों को नौकरी भी लगवाई गई।

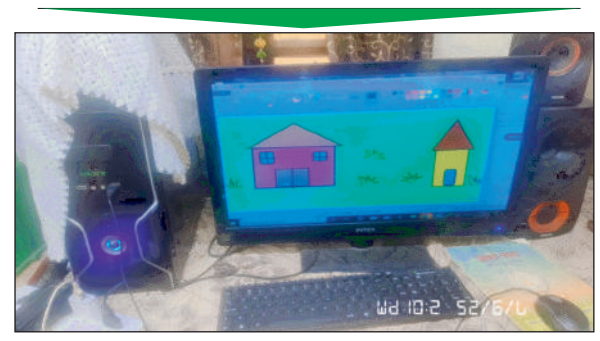

प्रश्न आया है कि ब्राह्मण माने कौन? ब्राह्मण का अर्थ है वह, जिसने 'उसे' जान लिया। ब्राह्मण का अर्थ है, ज्ञानी।

ब्राह्मण का अर्थ है, ब्रह्म को उपलब्ध। ब्राह्मण का अर्थ है, जो ब्रह्म-स्वरूप हो गया, जिसने अपने भीतर अहर्निश अनाहत नाद को सुन लिया। जो सच्चिदानंदघन रूप हो गया, वह ब्राह्मण। इसका अर्थ है कि आदि ब्रह्म से ही ब्राह्मण पैदा होते हैं? इसका अर्थ हुआ कि जब भी कोई ब्रह्म को जानता है, तो वह अपने द्वारा नहीं जानता, ब्रह्म के द्वारा ही जानता है। खुद को तो मिटा लेता है। बस, इतना ही हमें करना है कि हम अपने 'मैं' से मिट जायें, खाली जगह हो जायें, सिंहासन से उतर जायें। और तब वह 'ब्रह्म' सिंहासन पर उतर आता है। ध्यान रहे कि ब्राह्मण अपनी चेष्टा से नहीं हो सकते। आसान नहीं है ब्राह्मण होना जिन्होंने राजा तैयार किए, समाज शिक्षित किये। अन्य सभी वर्णों को अपने आश्रम में समान शिक्षा दी तभी तो राजकुमार राम और निषादराज दोनों मित्रवत आश्रमवासी हुए। इस ब्रह्म को जानकर उन्होंने समाज/संसार के कल्याण के लिए अपनी अस्थियां तक दे दीं। अपने समस्त कर्तव्य पालन करते हुए भी, उनके हिस्से में तो बहिष्कार ही आया जिन्होंने अपनी संतानों के अधिकार भी दूसरों को बांट दिये।

गुरु कौन है ?

गुरु...वो नहीं जो बोलता है, वो है जो हमारे भीतर की गांठ को देखता है और मौन से खोलता है।

गुरु...ना वो है जो हमे कुछ देता है, वो तो हमसे सब कुछ छीन लेता है, हमारा भ्रम, हमारी पहचान, हमारा "मैं"।

गुरु...वो है जो हमारे भीतर के पशु को देखता हैऔर उसे जलाकर वीर बना देता है।

गुरु...
कोई देह नहीं,
कोई नाम नहीं,
कोई दाढ़ी-भभूत नहीं वो एक बिजली की तरह छू जाने वाला अनुभव है, जिसके बाद हम पहले जैसे नहीं रहते।

गुरु तांत्रिक पथ में...
शिव से बड़ा गुरु है।
क्योंकि शिव भी तभी प्रकट होते हैं, जब गुरु मौन में स्वीकृति देता है, गुरु एक चिता है, जो शिष्य को जलाकर साक्षात शिव बना दे।
देह में ना वो रह गया,
छाया भी अब मौन।
जो था कभी ₹गुरु₹ वहाँ,

अब बस बहता कौन?
नाम नहीं, कोई रूप नहीं,
बस दृष्टि की इक धार।
वही है मेरा गुरु सदा,
जो मुझमें ही पार।
सभी गुरुजनों, श्रेष्ठजनों एवं समस्त आदरणीय मार्गदर्शकों को मेरा मौन प्रणाम, आप सभी को गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ।
ॐ परब्रह्मरूपाय गुरवे नमः
ॐ शिवाय गुरवे नमः
ॐ बं गुरवे नमः
ॐ गं गुरवे नमः

श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ पश्चिम उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय बैठक का आयोजन हापुड़ में संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

उत्तर प्रदेश; हापुड़। श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ पश्चिम उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय बैठक का आयोजन इंद्रप्रस्थ इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज हापुड़ में किया गया।

इस बैठक में श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरजीत कुमार, राष्ट्रीय महामंत्री बृजेश्वर निम्मी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अशोक भारती, राष्ट्रीय मंत्री विक्रमजीत, उत्तर प्रदेश प्रांत अध्यक्ष किशन लाल, क्षेत्रीय अध्यक्ष गरीबदास,विकास अग्रवाल, जी धर्म सिंह एडवोकेट , दिल्ली प्रांत अध्यक्ष मनोज कुमार आजाद, दिल्ली प्रांत संगठन महामंत्री प्रो मनोज कुमार कैन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय महामंत्री बृजेश्वर निम्मी जी ने गुरु जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्रीगुरु रविदास विश्व महापीठ समाज के उत्थान और प्रगति के लिए प्रतिबद्ध है। वह समाज के सभी वर्गों को एक साथ लेकर चलने और उनका सर्वांगीण विकास के लिए कार्य करेगी ।सुरजीत कुमार ने अपने संबोधन में कहा की श्री गुरु रविदास जी जो हमारे आदर्श हैं ;जिन्होंने विपरीत परिस्थिति में सिकंदर लोदी को अपनी भक्ति की शक्ति का एहसास कराया । महारानी मीराबाई उनकी शिष्य बनी। आडंबर, सत्य और भक्ति के दर्शन कराते हुए मां गंगा के दर्शन अपनी कटौती में कराएं । कालांतर में धर्म परिवर्तन पर रोक लगाई ।श्री गुरु रविदास जी ने हमें शक्ति और भक्ति का मार्ग दिया है ।हमें उस मार्ग पर चलकर समाज के साथ चलना चाहिए। राष्ट्रीय मंत्री विक्रम ने अपने विचारों में कहा हम सभी को गुरु जी के बताएं रास्ते को अपनाकर पुनीत कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग करना चाहिए। अशोक भारती ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम सभी को संगठित होकर कार्य करना चाहिए संगठन से ताकत बनती है। ताकतवर पर कोई अत्याचार नहीं करता ।अधिवक्ता धर्म सिंह ने विचार रखते हुए कहा हम सभी को पवित्र स्थानों का सम्मान करते हुए वहां पर समाज हित की गतिविधियां आयोजित की जानी चाहिए। प्रदेश अध्यक्ष श्री किशनलाल सिंह ने कहा कि श्री गुरु रविदास जी ने सभी संतों में संत शिरोमणि की उपाधि प्राप्त की है । उनका जीवन हमें प्रेरणा देता है कि परिश्रम करके अपने परिवार को पालना है और दूसरी ओर आध्यात्मिक-सामाजिक विकास द्वारा सनातन संस्कृति को आगे लेकर जाना है । हम सभी को आने वाली पीढ़ी के लिए रोजगारपरक शिक्षा की व्यवस्था करनी चहिए। दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष मनोज आजाद ने दिल्ली प्रांत द्वारा आयोजित गतिविधियों से सभी को अवगत कराया। उत्तर प्रदेश उपाध्यक्ष मलखान सिंह ने संत महात्माओं की वाणी की प्रासंगिकता पर विचार रखें। विकास अग्रवाल ने कहा समाज में अच्छे कार्य करने वाले लोगों की हमेशा आवश्यकता रहती है। संतों के स्थान प्रेरणा स्रोत का कार्य करते हैं। संतों की वाणी को जीवन में उतारकर निरंतर अच्छे कार्य करते रहने चाहिए । प्रो. मनोज कुमार कैन ने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम शिक्षा के द्वारा ही सभी कार्य सिद्ध कर सकते हैं। शिक्षा ग्रहण करके समाज और देश के लिए गए कार्यों से हम अमर हो जाते हैं ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय अध्यक्ष गरीब दास ने की और कहा कि पीठ के माध्यम से श्री गुरु रविदास जी के दर्शन को जिला स्तर और उसके बाद गांव स्तर पर ले जाया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय महामंत्री आसाराम भारती ने किया।

कार्यक्रम में रामपुर से वेद प्रकाश सागर ; मेरठ से जतिन लिसाड़ी, प्रो मनोज कुमार जाटव,अभिषेक मोर्या, विनोद जाटव, क्षेत्रीय मंत्री प्रवीण कुमार ,मदन पाल, क्षेत्रीय सोशल मीडिया प्रभारी संदीप कुमार, मुजफ्फरनगर से ब्रजभूषण ,प्रवीण कुमार; गाजियाबाद से ए.के.मुखिया, डी के कर्दम,सोनू ,सहारनपुर से रूप सिंह बोहत,महेंद्र पाल सिंह ; बुलंदशहर से योगेश, सतीश, गौतम,दुलीचंद भारती; हापुड़ से रविंद्र,शील भास्कर ,ताराचंद ,सुमन पाल विजय कुमार ;मुरादनगर से एमपी सिंह; पिलखुवा से एम पी सिंह ; बिजनौर से अरविंद कुमार, राकेश, चरण सिंह ओम प्रकाश, पश्चिम क्षेत्र महिला प्रमुख विमला सिंह जाटव, उपाध्यक्ष नवनीत निम्मी इत्यादि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहें। अध्यक्ष किशनलाल जी ने घोषणा की अगली बैठक 13 जुलाई को आयोजित की जाएगी।

आज श्रावण मास पर विशेष : मुक्ति द्वार निश्चय जो खोले, जय जय जय शिव शंकर भोले।

– पूजन ,अर्चन ध्यान लगाते , शिव की कृपा भक्त वह पाते

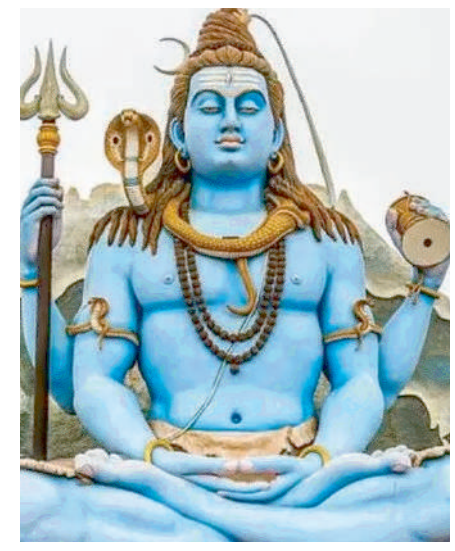

भगवान शिव को समर्पित सावन मास का हिंदू धर्म में विशेष महत्व है। ऐसी मान्यता है कि आषाढ़ मास की पूर्णिमा तिथि समाप्त होने के साथ आज से प्रारंभ श्रावण मास में जो भी भक्त भगवान शिव शंकर की पूजा आराधना वंदना और उनका ध्यान करते हैं। उन्हें भगवान शिव की कृपा अवश्य ही प्राप्त होती है।

इसी लिए सावन के पूरे माह भगवान शिव की विशेष पूजा के साथ व्रत रखने का विधान है। क्योंकि ये भगवान शिव का सबसे प्रिय माह है। इस पूरे माह भगवान शिव का जलाभिषेक करने से लेकर कावड़ यात्रा करना शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सावन माह के दौरान भगवान शिव की पूजा करने से कई गुना अधिक शुभ फलों की प्राप्ति होती है और हर तरह के दुख-दर्द से निजात मिल जाती है।

ज्योतिषाचार्य पंडितों के मुताबिक हिंदू पंचांग के अनुसार इस बार श्रावण मास कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि के साथ आज 11 जुलाई से आरंभ हो रहा है। इस बार श्रवण मास में चार सोमवार पड़ेंगे। 14 जुलाई को पहला सोमवार व्रत (गजानन संकष्टी चतुर्थी), 21 जुलाई को दूसरा सोमवार व्रत (कामिका एकादशी, 28 जुलाई को तीसरा सोमवार व्रत (विनायक चतुर्थी), 04 अगस्त को चौथा सोमवार व्रत पड़ेंगे। इसके साथ ही 15 जुलाई को सावन का पहला मंगला गौरी व्रत, 22 जुलाई को सावन का दूसरा मंगला गौरी व्रत, 29 जुलाई को सावन का तीसरा मंगला गौरी व्रत, 05 अगस्त को सावन का चौथा मंगला गौरी व्रत पड़ेगा। साथ ही सावन शिवरात्रि, प्रदोष व्रत, हरियाली अमावस्या, नाग पंचमी, हरियाली तीज और सावन पूर्णिमा ये सभी तिथियां शिवभक्तों के लिए अत्यंत पुण्यकारी मानी जाती हैं। इन दिनों विशेष रूप से जलाभिषेक और रुद्राभिषेक का महत्त्व होता है। खासकर शिवरात्रि पर कांवड़िए गंगाजल लाकर शिवलिंग का अभिषेक करते हैं।

इस संदर्भ में अगर तिथियों की बात करें तो 16 जुलाई को कर्क संक्रांति, 22 जुलाई को प्रदोष व्रत, 23 जुलाई को सावन शिवरात्रि पड़ेगी। 24 जुलाई की हरियाली अमावस्या, सावन अमावस्या, गुरु पुष्य योग होगा।

जैसा कि सर्व विदित है कि हरियाली तीज सावन में पड़ने वाला एक विशेष पर्व है जो 27 जुलाई को है। इस दिन महिलाएं हरे वस्त्र पहनती हैं, मेहंदी लगाती हैं और सौभाग्य व पति की दीर्घायु के लिए व्रत करती हैं। यह पर्व शिव-पार्वती के पुनर्मिलन का प्रतीक माना जाता है।

इसके बाद 29 जुलाई को नाग पंचमी, 30 जुलाई को कल्कि जयंती, 31 जुलाई को तुलसीदास जयंती, 05 अगस्त को सावन पुत्रदा एकादशी, 06 अगस्त को सावन प्रदोष व्रत, 08 अगस्त को हयग्रीव जयंती (वरलक्ष्मी व्रत), 09 अगस्त को भाई बहन के। अटूट प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन (सावन पूर्णिमा) होगा।

कुल मिलाकर भगवान शिव की आराधना का यह विशेष माह श्रावण भक्तों के लिए भगवान शिव के प्रति श्रद्धा का ऐसा अप्रतिम गहन आत्मिक भाव है , जिसमें वह सदैव डूबे रहना चाहते हैं। जिसका उद्देश्य है - मुक्ति द्वार निश्चय जो खोले, जय जय जय शिव शंकर भोले।

प्रस्तुति : सुनील बाजपेई
कवि, गीतकार,
लेखक एवं वरिष्ठ पत्रकार, कानपुर

बिनावर बिजली घर जलमग्न विज्ञापन के चलते नहीं 48 घंटे से जनता त्रस्त मगर नहीं चलाई बिजली विभाग की खबर।

मामला बिनावर क्षेत्र का है जहां कल दिन में हुई बारिश में बिजली घर में पानी भर गया और पिछले 48 घंटे से अन्य कारणों से बिनावर क्षेत्र में कस्बे को छोड़ कर किसानों और क्षेत्रीय जनता की बिजली नारद है फिर भी बिनावर मीडिया संचालो को कुछ छुटपुट प्रलोभनों के चलते खबर चलने और जनता की परशानियों जैसे सिंचाई और पेयजल जैसी गंभीर समस्याओं की भनक नहीं लगी। सूत्रों की माने तो क्षेत्रीय मीडिया संचाल अपने विज्ञापनों और अन्य बिजली विभाग से मिलने वाली सुविधाओं के चलते जनता की समस्याओं से किनारा किए बैठे है।

परिवहन विशेष न्यूज

थाना बिनावर पुलिस ने बिनावर में रहने वाले नवनीत कृष्णा को सूत्रों से पता चला एक दलाल के कहने पर पुलिस ने घर से उठा लिया नवनीत आज अपनी बहन का आर्मी का पेपर दिलवा कर बरेली से लौटे थे उसे दलाल का एक ऑडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें नवनीत को धमकी दे रहा है कि आप इधर-उधर भाई लोग कुछ नहीं कर पाओगे60000 दो मेरी दरोगा जी और sho साहब से बात हो गई है अगर नहीं दोगे तो मैं पुलिस से तुम्हारा वह हल कर दूंगा की आप जिंदगी भर याद करोगे नवनीत को घर से पुलिस ने उठाया उसके बाद नवनीत के घर वालों ने थाने में जाकर पूछ क्यों उठाया पुलिस कोई जवाब नहीं दे रही है और उसके बाद उन्हें एसपी को फोन द्वारा शिकायत की है इस संबंध में थाना प्रभारी अशोक कंबोज से जानकारी ली तो उन्होंने कहा मैं अभी बिजी हूं मैं बाद में बात करता हूं फोन को कट कर दिया सूत्र द्वारा पता चला जो कि मामला sho की जानकारी में है।

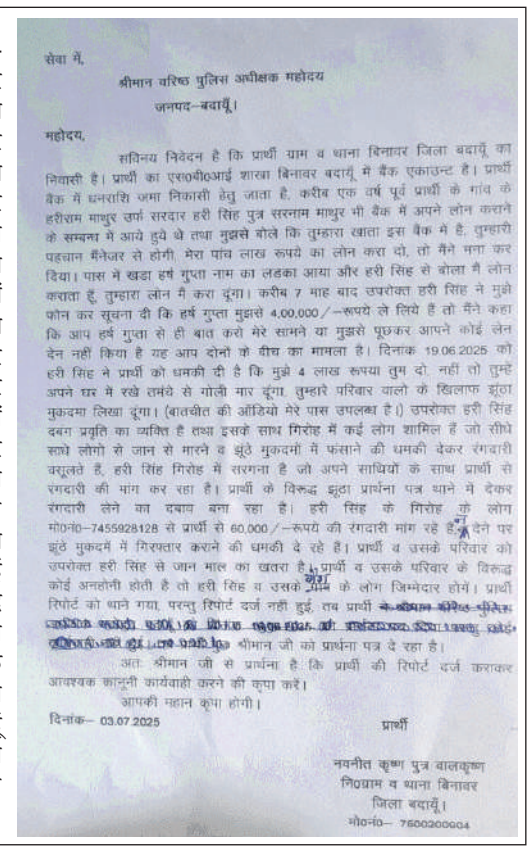

सेवा में,
श्रीमान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक महोदय
जनपद–बदायूँ।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि प्रार्थी ग्राम व थाना बिनावर जिला बदायूँ का निवासी है। प्रार्थी का एस0बी0आई शाखा बिनावर बदायूँ में बैंक एकाउन्ट है। प्रार्थी बैंक में धनराशि जमा निकासी हेतु जाता है, करीब एक वर्ष पूर्व प्रार्थी के गांव के हरीशम माथुर उर्फ सरदार हरी सिंह पुत्र सरनाम माथुर भी बैंक में अपने लोन कराने के सम्बन्ध में आये हुये थे तथा मुझसे बोले कि तुम्हारा खाता इस बैंक में है, तुम्हारी पहचान मैनेजर से होगी, मेरा पांच लाख रुपये का लोन करा दो, तो मैंने मना कर दिया। पास में खड़ा हर्ष गुप्ता नाम का लड़का आया और हरी सिंह से बोला मैं लोन कराता हूँ, तुम्हारा लोन मैं करा दूंगा। करीब 7 माह बाद उपरोक्त हरी सिंह ने मुझे फोन कर सूचना दी कि हर्ष गुप्ता मुझसे 4,00,000/–रूपये ले लिये हैं तो मैंने कहा कि आप हर्ष गुप्ता से ही बात करो मेरे सामने या मुझसे पूछकर आपने कोई लेन देन नहीं किया है यह आप दोनों के बीच का मामला है। दिनांक 19.06.2025 को हरी सिंह ने प्रार्थी को धमकी दी है कि मुझे 4 लाख रूपया तुम दो, नहीं तो तुम्हें अपने घर में रखे तमंचे से गोली मार दूंगा, तुम्हारे परिवार वालो के खिलाफ झूठा मुकदमा लिखा दूंगा। (बातचीत की ऑडियो मेरे पास उपलब्ध है।) उपरोक्त हरी सिंह दबंग प्रवृति का व्यक्ति है तथा इसके साथ गिरोह में कई लोग शामिल हैं जो सीधे साधे लोगों से जान से मारने व झूंठे मुकदमों में फंसाने की धमकी देकर रंगदारी वसूलते हैं, हरी सिंह गिरोह में सरगना है जो अपने साथियों के साथ प्रार्थी से रंगदारी की मांग कर रहा है। प्रार्थी के विरुद्ध झूठा प्रार्थना पत्र थाने में देकर रंगदारी लेने का दबाव बना रहा है। हरी सिंह के गिरोह के लोग मो0नं0–7455928128 से प्रार्थी से 60,000/–रूपये की रंगदारी मांग रहे हैं, न देने पर झूंठे मुकदमें में गिरफ्तार कराने की धमकी दे रहे हैं। प्रार्थी व उसके परिवार को उपरोक्त हरी सिंह से जान माल का खतरा है। प्रार्थी व उसके परिवार के विरुद्ध कोई अनहोनी होती है तो हरी सिंह व उसके गैंग के लोग जिम्मेदार होंगे। प्रार्थी रिपोर्ट को थाने गया, परन्तु रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई, तब प्रार्थी [illegible] श्रीमान जी को प्रार्थना पत्र दे रहा है।

अतः श्रीमान जी से प्रार्थना है कि प्रार्थी की रिपोर्ट दर्ज कराकर आवश्यक कानूनी कार्यवाही करने की कृपा करें।

आपकी महान कृपा होगी।

दिनांक– 03.07.2025

प्रार्थी
नवनीत कृष्ण पुत्र बालकृष्ण
नि0ग्राम व थाना बिनावर
जिला बदायूँ।
मो0नं0– 7500200004

नोबेल शांति पुरस्कार की चाहत ,ट्रंप का गुणा भाग उतावलापन- शांति स्थापित करने के दावों का ठोस सबूत नहीं ?- राह आसान नहीं ?

वैश्विक पुरस्कार(नोबेल या कोई भी)पानें का हकदार वही है, जो खुद नहीं उसका काम बोले, उसे मांगना नहीं पड़े उसे देने की मांग उठे,पुरस्कार चलकर उसके पास आए -
एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर कुछ वर्षों से सारी दुनियाँ देख रही है की विशेष रूप से राजनीतिक वज़न रखने वाले व्यक्ति अपने उस राजनीतिक वजन को बढ़ाने व मज़बूत करने विश्व के सबसे बड़े पुरस्कार पाने की जिज्ञासा रखते हैं, उसके लिए अंदरखाने उठापटक करते हैं,गुणाभाग करते हैं, ताकि वह पुरस्कार उसको मिल जाए, परंतु वे शायद यह भूल जाते हैं कि ऐसे भी कई लोग हैं जिन्होंने उस क्षेत्र में अपना पूरा जीवन, छुपा रुस्तम रहकर नश्वर कर दिया है, परंतु कभी पुरस्कार कि आस नहीं रखी। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि, सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार पाने वाला व्यक्ति वही होना चाहिए,जिसका टारगेट पुरस्कार नहीं वह संबंधित काम हो, वैचारिकता ऐसी होनी चाहिए कि मैं पुरस्कार के पास नहीं जाऊंगा, पुरस्कार मेरे पास चलकर आएगा,यह बात तब होती है,जब उसका काम बोलता है और पुरस्कार भी उसके पास दौड़े चले आता है ।आज हम इस विषय पर चर्चा इसीलिए कर रहे हैं क्योंकि, पिछले कुछ दिनों से अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप से जोड़कर जो शांति नोबेल पुरस्कार की चर्चा चल रही है, व अभी पाक के बाद इजरायल ने भी ट्रंप क़ा नॉमिनेशन कर दिया है परंतु दुनियाँ देख रही है, पाक- इजराइल का युद्ध में व्यवहार व दूसरी ओर अभी इज़राइल- हमास रूस-यूक्रेन चरम पर है तो इधर भारत-पाक थाईलैंड- कंबोडिया तनातनी भी बनी हुई है, अभी तक इनके बीच शांति का कोई ठोस आधार नहीं है। चूँकि नोबेल शांति पुरस्कार अभी 2025 का घोषित हुआ ही नहीं है, परंतु 2026 के लिए दावेदारी का कार्ड शुरू हो गया है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,वैश्विक पुरस्कार (नोबेल या कोई भी) पानें का हकदार वही है, जो खुद नहीं उसका काम बोले, उसे मांगना नहीं पड़े उसे देने की मांग उठे,पुरस्कार चलकर उसके पास आए।

साथियों बात अगर हम ट्रंप को संभाव्य नोबेल शांति पुरस्कार 2026 की जोरों पर हो रही चर्चा की करें तो,डायनामाइट के आविष्कारक और स्वीडिश उद्योगपति अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत कहती है कि नोबेल का शांति पुरस्कार उस व्यक्ति को दिया जाना चाहिए,₹जिसने राष्ट्रों के बीच भाईचारे को बढ़ाने, स्थायी सेनाओं को समाप्त करने या कम करने, तथा शांति सम्मेलनों की स्थापना और संवर्धन के लिए सबसे अधिक या सर्वोत्तम कार्य किया हो, इजरायल और पाकिस्तान की ओर से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का नाम इस पुरस्कार के लिए भेजे जाने पर सोशल मीडिया में खूब चर्चा हो रही है कि इस पुरस्कार को किसे दिया जाना चाहिए और किसे नहीं ।गौरतलब है कि अब तक चार अमेरिकी राष्ट्रपतियों को यह पुरस्कार मिल चुका है, इनके नाम हैं- थियोडोर रूजवेल्ट, वूड्रो विल्सन, जिमी कार्टर और बराक ओबामा। अगर ट्रंप को नोबेल पुरस्कार मिलेगा तो वे इससम्मान को पाने वाले 5 वें अमेरिकी राष्ट्रपति होंगे ।नोबेल शांति पुरस्कारों को अक्सर राजनीतिक संदेश के रूप में देखा जाता है, नोबेल पुरस्कार की वेबसाइट का स्वयं मानना है कि कुछशख्सियतें जिन्हें शांति पुरस्कार मिले हैं वे ₹अत्यधिक विवादास्पद राजनीतिक एक्टिविस्ट₹ रहे हैं। इन पुरस्कारों ने अंतरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय संघर्षों की ओर जनता का ध्यान भी बढ़ाया है। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा को प्रेसिडेंट बनने के कुछ महीनों बाद ही यह पुरस्कार मिल गया था, इसपर काफी प्रतिक्रियाएं देखने को मिली थी ।1994 में एक सदस्य ने तब पद छोड़ दिया जब फिलिस्तीनी नेता यासर अराफात ने इजरायल के शिमोन पेरेज और यित्जाक राबिन के साथ नोबेल का शांति

पुरस्कार साझा किया था। अब वर्ष 2026 के लिए इस पुरस्कार के लिए नॉमिनेट होने के बाद ट्रंप उत्साहित हैं, उन्होंने इस नॉमिनेशन के लिए इजरायल के पीएम की तारीफ भी की थी। ट्रंप लंबे समय से इस पुरस्कार के लिए खुद को दावेदार मानते हैं,फरवरी में बेंजामिन से मुलाकात के दौरान ट्रंप ने कहा था,वे लोग हमें कभी भी नोबेल शांति पुरस्कार नहीं देंगे, ये बहुत गलत है, लेकिन मैं इसके योग्य हूं, पर वो मुझे देंगे नहीं, इसके बाद जून में इजरायल-ईरान के बीच लड़ाई हुई, इस जंग के बाद इजरायल ने ट्रंप को नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नॉमिनेट किया। बता दें कि ट्रंप को 2018, 2020 और 2021 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नॉमिनेट किया जा चुका है, इसके बाद ट्रंप ने एक बार फिर से अपनी पैरवी शुरू कर दी है ।8 जुलाई को एक रैली में ट्रंप ने कहा हम एक ऐसे समझौते पर हस्ताक्षर करने जा रहे हैं जिस पर कई दशकों में हस्ताक्षर नहीं किए गए हैं, यह शांति की कोशिश है और यह इज़रायल के प्रयासों का नतीजा है, ये वो चीजें हैं जिनके बारे में किसी ने नहीं सोचा था कि वे की जा सकती हैं, आप जानते हैं कि यह एक अद्भुत बात है.₹अमेरिकी राष्ट्रपति ने आगे कहा, ₹मैं यह अहंकार से नहीं कह रहा हूं, लेकिन मुझे नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया गया था, अब मुझे आपको बताना होगा यह एक बड़ी बात है,और दूसरे नेटवर्क और अधिकांश समाचारों ने इसे कवर नहीं किया, क्या आप कल्पना कर सकते हैं? जब ओबामा सत्ता में आए, तो उन्होंने कहा, 'हम उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार देने जा रहे हैं इसपर ओबामा ने सचमुच कहा, ₹मैंने क्या किया? मैंने कुछ नहीं किया, उन्होंने आठ साल तक कुछ नहीं किया, सचमुच में ₹ट्रंप ने कहा कि उन्होंने कुछ ही हफ्तों में ओबामा को नोबेल पुरस्कार दे दिया।

साथियों बात अगर हम नोबेल शांति पुरस्कार व ट्रंप की हड़बड़ी को जानने की करें तो, नोबेल पुरस्कार विश्व के सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक है, इनकी स्थापना स्वीडिश वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत के तहत हुई थी, नोबेल पुरस्कार की छह श्रेणियां हैं, जिनमें नोबेल शांति पुरस्कार भी शामिल है, अन्य पांच नोबेल पुरस्कार श्रेणियां हैं- भौतिकी, रसायन विज्ञान, शरीर विज्ञान या चिकित्सा, साहित्य और आर्थिक विज्ञान ।नॉर्वे की नोबेल समिति इस पुरस्कार की विजेता तय करती है, हालांकि, नामांकन की अंतिम तारीख 31 जनवरी होती है, इसलिए नेतन्याहू का यह नामांकन 2026 के पुरस्कार के लिए माना जा सकता है,2025 के लिए नहीं ।ट्रंप की हड़बड़ी के कुछ कारणः(1)ओबामा से तुलनाःट्रंप अक्सर पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की ओर इशारा करते हैं, जिन्होंने अपनेकार्यकाल के शुरुआती महीनों में ही नोबेल शांति पुरस्कार जीता था, ट्रंप खुद को एक महान ₹शांतिदूत₹ के रूप में स्थापित करना चाहते हैं, और ओबामा की उपलब्धि को पार करना चाहते हैं।(2)अपनी छवि को सुधारनाःट्रंप ने अपने राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान कई विवादास्पद नीतियां अपनाई थीं, जिसके कारण उनकी छवि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूमिल हुई थी. नोबेल शांति पुरस्कार उन्हें एक ₹शांतिदूत₹ के रूप में पेश करने का एक शानदार अवसर होगा, जो उनकी छवि को सुधारने में मदद कर सकता है।(3)2026 के राष्ट्रपति चुनाव में, ट्रंप को एक मजबूत उम्मीदवार के रूप में पेश करने के लिए, नोबेल शांति पुरस्कार एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है. यह पुरस्कार उन्हें जनता के बीच एक लोकप्रिय नेता के रूप में स्थापित करने में मदद कर सकताहै। (4) अंतर्राष्ट्रीय मान्यताःट्रंप ने कई बार दावा किया है कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध रोकने, इजरायल और अरब देशों के बीच शांति स्थापित करने और अन्य देशों में संघर्षों को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैनोबेल शांति पुरस्कार उन्हें इन दावों को साबित करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त करने का एक शानदार अवसर प्रदान करेगा। विवादः हालांकि, ट्रंप के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए प्रयास पर कई लोग सवाल उठा रहे हैं, कुछ लोगों का मानना है कि ट्रंप ने वास्तव में शांति के लिए कोई ठोस काम नहीं किया है, और उनका पुरस्कार के लिए प्रयास सिर्फ एक दिखावा है. कुछ का यह भी मानना है कि ट्रंप की विदेश नीति संघर्षों को सुलझाने के बजाय, उन्हें बढ़ावा देती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि नोबेल शांति पुरस्कार की चाहत,ट्रंप का गुणा भाग उतावलापन -शांति स्थापित करने के दावों का ठोस सबूत नहीं ?-राह आसान नहीं ?नोबेल शांति पुरस्कार अभी 2025 की घोषणा हुई नहीं परंतु 2026 के लिए दावेदारी का कार्ड शुरू, वैश्विक पुरस्कार (नोबेल या कोई भी) पानें का हकदार वही है, जो खुद नहीं उसका काम बोले, उसे मांगना नहीं पड़े उसे देने की मांग उठे,पुरस्कार चलकर उसके पास आए।

ग्लोबल-स्पेक केटीएम 390 एडवेंचस एन्ड्यूरो आर भारत में लॉन्च, पावरफुल इंजन और शानदार फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

ऑस्ट्रियाई मोटरसाइकिल निर्माता केटीएम ने भारतीय बाजार में ग्लोबल स्पेक KTM 390 Adventure Enduro R लॉन्च की है। ऑफ-रोडिंग के शौकीनों को इसका बेसब्री से इंतजार था। इसे 3.54 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत पर पेश किया गया है। यह कई आधुनिक फीचर्स से लैस है जो इसे ऑफ-रोडिंग के लिए बेहतरीन विकल्प बनाती है। इसमें पावरफुल इंजन और आधुनिक ब्रेकिंग सिस्टम दिया गया है।

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेयाई मोटरसाइकिल निर्माता कंपनी केटीएम ने भारतीय बाजार में ग्लोबल स्पेक KTM 390 Adventure Enduro R को लॉन्च कर दिया है। भारत में ऑफ-रोडिंग करने वाले राइडर्स इसका लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। भारत में इसे 3.54 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया है। यह कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है, जो इसे ऑफ-रोडिंग के लिए शानदार और जबरदस्त बनाते हैं। आइए केटीएम 390 एंड्यूरो आर के बारे में विस्तार में जानते हैं।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग सिस्टम

इसे स्टील ट्रेलिस मेन फ्रेम और प्रेशर डाई-कास्ट एल्युमीनियम सबफ्रेम पर डेवलप किया गया है। इसमें आगे की तरफ 230 मिमी ट्रेवल वाला 43 मिमी WP APEX ओपन कार्ट्रिज फोर्क दिया गया है। इसमें 273 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस दी गई है, जो पिछले वर्जन से 19 मिमी ज्यादा है। इसके आगे की तरफ 285 मिमी ब्रेक डिस्क और बायब्रे कैलिपर और पीछे की तरफ 240 मिमी ब्रेक डिस्क और सिंगल-पिस्टन कैलिपर का इस्तेमाल किया गया है। इसमें सेफ्टी के लिए ABS दिया गया है, जिसे ऑफ-रोडिंग के दौरान डिसेबल किया जा सकता है।

390 Adventure Enduro R के फीचर्स

इसमें पावरफुल LED लाइट्स दी गई है। यह लाइट्स अंधेरी रातों में बेहतरीन रोशनी देते हैं। इसमें बॉन्डेड ग्लास से बनी, 4.2 इंच की TFT स्क्रीन दी गई है। इसके राइडर डैशबोर्ड के जरिए म्यूजिक, इनकमिंग कॉल, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन और राइड मोड को कंट्रोल किया जा सकता है। बाइक में डिवाइस चार्जिंग के लिए USB-C पोर्ट भी दिया गया है।

390 Adventure Enduro R का इंजन

इसमें नई जरेशन की LC4c इंजन का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें 399 cc सिंगलसिलेंडर, 4-स्ट्रोक इंजन, लिक्विड कूल्ड इंजन दिया गया है, जो 45 PS की पावर और 39 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

बड़ी खबर ! टेस्ला इस तारीख को भारत में मारेगी एंट्री, एलन मस्क के साथ पीएम मोदी भी रह सकते हैं मौजूद

परिवहन विशेष न्यूज

टेस्ल इलेक्ट्रिक गाड़ियों का भारत में इंतजार कर रहे लोगों के लिए बड़ी खबर है। कंपनी 15 जुलाई 2025 को अपनी इलेक्ट्रिक कारें लॉन्च कर सकती है। लॉन्चिंग इवेंट मुंबई के बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (BKC) में होने की उम्मीद है। Tesla भारत में अपनी पहली कार Model Y लॉन्च करेगी जिसकी कीमत करीब 70 लाख रुपये हो सकती है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी उपस्थित हो सकते हैं।

नई दिल्ली। भारत में Tesla की इलेक्ट्रिक गाड़ियां का इंतजार कर रहे लोगों के लिए एक बड़ी खबर है। कंपनी पिछले कुछ महीनों से लगातार अपनी गाड़ियों की टेस्टिंग कर रही है। टेस्ला की गाड़ियों को टेस्टिंग के दौरान कई बार स्पॉट भी किया जा चुका है। अब कंपनी अपनी गाड़ियों को भारत में लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इस लॉन्चिंग इवेंट में टेस्ला के सीईओ एलन मस्क भी मौजूद रह सकते हैं। इस दौरान वह न केवल टेस्ला इलेक्ट्रिक कारों को लॉन्च करेंगे, बल्कि और भी कई बड़ी चीजों के बारे में एलान कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि Tesla इलेक्ट्रिक कारें भारत में कब लॉन्च होने वाली है?

Tesla इलेक्ट्रिक कारें भारत में कब लॉन्च होंगी?

एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय बाजार में टेस्ला की इलेक्ट्रिक कारें 15 जुलाई, 2025 को लॉन्च होने वाली है। टेस्ला की गाड़ियों की लॉन्चिंग का इवेंट मुंबई के बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (BKC) में होने की उम्मीद है। और ऐसी खबरें भी हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इस अवसर पर उपस्थित हो सकते हैं। BKC में टेस्ला अपना पहला आधिकारिक शोरूम जल्द ही खोलने वाली है। इसको लेकर कंपनी की तरफ से तैयारियां भी की जा रही है। यहां पर ग्राहक टेस्ला के इलेक्ट्रिक वाहनों और तकनीक का सीधा अनुभव कर पाएंगे। इस शोरूम का उद्देश्य भारत में टेस्ला के संचालन की आधारशिला के रूप में काम करना है।

भारत में टेस्ला की पहली कार होगी Model Y

भारत में टेस्ला अपनी एंट्री Model Y के जरिए करने वाली है। यह भारत में लॉन्च होने वाली टेस्ला की पहली गाड़ी होगी। इसकी कीमत करीब 70 लाख रुपये तक हो सकती है। इसे कंपनी अपने बर्लिन फैक्ट्री से आयात करेगी, जो भारतीय बाजार के लिए आवश्यक राइट-हैंड ड्राइव (RHD) वेरिएंट का निर्माण करती है। यह कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है।

टाटा मोटर्स ने अपनी इन दो इलेक्ट्रिक कारों पर दे रही लाइफटाइम बैटरी वारंटी, कई बेहतरीन फीचर्स से है लैस

टाटा मोटर्स ने Nexon EV और Curvv EV के लिए लाइफटाइम हाई-वोल्टेज बैटरी वारंटी की घोषणा की है जिससे ग्राहकों को बैटरी की चिंता से मुक्ति मिलेगी। यह सुविधा नए और मौजूदा दोनों ग्राहकों के लिए उपलब्ध है। कंपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा ग्राहकों को 50000 रुपये तक का लॉयल्टी बोनस भी दे रही है।

नई दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक कार निर्माता कंपनी में से एक टाटा मोटर्स अपने ग्राहकों के लिए एक शानदार तोहफा लेकर आई है। कंपनी अपनी पॉपुलर इलेक्ट्रिक एसयूवी Tata Nexon EV और Curvv EV के लिए लाइफलाइट हाई-वोल्टेज बैटरी वारंटी की घोषणा की है। यह सुविधा न केवल नए खरीदारों के लिए लेकर आया गया है बल्कि मौजूदा मालिकों को भी मिलेगा।

क्या है इस घोषणा में खास?

टाटा मोटर्स ने हाल ही में लॉन्च हुई हैरियर ईवी के साथ लाइफटाइम बैटरी वारंटी की शुरुआत की है। अब कंपनी ने इस सुविधा को छोटी इलेक्ट्रिक एसयूवी, कर्व ईवी और नेक्सन ईवी के 45 kWh बैटरी वेरिएंट्स तक के लिए बढ़ा दिया है। टाटा मोटर्स के इस घोषणा के बाद लोगों के अंदर से बैटरी खराब होने पर उसे बदलवाने के लिए लगने वाले खर्चे की चिंता खत्म हो जाएगी। इस लाइफटाइम बैटरी वारंटी के साथ, टाटा मोटर्स ने ग्राहकों को बैटरी स्वास्थ्य और संभावित महंगे रिप्लेसमेंट को लेकर एक बड़ी राहत दी है।

कंपनी का यह कदम मौजूदा ग्राहकों को भी लाभ देगा। लाइफटाइम बैटरी वारंटी मिलने से टाटा की इलेक्ट्रिक एसयूवी की रिसेल वैल्यू बेहतर होगी। अगर कोई ग्राहक भविष्य में अपनी EV बेचना चाहता है, तो उसे इसकी अच्छी कीमत मिल पाएगी।

इलेक्ट्रिक एसयूवी की बिक्री को और बढ़ावा देने के लिए, टाटा मोटर्स अपने मौजूदा इलेक्ट्रिक वाहन ग्राहकों को कर्व ईवी और नेक्सन ईवी (45 kWh वेरिएंट) की खरीद पर 50,000 रुपये तक का अतिरिक्त लॉयल्टी बोनस भी दे रही है।

टाटा मोटर्स का विजन

टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड के चीफ कमर्शियल ऑफिसर विवेक श्रीवत्स ने इस पहल पर टिप्पणी करते हुए कहा कि प्रीमियम ईवी तकनीक को सुलभ बनाकर, हमने भारत के ईवी सेगमेंट के जबरदस्त विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस विकास के पीछे एक प्रमुख कारक ग्राहकों में चिंता मुक्त स्वामित्व अनुभव के लिए विश्वास जगाना है। आज, हमें कर्व.ईवी और नेक्सन.ईवी 45 kWh के सभी ग्राहकों के लिए लाइफटाइम HV बैटरी वारंटी समाधान पेश करके इस भावना को और आगे बढ़ाने पर गर्व है।

Tata Nexon EV और Curvv EV की कीमत

Nexon EV के 45 kWh वेरिएंट की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 13.99 लाख रुपये है, जबकि Curvv EV 45 kWh वेरिएंट की शुरुआती एक्स कीमत 17.49 लाख रुपये और 55 kWh वेरिएंट की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 19.25 लाख रुपये है।

दिल्ली की बारिश से पानी में फंस गई गाड़ी तो न हों परेशान, करें ये काम नहीं तो हो जाएगी बड़ी परेशानी

जुलाई में दिल्ली समेत उत्तर भारत के सभी राज्यों में लगातार हो रही बारिश से जलभराव हो रहा है। अगर आपकी गाड़ी सड़क पर पानी में फंस जाए तो किन बातों का ध्यान रखना काफी जरूरी हो जाता है। जिससे खुद के साथ ही गाड़ी को भी नुकसान से बचाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नईदिल्ली। जुलाई के महीने में दिल्ली सहित उत्तर भारत में लगातार बारिश हो रही है। बारिश के कारण कई जगहों पर पानी भर रहा है। सड़क पर ज्यादा पानी हो और उसमें गाड़ी फंस जाए तो किन बातों का ध्यान (Car Water Damage Prevention) रखना काफी जरूरी हो जाता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

ज्यादा पानी से बचाएं गाड़ी

बारिश के दौरान जब सड़कों पर ज्यादा पानी भर जाए तो कभी भी ऐसी जगह से गाड़ी को निकालने की कोशिश (Delhi rain car stuck) नहीं करनी चाहिए। इसकी जगह गाड़ी को दूसरे रास्ते से निकालना चाहिए जहां पर अपेक्षाकृत कम पानी जमा हो।

परेशान न हों

किसी कारण से आपकी गाड़ी ऐसी जगह पर फंस गई है जहां पर काफी ज्यादा जलभराव हो रखा है तो ऐसी स्थिति में घबराना नहीं चाहिए। इसकी जगह खुद को शांत रखते हुए वहां से बाहर निकलने का रास्ता तलाशना आपको सुरक्षित रख सकता है।

गाड़ी न करें स्टार्ट

अगर आपकी गाड़ी पानी में फंस गई है तो फिर किसी भी तरह से उसे स्टार्ट करने की कोशिश न करें। ऐसा करने पर गाड़ी के इंजन तक पानी पहुंच सकता है, जिससे इंजन को बड़ा नुकसान हो जाता है। फिर उसे ठीक करवाने में समय और पैसा खर्च करने पड़ते हैं।

क्रेन को बुलाएं

जब भी गाड़ी पानी में फंस जाए तो वहां से बाहर निकालने के लिए क्रेन को बुलाएं। क्रेन की मदद से कार को पानी से बाहर निकालें और फिर बिना स्टार्ट किए ही मेकैनिक के पास गाड़ी को ले जाएं।

सर्विस सेंटर पर करवाएं यह काम

जब गाड़ी को मेकैनिक के पास ले जाएं तो गाड़ी के फ्यूल सिस्टम, वायरिंग, बैटरी के साथ ही सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को जरूर चेक करवाएं। इससे पानी से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है।

पानी से निकल जाए गाड़ी तो करें यह काम

अगर बिना किसी परेशानी पानी के बीच से आप गाड़ी को निकालने में सफल हो जाते हैं तो भी कई जगहों पर पानी रह जाता है। इसलिए पानी से निकालने के बाद गाड़ी के ब्रेक को बार बार लगाएं। इससे ब्रेक में भरा पानी बाहर निकल जाता है और ब्रेक लगाने में परेशानी नहीं होती।

भारत को एक राष्ट्र के रूप में जल सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी

विजय गर्ग

डे ज़ीरो—एक ऐसा शब्द है जो अब केवल एक संभावित आपदा नहीं, बल्कि 21वीं सदी के सबसे गंभीर मानवीय संकटों में से एक का प्रतीक बन चुका है। यह शब्द पहली बार 2018 में वैश्विक स्तर पर चर्चा में तब आया जब दक्षिण अफ्रीका का कैपटाउन शहर पानी की आपूर्ति पूरी तरह समाप्त होने के कगार पर पहुंच गया था। 'डे ज़ीरो' वह दिन होता है जब शहर के सभी नल बंद कर दिए जाते हैं, और नागरिकों को सार्वजनिक वितरण केंद्रों पर लंबी कतारों में खड़े होकर सीमित मात्रा में पानी प्राप्त करना पड़ता है। कैपटाउन में यह सीमा प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 25 लीटर निर्धारित की गई थी। हालांकि इस संकट का कारण केवल जलवायु परिवर्तन या वर्षा की अनिश्चितता नहीं था—यह दशकों की नीति विफलता, शहरों का अति-विस्तार, परंपरागत जल स्रोतों की उपेक्षा और जल प्रबंधन में बड़ी खामियों का संयुक्त परिणाम था।

कैपटाउन ने कड़ी नीतियों और नागरिक सहभागिता से इस आपदा को कुछ समय के लिए टाल दिया है। लेकिन पानी की गंभीर किल्लत की आहट अब भारत के दरवाज़े तक होने लगी है। भारत जैसे देशों में, जहां जनसंख्या अत्यधिक है, शहरीकरण अनियंत्रित है, और भूजल दोहन पर कोई स्पष्ट नियंत्रण नहीं—डे ज़ीरो अब भविष्य की आशंका नहीं, बल्कि एक आसन्न यथार्थ है।

बेंगलुरु, जिसे कभी 'झीलों का शहर' कहा जाता था, आज जल संकट के सबसे भीषण दौर से गुजर रहा है। यहां की अधिकांश झीलें अब या तो कचरा डंपिंग साइट बन चुकी हैं या अवैध निर्माण की भेंट चढ़ गईं। भूजल स्तर हर वर्ष 10-12 मीटर की दर से नीचे जा रहा है। बेंगलुरु में डे ज़ीरो की आंशिक झलक तब देखने को मिली जब पूरे शहर में टैंकर के पानी पर निर्भरता बढ़ी।

चेन्नई भी 2019 में डे ज़ीरो जैसे संकट का सामना कर चुका है जब उसके चारों जलाशय सूख गए थे। वहीं दिल्ली की स्थिति भी बेहतर नहीं—शहर की मुख्य जलधारा यमुना प्रदूषण और अतिक्रमण की शिकार है, जबकि भूजल स्तर अत्यधिक गंभीर श्रेणी में जा चुका है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक भारत के 21 बड़े शहरों में जलापूर्ति पूरी तरह समाप्त हो सकती है।

पानी के मामले में हरियाणा की स्थिति भी चिंताजनक है। धान,गन्ने जैसी अत्यधिक जल-खपत वाली फसलों का विस्तार, सिंचाई तकनीकों का अल्प उपयोग और नगण्य वर्षा जल संचयन ने भूजल अंधाधुंध तरीके से समाप्त कर दिया। केंद्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार हरियाणा के 85 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रों में भूजल स्तर खतरनाक स्तर पार कर चुका है।

भारत में जल संकट के लिए जिम्मेदार केवल वर्षा की अनियमितता नहीं है, बल्कि जल निकायों पर अतिक्रमण, नीति असंगति, शहरी अपशिष्ट का जल स्रोतों में मिलना और लोगों में जल बचत के प्रति उदासीनता जैसे कारक भी उतने ही उत्तरदायी हैं।

जल संकट से निपटने के लिए कई योजनाएं तो बनाई गईं, लेकिन उनका क्रियान्वयन कागज़ी आंकड़ों तक ही सीमित रह गया। मसलन, जल जीवन मिशन को सिर्फ 'हर घर नल' तक सीमित समझा गया, जबकि उसका मूल उद्देश्य स्थानीय जल स्रोतों का सशक्तीकरण और सामुदायिक सहभागिता के ज़रिए जल आत्मनिर्भरता था।

इस स्थिति से निपटने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनानी होगी। जल को केवल सरकारी जिम्मेदारी न मानकर नागरिक सहभागिता पर बल देना होगा। जल संरक्षण को जीवनशैली में लाना होगा – जैसे कैपटाउन में लोगों ने बर्तनों में नहाने का पानी जमा कर पौधों को सींचा, हाथ धोते समय नल बंद करना सीखा और शौचालयों में रिसाइकल पानी का प्रयोग शुरू किया।

भारत में भी प्रत्येक इमारत में वर्षा जल संचयन अनिवार्य करना चाहिए, जिसे स्थानीय निकाय सख्ती से लागू करें। भूजल का मापन, नियमन और पुनर्भरण एक समर्पित मिशन के तहत चलाया जाए। जल जीवन मिशन को स्थानीय स्रोतों को पुनर्जीवित करने और जल संरक्षण पर केंद्रित करना होगा। शहरी क्षेत्रों में कंक्रीट की जगह परकोलेशन पिट्स, बायोस्वेल्स और हरित क्षेत्र बढ़ाने होंगे ताकि वर्षा जल भूमि में जज्ब हो सके। पानी की कीमत समझना और उपभोग पर नियंत्रण लाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए स्लैब आधारित मूल्य निर्धारण, जहां न्यूनतम जरूरतों के बाद अतिरिक्त खपत पर उच्च शुल्क लगे, एक व्यावहारिक नीति हो सकती है। इससे पानी का विवेकपूर्ण उपयोग प्रोत्साहित होगा। वहीं, तकनीकी नवाचार जैसे जल रिसाव की स्मार्ट निगरानी, अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग और समुद्री जल से मीठा पानी बनाने की प्रक्रिया को प्रमुखता दी जानी चाहिए। चेन्नई ने समुद्री जल शोधन संयंत्र की ओर कदम बढ़ाया है, और यह उन तटीय शहरों के लिए प्रेरणा हो सकता है जहां भूजल या वर्षा जल अपर्याप्त है।

स्कूलों और कॉलेजों में जल शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए। आने वाली पीढ़ी को जल के महत्व और उसके संरक्षण के व्यावहारिक तरीकों से परिचित कराना अब एक राष्ट्रीय जिम्मेदारी बन गई है।

भारत को एक राष्ट्र के रूप में जल सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी, नीतिगत, प्रशासनिक और सामाजिक स्तर पर समन्वित प्रयास करने होंगे। दरअसल, जल को लेकर आत्मनिर्भरता केवल योजना की भाषा में नहीं हो, ज़मीनी क्रियान्वयन और जनचेतना में झलकनी चाहिए। तभी हम डे ज़ीरो के खतरे को टाल सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

स्क्रीन दुश्मन नहीं... बच्चों के लिए सोच-समझकर चुनें कटेंट : विजय गर्ग

आज लोग अपना ज्यादातर वक्त स्मार्टफोन, कम्प्यूटर, टैबलेट, टेलीविजन या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे डिजीटल स्क्रीन पर बिताते हैं और इस पर दुनियाभर में विशेषज्ञों तथा माता-पिता के बीच बहस छिड़ी हुई है कि क्या छोटे बच्चों को इन डिजीटल उपकरणों का इस्तेमाल करने देना चाहिए। तो फिर 'स्क्रीन टाइम' का बच्चे के तंत्रिका-मनोवैज्ञानिक विकास पर वास्तविक प्रभाव क्या है? कई बाल चिकित्सा संघ बचपन में खासतौर से पांच साल की आयु तक के बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम को सीमित रखने की सलाह देते हैं लेकिन अनुसंधान से पता चलता है कि यह तस्वीर पूरी तरह से सच नहीं है। बच्चे स्क्रीन टाइम में क्या देखते हैं, वह इसके प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण है।

शारीरिक प्रभाव :

कई अध्ययनों में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि स्क्रीन के लंबे समय तक उपयोग से बच्चों में आंखों की थकान, आंखों में सूखापन और निकट दृष्टि दोष हो सकता है। इसके अलावा, बच्चों को जिस प्राकृतिक उत्तेजना की ज़रूरत होती है, तकनीक उसकी जगह नहीं ले सकती और न ही लेनी चाहिए। 'फ्री प्ले', शारीरिक व्यायाम, आमने-सामने बातचीत और प्रकृति के साथ संपर्क सभी बच्चे के विकास के लिए जरूरी हैं, लेकिन इनके स्थान पर स्क्रीन टाइम से मोटापे, दृष्टि दोष और सीखने की कठिनाइयों का जोखिम बढ़ सकता है।

तंत्रिका-मनोवैज्ञानिक प्रभाव :

शारीरिक प्रभाव के अलावा स्क्रीन टाइम के कारण ध्यान, भाषा सीखने और भावनात्मक विनियमन जैसे कार्यों पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में चिंता है। तीन वर्ष से कम आयु के बच्चों पर किए गए 102 अध्ययनों की समीक्षा से पता चलता है कि स्क्रीन टाइम के घंटे ही एकमात्र कारक नहीं है, परिस्थितियाँ और संदर्भ भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यदि कोई बच्चा खेल रहा है और उस दौरान टेलीविजन चालू छोड़ रखा है तो इससे बच्चे के खेल, ध्यान और बातचीत में बाधा आती है, भले ही बच्चा सीधे तौर पर टेलीविजन न देख रहा हो। यदि शैक्षिक उद्देश्यों के लिए और देखरेख में उपयोग किया जाए तो टैबलेट, मोबाइल फोन और टेलीविजन मूल्यवान शिक्षण उपकरण हो सकते हैं, लेकिन यदि इनका लापरवाही से उपयोग किया जाए तो ये सामाजिक संपर्क को सीमित कर सकते हैं।

असली समस्या : अनुचित सामग्री

प्रमुख खतरा स्क्रीन ही नहीं है, बल्कि उस पर मौजूद सामग्री है। बच्चों के अनुकूल न होने वाली सामग्री को देखने से ध्यान और कार्यों में कठिनाई होती है। यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म को देखने से सबसे छोटे बच्चों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। दो से तीन साल की उम्र के बच्चे, जो इस प्लेटफॉर्म के ज़्यादा संपर्क में रहते हैं, उनमें भाषाई विकास का स्तर कम होता है। इससे सामाजिक संपर्क में कठिनाई आ सकती है।अन्य अध्ययनों से पता चलता है कि अत्यधिक टेलीविजन देखने से सात साल की उम्र में अधिक बैचेनी होने के साथ ही गणित और शब्दावली में खराब प्रदर्शन भी देखा गया। यह भी पाया गया है कि 15 से 48 महीनों के बीच बहुत अधिक टेलीविजन देखने से भाषा विकास में देरी की आशंका तीन गुना बढ़ जाती है।

बच्चों के अनुकूल सामग्री क्या है?

यहीं से कहानी बदल जाती है। बच्चों और शैक्षणिक सामग्री का सकारात्मक प्रभाव हो सकता है, खासकर अगर इसमें बातचीत भी शामिल हो। उदाहरण के लिए, चार से छह वर्ष की आयु के बच्चों में ध्यान और कार्यकारी कार्यों में सुधार के लिए बनाए गए डिजिटल कार्यक्रमों ने न केवल इन क्षमताओं में सुधार दिखाया है, बल्कि बुद्धिमत्ता, ध्यान और कार्यशील स्मृति (वर्किंग मेमोरी) में भी सुधार दिखाया है। परिवार से बातचीत के साथ-साथ डिजीटल कार्यक्रमों के उपयोग से दो से चार वर्ष की आयु के उन बच्चों की भाषा में सुधार देखा गया जिनमें भाषा सीखने में देरी देखी गयी थी।

विशेषज्ञों की सलाह :

कई विशेषज्ञ निकायों ने ये सिफारिशें की हैं कि स्क्रीन टाइम का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जाए। 'अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स' ने 18 महीने से कम उम्र के बच्चों के लिए स्क्रीन से दूर रहने का सुझाव दिया है (वीडियो कॉल को छोड़कर)। जब वे 18-24 महीने के हो जाते हैं, तो वे केवल गुणवत्तापूर्ण सामग्री देखने की सलाह देते हैं वह भी वयस्कों की मौजूदगी में। दो से पांच वर्ष की आयु के बच्चों के मामले में, प्रतिदिन अधिकतम एक घंटे की शैक्षिक सामग्री देखने की अनुमति दी जानी चाहिए।

मानव अंडे और शुक्राणु तरल पदार्थों में पाए जाने वाले छोटे प्लास्टिक कण

विजय गर्ग

मानव बालों की तुलना में प्लास्टिक के छोटे टुकड़े कुछ अप्रत्याशित स्थानों में बदल गए हैं, जिसमें मानव रक्तप्रवाह भी शामिल है।

अब, यूरोपीय सोसाइटी ऑफ ह्यूमन रिप्रोडक्शन एंड एम्ब्रियोलॉजी की बैठक में प्रस्तुत आंकड़ों से पता चलता है कि इन टुकड़ों ने अंडे को घेरने और शुक्राणु के साथ यात्रा करने वाले तरल पदार्थों का उल्लंघन किया है।

विशेषज्ञों को 69 प्रतिशत महिलाओं में माइक्रोप्लास्टिक और उनके द्वारा अध्ययन किए गए 55 प्रतिशत पुरुषों में मिला। के अनुसार डॉ. गोमेज़, सांचेज़, टीम को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कण इतने व्यापक थे।

मानव प्रजनन तरल पदार्थों में प्लास्टिक अध्ययन में पॉलीटेट्राफ्लुओरोएथिलीन और पॉलीप्रोपाइलीन जैसे पॉलिमर का पता चला है, जो स्लीक फ्राइंग पैन और फूड पैकेजिंग के लिए बेहतर तरीके से जाना जाता है। उन्हें मानव अंडे के बगल में देखकर एक सैद्धांतिक खतरा एक औसत दर्जे का हो जाता है।

इसी तरह सर्जरी के दौरान हटाए गए फेफड़ों के ऊतकों में आकार के कणों को गहराई से उजागर किया गया है, यह साबित करते हुए कि साँस लेना प्लास्टिक की धूल के लिए एक यथार्थवादी वितरण मार्ग है।

नीदरलैंड के शोधकर्ताओं ने मानव रक्त के नमूनों में घूम रहे प्लास्टिक द्रव्यमान को भी मापा है, एक अवलोकन जो बताता है कि टुकड़े दूर के ऊतकों में कैसे जाते हैं।

प्लास्टिक मानव शरीर में कैसे प्रवेश करता है ज्यादातर लोग खाने, पीने या सांस लेने के द्वारा प्लास्टिक के गुच्छे में लेते हैं, क्योंकि रोजमर्रा के उत्पाद अदृश्य धूल को बहाते हैं जब भी वे गर्म होते हैं, नष्ट हो जाते हैं, या सूरज की रोशनी के संपर्क में आते हैं।

एक बार निगलने या साँस लेने के बाद, छोटे कण आंत की दीवार या फेफड़ों में पतली हवा रक्त झिल्ली के माध्यम से फिसल सकते हैं।

पशु अध्ययनों से पता चलता है कि एक माइक्रोमीटर के नीचे के टुकड़े सीधे कोशिकाओं में प्रवेश कर सकते हैं, जबकि बड़े शार्क ऊतक में फंस जाते हैं और स्थानीय जलन पैदा करते हैं। किसी भी तरह से, वे शरीर के सामान्य अपशिष्ट फिल्टर को बायपास करते हैं।

चूहों पर प्रयोगशाला के काम से पता चलता है कि पाचन तेज बढ़ जाता है जब माइक्रोप्लास्टिक वसा पर खुजली करता है, एक विस्तार जो प्रजनन अनुसंधान के लिए मायने रखता है क्योंकि प्रजनन हार्मोन समान लिपिड राजमार्गों पर सवारी करते हैं।

ओवरलैप चिंता पैदा करता है कि प्लास्टिक अन्य रसायनों के लिए अंत:स्रावी नकल या वाहक के रूप में कार्य कर सकता है।

प्लास्टिक प्रजनन क्षमता को नुकसान पहुंचाता है पॉलीस्टीरिन के टुकड़ों के संपर्क में आने वाले चूहे क्षतिग्रस्त डीएनए और सुस्त आंदोलन के साथ शुक्राणु बहाते हैं, ऑक्सीडेटिव तनाव का पता लगाने वाले प्रभाव जो एंटीऑक्सिडेंट बचाव को प्रभावित करते हैं।

कृंतक लेडिग कोशिकाओं पर अलग काम नैनोप्लास्टिक एक्सपोजर के बाद सिकुड़ा हुआ माइटोकॉन्ड्रिया दिखाता है, जो टेस्टोस्टेरोन उत्पादन को थ्रॉटल करता है और कूड़े के आकार को सिकोड़ता है।

कि माइक्रोप्लास्टिक हाइपोथैलेमिक पिट्यूटरी गोनाडल अक्ष को बाधित कर सकता है, जिससे हार्मोनल असंतुलन और दोषपूर्ण अंडे की परिपक्वता हो सकती है।

क्योंकि मानव अण्डाणुकोशिका महीनों में विकसित होते हैं, क्रोनिक एक्सपोजर एक छोटी स्पाइक से अधिक मायने रख सकता है। यह अंडे और शुक्राणु दोनों में पीटीएफई का बार-बार पता लगाने को विशेष रूप से उल्लेखनीय बनाता है।

अंडे और शुक्राणु में प्लास्टिक का स्तर वर्तमान डेटा सेट में, पीटीएफई नमूना अंडे के तरल पदार्थ के 31 प्रतिशत और वीर्य के 41 प्रतिशत में दिखाई दिया। पीपी पुरुषों के बीच महिलाओं और पॉलीस्टीरिन के बीच दूसरे स्थान पर रहे, पॉलीथीन टेरेफ्थेलेट भी मौजूद थे लेकिन छोटी संख्या में।

वार्षिक प्लास्टिक उत्पादन 1950 में दो मिलियन टन से 2019 में लगभग 460 मिलियन तक चढ़ गया है, प्लास्टिक और मानव स्वास्थ्य पर मिंडेरू मोनाको आयोग द्वारा प्रलेखित 230 पुराने गुना कूद।

उत्पादन में प्रत्येक चिपक कूड़े, अपक्षय, और टुकड़ा रिलीज बढ़ जाती है, प्लास्टिक और लोगों के बीच प्रतिक्रिया पाश कस। प्रजनन कोशिकाएं, डिजाइन द्वारा नाजुक, सामने की रेखा पर खड़ी होती हैं।

अधिकांश प्रजनन नमूनों में केवल एक या दो प्लास्टिक कण थे, तरल पदार्थों में समग्र मलबे की तुलना में कम माना जाता है। फिर भी प्रजनन विशेषज्ञ ध्यान दें कि धातुओं का पता लगाने से भ्रूण के विकास को पटरी से उतार सकते हैं, इसलिए अकेले कण की गिनती जोखिम की भविष्यवाणी नहीं कर सकती है।

मानव प्रजनन अनुसंधान में प्लास्टिक शामिल होना चाहिए "हमारे दैनिक जीवन में प्लास्टिक के सामान्यीकृत उपयोग से बचने के पक्ष में उन्हें एक अतिरिक्त तर्क माना जाना चाहिए अनुसंधान टीम अब सैकड़ों रोगियों का अध्ययन करेगी और इन विट्रो निषेचन चक्रों के दौरान कण भार को भ्रूण की गुणवत्ता से जोड़ेगी। वे सहसंबंध प्रयोगशाला कृन्तकों से परे पहले प्रत्यक्ष मानव साक्ष्य की आपूर्ति कर सकते हैं।

वे यह परीक्षण करने के लिए जीवन शैली प्रश्नावली की योजना बनाते हैं कि क्या भारी बोतलबंद use पानी का उपयोग या प्लास्टिक में माइक्रोवेविंग भोजन जैसी आदतें उच्च कण की गिनती के साथ सहसंबंधित होती हैं। दृष्टिकोण सार जोखिम सिद्धांत को व्यक्तिगत सलाह में परिवर्तित कर सकता है।

"माइक्रोप्लास्टिक्स एक जटिल समीकरण में सिर्फ एक चर हैं कम जोखिम के लिए सरल आदतें प्लास्टिक की बोतलों से कांच या स्टेनलेस स्टील में स्विच करना अंतर्ग्रहण को कम करता है क्योंकि गर्मी और समय अब कंटेनर की दीवारों से कणों को नहीं छोड़ते हैं। खरोंच वाले नॉनस्टिक पैन को बदलने से आहार में पीटीएफई गुच्छे कट सकते हैं।

शोधकर्ता प्लास्टिक काटने वाले बोर्डों को छोड़ने और इसके बजाय सिरेमिक या बांस का उपयोग करने की सलाह देते हैं, क्योंकि चाकू की कार्रवाई शेविंग्स को मुक्त करती है जो भोजन से चिपके रहते हैं। पॉलीस्टीरिन बक्से से इसे स्थानांतरित करने से पहले टेक-आउट कूल भी मदद करता है।

एचईपीए फिल्टर के साथ एयर प्यूरीफायर सिंथेटिक वस्त्रों द्वारा बहाए गए एयरबोर्न फाइबर को कैप्चर करता है, जो नर्सरी के लिए विशेष रूप से उपयोगी कदम है। एक सील प्रणाली के साथ नियमित रूप से वैक्यूम करने से कणों को फिर से निलंबित कर दिया जाता है।

ये ट्वीक्स फुलप्रूफ नहीं हैं, फिर भी वे प्लास्टिक की धूल पर सवारी करने वाले रासायनिक योजक को हटाने जैसे साइड बेनिफिट्स के साथ आते हैं। वे समय खरीदते हैं जबकि विज्ञान नैदानिक दांव को छांटता है।

मानव प्लास्टिक प्रदूषण में कटौती के प्रयास सार्वजनिक स्वास्थ्य शोधकर्ताओं का तर्क है कि अकेले व्यक्तिगत विकल्प हर दिन एक अरब पाउंड से अधिक नए प्लास्टिक बनाने वाली आपूर्ति श्रृंखला को आगे नहीं बढ़ा सकते हैं।

संयुक्त राष्ट्र में वार्ताकार एक वैश्विक संधि को समाप्त कर रहे हैं जो उत्पादन को रोक सकती है और रीसाइक्लिंग को सुव्यवस्थित कर सकती है।

हर नया डेटासेट एक ही तस्वीर को तेज करता है: प्लास्टिक का मौसम धूल में, धूल हर जगह जाती है, और जीवित ऊतक कोई बंद दरवाजे नहीं रखता है। अंडे और शुक्राणु, यह पता चला है, कोई अपवाद नहीं हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्

ग्लोबल वार्मिंग से दुनिया में नए रोगजनक उभर रहे

विजय गर्ग

ग्लोबल वार्मिंग से दुनिया में नए रोगजनक उभर रहे हैं और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन रहे हैं। वैज्ञानिकों ने एस्परजिलस नामक फंगस के बढ़ते प्रसार के बारे में चिंता जताई है। इस फंगस के फैलने में जलवायु परिवर्तन और गर्म तापमान की मदद भी शामिल है। इस प्रकार की फफूंद लोगों, पौधों और जानवरों में गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न कर सकती है और कुछ मामलों में मृत्यु का कारण भी बन सकती है। एक नए अध्ययन में ब्रिटेन के शोधकर्ताओं ने दुनिया में फंगस के विस्तार का मॉडल बनाकर दिखाया है कि फंगस की तीन प्रजातियां, एस्परजिलस फ्यूमिगेटस, एस्परजिलस फ्लेवस और एस्परजिलस नाइजर अगले 70-80 वर्षों में उत्तर की ओर फैलेंगी। शोधकर्ताओं ने फंगस के मौजूदा आवासों और वार्मिंग की भविष्यवाणी करने वाले जलवायु मॉडल का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला है।

ब्रिटेन के मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के पर्यावरण वैज्ञानिक नॉर्मन वैन रिजन का कहना है कि आर्द्रता और चरम मौसम की घटनाओं जैसे पर्यावरणीय कारकों में परिवर्तन, आवासों को बदल देंगे और फंगस के अनुकूलन और प्रसार को बढ़ावा देंगे। वायरस और दूसरे रोगजनक परजीवियों की तुलना में फंगस पर अपेक्षाकृत कम शोध किया गया है, लेकिन ताजा अध्ययन दिखाते हैं कि भविष्य में फंगस रोगजनकों का दुनिया के अधिकांश क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ने की संभावना है।

गंभीर जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य के तहत, यूरोप में एस्परजिलस फ्यूमिगेटस का प्रसार 15 वर्षों में 77.5 प्रतिशत बढ़ सकता है, जिससे 90 लाख और लोगों को संक्रमण का खतरा हो सकता है। एस्परजिलस फ्लेवस जो गर्म क्षेत्रों को तरजीह देता है, यूरोप में 16 प्रतिशत तक प्रसारित हो सकता है, जिससे अतिरिक्त 10 लाख लोग जोखिम में पड़ सकते हैं। शोधकर्ता नए क्षेत्रों में फैलने वाले संक्रमण से चिंतित हैं। इस तरह के फंगस संक्रमण कमजोर लोगों, विशेष रूप से कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों को ज्यादा परेशान करेंगे। इस बात की अधिक संभावना है कि नई जगहों पर फंगस की प्रजातियों के अनुकूलन बाद स्वस्थ व्यक्तियों में भी संक्रमण के मामले बढ़ जाएंगे।

शोधकर्ताओं का कहना है कि मानव संक्रमणों के अलावा और भी बातें चिंताजनक हैं। फंगस के प्रकोप से फसलें नष्ट हो सकती हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में दुनिया की आबादी का पेट भरने करने की चुनौतियों में वृद्धि हो सकती है।

शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में लिखा है कि एशिया, यूरोप और दुनिया के दूसरे हिस्सों में एस्परजिलस फंगस के साथ मानव संपर्क में वृद्धि की संभावना आने वाले समय में सार्वजनिक स्वास्थ्य का बोझ बढ़ा सकती है और फसल सुरक्षा परिदृश्य को बदल सकती है। एस्परजिलस के अलावा एक और फंगस, कैंडिडा ऑरिस भी वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय रही है। महत्वपूर्ण स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनने में सक्षम यह फंगस भी दुनिया के गर्म होने के साथ-साथ नए क्षेत्रों में फैल रही है, और अन्य प्रजातियों के भी इसका अनुसरण करने की संभावना है।

इन फंगस प्रजातियों का एक दूसरा पहलू भी है। पर्यावरण संतुलन में उनकी खास भूमिका है। वे पारिस्थितिकी तंत्र को लाभ पहुंचाती हैं, जिसमें कार्बन और पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण शामिल है। जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले बदलावों पर गौर करते समय इन सभी बातों पर भी विचार करने की आवश्यकता पड़ेगी। वैज्ञानिकों का कहना है कि फंगस रोगजनकों के प्रभावों को कम करने के लिए उनके बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ प्रभावी चिकित्सीय उपचार विकसित करना भी जरूरी होगा। इस बीच, संक्रामक रोग विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि खेती में नए फफूंदनाशक रसायनों के व्यापक उपयोग से मनुष्यों और जानवरों में फंगल संक्रमण के उपचारों के खिलाफ प्रतिरोध बढ़ सकता है।

एक नए अध्ययन में कृषि में उपयोग किए जाने वाले फफूंदनाशक को मनुष्यों और जानवरों दोनों में फफूंद रोधी दवाओं के खिलाफ प्रतिरोध में वृद्धि से जोड़ा गया है। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के संक्रामक रोग विशेषज्ञ, डॉ. जॉर्ज थॉम्पसन और डॉ. एंजेल देसाई ने चेतावनी दी है कि हानिकारक फफूंद को मारने के लिए विकसित किए गए नए कृषि कीटनाशक लोगों और जानवरों में खतरनाक फंगल संक्रमण का इलाज करना कठिन बना सकते हैं।

फंगस प्रजातियां पहले से ही दुनियाभर में गंभीर स्वास्थ्य और आर्थिक समस्याओं का कारण बन रही हैं। एंटीफंगल एजेंट दवा और कृषि दोनों में आवश्यक रसायन हैं, लेकिन इन यौगिकों के अत्यधिक उपयोग से फफूंद में प्रतिरोध विकसित हो सकता है। इसका मतलब है कि मनुष्यों के लिए जीवन रक्षक उपचार काम करना बंद कर सकते हैं। दोनों विशेषज्ञों ने वैश्विक समुदाय से फफूंद और बैक्टीरिया जैसे रोगजनकों से लड़ने के लिए रासायनिक एजेंटों के विकास, परीक्षण और उपयोग के लिए 'समग्र स्वास्थ्य' दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया है। थॉम्पसन ने कहा, दवा प्रतिरोधी रोगजनक एजेंटों का विवेकपूर्ण उपयोग करने की भी आवश्यकता है। हमने सीखा है कि पशुधन के लिए एंटीबायोटिक दवाओं के व्यापक उपयोग के परिणामस्वरूप जीवाणुरोधी दवाओं के खिलाफ प्रतिरोध का तेजी से विकास हुआ है। पर्यावरण में फफूंदनाशक के उपयोग के बारे में भी ऐसी ही चिंताएं हैं। समग्र स्वास्थ्य दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि कैसे एक क्षेत्र में परिवर्तन से मानव गतिविधि, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। जलवायु और हवा के पैटर्न में परिवर्तन फफूंद जैसे रोगजनकों को फैलाने में मदद कर सकते हैं। साथ ही, यात्रियों, प्रवासी जानवरों और दूषित वस्तुओं की आवाजाही रोगजनकों को नए क्षेत्रों में ले जा सकती है। पिछले कुछ दशकों में मनुष्यों में गंभीर संक्रमण पैदा करने वाली फंगस के प्रकारों में तेजी से वृद्धि हुई है। मसलन, कैंडिडा ऑरिस एक ऐसी ही फंगस है। इसका इलाज भी कठिन होता है। इस फंगस में मनुष्यों के समान कोशिका तंत्र होता है। यही कारण है कि कैंडिडा ऑरिस जैसे फंगस को मारने वाली दवाओं के लोगों पर अक्सर दुष्प्रभाव होते हैं। नैदानिक देखभाल के दौरान चुनने के लिए बहुत कम एंटीफंगल दवाएं होने के कारण प्रतिरोध को रोकना सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि उपचारों के खिलाफ प्रतिरोध प्रत्येक रासायनिक एजेंट की मात्रा से अत्यधिक जुड़ा हुआ है। उन्होंने नए रोगाणुरोधी एजेंटों के खिलाफ प्रतिरोध के विकास को धीमा करने के लिए समन्वित वैश्विक विनियमन का आह्वान किया है। उन्होंने कहा, एक साझा रोगाणुरोधी अनुमोदन प्रक्रिया की आवश्यकता है जिसमें पर्यावरण और मानव तथा पशु स्वास्थ्य पर संभावित प्रभावों का गहन मूल्यांकन शामिल हो। प्रतिरोधी रोगजनकों के तेजी से प्रसार की जोखिम भरी संभावनाओं से बचने के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक स्तरों पर साझा प्रयास करने होंगे।More In

बड़े धार्मिक आयोजनों का वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरीबड़े धार्मिक आयोजनों का वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरी

शिक्षा की की रोशनी

व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शिक्षा और विकास एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक एक दशक बाद भारत में जनगणना होती है। जनगणना के आंकड़ों से साक्षरता दर का आकलन होता है। आजादी के बाद 1988 में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना के बाद साक्षरता के क्षेत्र में तेज गति से काम होने लगा। 2001 से 2011 के दशक में साक्षरता की दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुआ। इस दौरान अनेक प्रदेशों की साक्षरता दर में उछाल आया। इस दशक में साक्षरता के क्षेत्र में उत्तर भारत में उत्साह और उमंग के साथ सराहनीय काम हुआ, जहां साक्षरता प्रतिशत पचास फीसद से भी कम था।

उस दौरान केरल 93.91 फीसद साक्षरता दर के साथ देश में नंबर एक पर था तो मिजोरम 91.58 फीसद साक्षरता दर के साथ तीसरे स्थान पर था। अब आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण यानी पीएफएलएस रपट के मुताबकि, मिजोरम 98.20 फीसद साक्षरता दर हासिल कर देश का पहला पूर्ण साक्षर प्रदेश बन गया। संपूर्ण साक्षरता अभियान के बाद उत्तर साक्षरता अभियान और सतत शिक्षा कार्यक्रम संचालित होने लगे और धीरे-धीरे साक्षरता अभियानों ने कार्यक्रम का स्थान ले लिया। यहीं से साक्षरता कार्यक्रम बन गया और साक्षर होने की गति और उत्साह भी कम होने लगा। मिजोरम में फिर से साक्षर होने की कार्ययोजना तैयार कर उल्लास कार्यक्रम के तहत फिर वही प्रक्रिया अपनाई गई।

निरक्षर व्यक्ति को केवल साक्षर बनाना ही मकसद नहीं होता, नवसाक्षरों का शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक विकास करना होता है। यह बात मिजोरम ने समझी। प्रदेश के आर्थिक स्तर को सुधारने, भविष्य उन्नयन और नवसाक्षरों को व्यावसायिक कौशल देने के प्रयास भी किए। संपूर्ण साक्षरता अभियान की तरह सरकार ने जनता के सहयोग से निरक्षरता उन्मूलन के लिए स्वयंसेवक तैयार किए, उन्हें प्रशिक्षण दिया, शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवाई, स्वयंसेवकों के साथ सरकार के प्रतिनिधि और अफसर नियमित संपर्क में बने रहे। प्रदेश भर में साक्षरता के पक्ष में वातावरण बनाया गया, वातावरण निर्माण के तहत घर-घर सर्वेक्षण किया गया, लोगों को आमंत्रित किया गया, असाक्षरों का सम्मान किया गया। उनके साथ निरंतर संपर्क रखा गया। इस कार्यक्रम में असाक्षर की पहचान, मूल्यांकन और निरीक्षण का काम प्रतिदिन होता रहा। क्लस्टर बनाकर क्षेत्र आधारित कार्यक्रम तैयार किए गए। छोटे-छोटे समूह बनाए गए, जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधि, शिक्षाविद और समाज के व्यक्ति, जो साथ मिलकर असाक्षर व्यक्ति के घर जाते, उनसे आग्रह करते।

समुदाय के सहयोग से संचालित साक्षरता अभियान के अंतर्गत स्थानीय भाषा और गहरी सांस्कृतिक सहायता से लोगों ने सिर्फ पढ़ना ही नहीं सीखा, बल्कि ऐसी संस्कृति का निर्माण किया जो ज्ञान को महत्त्व देने लगे। शिक्षित नागरिक से ही एक समग्र और विकसित राष्ट्र और समाज की परिकल्पना की जा सकती हैं।यह अच्छी और सुखद खबर है। मिजोरम की साक्षरता यात्रा देश के अन्य प्रदेशों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। 2011 में 91.58 फीसद लोग साक्षर थे। कहने को यह भी कहा जा सकता है कि केवल आठ फीसद लोगों को ही साक्षर करने का काम था। दिखने में और सुनने में आठ फीसद का लक्ष्य तय करना कोई बड़ी बात न हो, पर यही वह समूह था, जिसको साक्षर करना मुश्किल काम था। शिक्षा से दूर रहे इस समूह की मानसिकता बदलना मुश्किल ही नहीं कठिन काम होता है, जिसे मिजोरम ने अपनी इच्छा शक्ति से कर दिखाया।

नब्बे के दशक में केरल संपूर्ण साक्षर घोषित किया गया था। केरल से पहले एर्नाकुलम जिले को संपूर्ण साक्षर घोषित किया गया था। वहां भी संपूर्ण साक्षरता अभियान को जन आंदोलन बनाया गया था। केरल सरकार ने भारत ज्ञान विज्ञान समिति के साथ मिलकर यह काम किया। वहां भी उस समय केवल नौ फीसद लोगों को ही साक्षर करना था, लेकिन वे भी 'हार्डकोर ग्रुप' यानी शिक्षा से दूर रहे समूह की श्रेणी में थे। केरल की साक्षरता यात्रा घर, गांव और जिला स्तर तक चली। केरल में प्रत्येक सरकारी अधिकारी जन सहयोग से अपनी जिम्मेदारी समझकर निरक्षरता उन्मूलन के पवित्र काम में लगा था। केरल की तर्ज पर पूरे देश में साक्षरता अभियान संचालित हुआ। उसी तकनीक को मिजोरम सरकार ने भी जन सहयोग से अपनाया और संपूर्ण साक्षर प्रदेश बन गया।

दरअसल, घने बांस के जंगलों और पहाड़ियों, गहरी घाटियों के कारण 'हार्डकोर समूह' की पहचान करना भी चुनौतीपूर्ण था। मिजोरम सरकार के लिए अब चुनौती इस बात की है कि ये लोग अभ्यास छूटने के बाद फिर से असाक्षर श्रेणी में न आ जाएं। प्राथमिक शिक्षा में शत-प्रतिशत नामांकन हो और स्कूली पढ़ाई बीच में न छूटे। नवसाक्षरों की साक्षरता सतत बनी रहे, इसलिए व्यावसायिक कौशल के साथ जोड़ना सरकार की प्राथमिकता में होना चाहिए। उनको रोजगार उपलब्ध कराने की जरूरत होगी, जिससे उनकी साक्षरता कायम रहेगी। ऐसी इच्छाशक्ति यह बताती है कि जब समुदाय और सरकार मिलकर काम करते हैं तो असाधारण परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। स्वतंत्र रूप से पूर्ण राज्य बनने के बाद इतने कम समय में पूर्ण साक्षर होना राज्य के लिए गर्व की बात है। अब निरंतरता में शिक्षा की मुहिम चलाए जाने की आवश्यकता है, ताकि मौजूदा उपलब्धि की रोशनी मिजो समाज को रोशन करे।

आधुनिक युग में रिश्तों की डोर ,हो रही दागदार

डॉ.नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

पिछले दिन इंदौर के राजा रघुवंशी का हनीमून ट्रिप पर जिस तरह बेदर्दी से कत्ल किया गया, वह एक नवविवाहित पत्नी द्वारा अबतक का किया गया जघन्य अपराध था। एक महिला जिसकी दस दिन पहले शादी हुई, वह ऐसे घृणित अपराध को अंजाम दे सकती है, ये सभ्य समाज में समझ से परे है। दरअसल इसमें जिसका सबसे बड़ा कसूर है ,वह सोनम के माँ- बाप हैं। सोनम के माँ बाप को पता था कि सोनम उसके पिता के कार्यालय में काम करने वाले नौकर से प्रेम करती है. इसके बावजूद उन लोगों ने जबरदस्ती सोनम का विवाह राजा रघुवंशी से इसलिए किया कि वह उनके जाति और समाज का था।

आज भी समाज में अपने बिरादरी में शादी करने की नाकाम कोशिश जारी है।आज जब लड़कियाँ जिस तरह हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं, उससे उनके सोच और जीवन शैली में भी परिवर्तन हो रहा है।अब हम पुराने जमाने की तरह लड़कियों को खूंटे से नही बांध सकते । दरअसल प्रेम हर जमाने में होता रहा है। लड़को और लड़कियों में युवा अवस्था में आकर्षण होना स्वाभाविक लक्षण हैं। पहले भी प्यार होता था लेकिन अधिकांश मामलों में जब लड़की की शादी एक जगह हो जाती थी तो वह पुराने प्यार को भुलाकर अपनी नई जिंदगी की शुरूआत अपनी किस्मत को कोसते हुए कर लेती थी। शायद ही कोई लड़का या लड़का ये कहे कि उनके दिल में किसी के लिए चाहत नहीं होगी। स्त्री पुरूष की रचना प्रकृति ने इसीलिए की है कि उनके बीच आकर्षण बना रहे और प्रजनन की क्रिया सदैव चलती रहे।

आज जब राजा रघुवंशी का कत्ल हुआ तो लोग उसके पीछे की वजहों को नहीं जानना चाहते। कोई भी लड़की ऐसा कदम क्यूँ उठाने पर मजबूर हुई इसके पीछे के कारणों का विश्लेषण जरूर होना चाहिए। जब सोनम के माता पिता ने सोनम को अपनी मर्जी से शादी नहीं करने दी तो सोनम ने मजबूर होकर ये कदम उठाया। सोनम की शादी तो जरूर हो गई लेकिन उसने अपने पहले प्यार के लिए अपनी पवित्रता बचा कर रखी। वह राजा रघुवंशी के साथ हमबिस्तर नहीं हुई। उसने मन्नत का बहाना बनाकर राजा रघुवंशी से अपने आप से दूर रखा। सोनम ने जिससे प्यार किया, उसके प्रति पूरी तरह समर्पित रही। दरअसल इसमें दोषी सोनम के माँ - बाप है क्योंकि सब जानते हुए भी उन लोगों ने किसी लड़के की जिंदगी की बलि क्यूँ दी।

आज के आधुनिक युग में रिश्तों के डोर आसानी से टूटने लगे हैं। सामाजिक मर्यादा नाम की कोई चीज नही रह गई है। हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों को खोते जा रहे हैं। पहले भी कुछ छिट पुट घटनाएं सामने आती थीं लेकिन अब इसमें बहुत ज्यादा बढ़ोतरी होते जा रही है। इसका सबसे बड़ा कारण संयुक्त परिवार का टूटना और एकल परिवार का उदय होना है ।एकल परिवारों में भी मोबाईल के कारण व्यक्ति नितांत अकेला होता जा रहा है। ये समाज के लिए चिंता का विषय है। बहुत से रिश्तों के मायने ही खत्म होते जा रहे हैं। पहले हरेक परिवार में तीन चार बच्चे जरूर होते थे

और उनसे ही आगे के रिश्तों का जन्म होता था। अगर परिवार में एक लड़का या एक लड़की हो तो बहुत से रिश्तों का नाम ही मिट जाता है। मामा, बुआ, मौसी, चाचा , नाना, दादा, दादी , नानी आदि रिश्ते पूरी तरह खत्म हो जाते हैं।

पहले तीन चार बहने या भाई होते थे तो बहुत सी समस्याओं का समाधान आपस में ही बातचीत से निपट जाता था। आज बच्चों में एक दूसरे का दुखड़ा सुनने वाला कोई अपना नहीं है। समाज एक उथल - पुथल के दौर से गुजर रहा है। समाज में एक नई चेतना जागृत करने की आवश्यकता है। आज जब हम लड़कियों को शिक्षित कर रहे हैं तो उनको भी अपने हिसाब से जीवनसाथी चुनने की छूट होनी चाहिए। अब हम जात पात का बंधन किसी पर नही थोप सकते हैं। केवल होना ये चाहिए कि अपने बच्चों को इतना जागरूक बना दें कि वे अपने बारे में बेहतर फैसला ले सकें। आज सारी दुनिया एक ग्लोबल मार्केट में तब्दील हो गई है जिससे कोई अछूता नही रह गया है। अब किसी देश में कुछ होता है तो उससे दूसरा देश अछूता नही रह सकता । अब युद्ध की स्थिति में सिर्फ दो देश युद्ध नही करते बल्कि उनके साथ और भी देश बेवजह प्रभावित हो जाते हैं। अब हमें व्यापक स्तर पर सभी चीजों को देखने की आवश्यकता है।

बेहतर ये हो कि लड़का हो या लड़की, शादी के मामले में किसी तरह का दबाब अभिभावक के स्तर पर नही होना चाहिए। अगर सोनम के माँ बाप सोनम पर दबाब नही डालते तो राजा रघुवंशी की जान कदापि नहीं जाती। बेवजह एक लड़की को गुनाह करने पर मजबूर होना पड़ा। छोटी सी भूल ने एक व्यक्ति की जान ले ली और उसके कत्ल में पाँच गुनाहगार पैदा कर दिए। वास्तव में छह जिंदगी तबाह हो गई। समाज को ये मानसिकता बदलनी होगी कि लड़की घर की इज्ज़त होती है। इस भ्रम से समाज को निकलना ही होगा वरना इस तरह के जुर्म समाज में होते रहेंगे।

झारखंड के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता ददई दुबे का निधन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। वरिष्ठ कांग्रेस नेता, पूर्व सांसद और इंटक नेता चंद्रशेखर दुबे उर्फ ददई दुबे का दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में निधन हो गया। वे लंबे समय से बीमार चल रहे थे और इलाज के क्रम में उन्होंने राजधानी में अंतिम सांस ली। उनके निधन की खबर से झारखंड की सियासत और श्रमिक संगठनों में शोक की लहर है। चंद्रशेखर दुबे, जिन्हें ददई दुबे के नाम से जाना जाता था उनका का जन्म 2 जनवरी 1946 को हुआ था। वे बिश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र से कई बार विधायक रहे। झारखंड सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य कर चुके थे। वर्ष 2013 में हेमंत सोरेन सरकार में उन्हें राज्य के ग्रामीण विकास मंत्री की जिम्मेदारी दी गई थी।

बचपन में दिल का दर्द: क्या हमारी जीवनशैली मासूम धड़कनों की दुश्मन बन गई है?

भारत में बच्चों में हार्ट अटैक की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। इसका संबंध बच्चों की बदलती जीवनशैली, खान-पान, मानसिक तनाव और स्क्रीन टाइम से है। स्कूलों में नियमित हेल्थ जांच, योग, पोषण शिक्षा और अभिभावकों की जागरूकता से ही इस खतरे को रोका जा सकता है। यह केवल स्वास्थ्य नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय चेतावनी है।

✍ प्रियंका सौरभ

जब भी हम ₹हार्ट अटैक₹ शब्द सुनते हैं, हमारे ज़ेहन में पचास-पैंसठ साल का कोई अधेड़ उम्र का व्यक्ति सामने आता है—भागदौड़ भरी ज़िंदगी में उलझा, तनाव और थकान से लदा हुआ। पर आज हकीकत इससे कहीं अधिक डरावनी और चौंकाने वाली है। आज दिल के दौरे सिर्फ बड़ों का ही नहीं, बल्कि मासूम बच्चों का भी पीछा कर रहे हैं। देश के कई हिस्सों से ऐसी खबरें सामने आ रही हैं, जहां स्कूल जाते बच्चे अचानक गिर जाते हैं और डॉक्टर उसे "कार्डियक अरेस्ट" या "सडन हार्ट फेल्योर" बता देते हैं। क्या यह केवल संयोग है? या फिर हमारी जीवनशैली ने नन्हे दिलों पर हमला बोल दिया है?

पिछले कुछ महीनों में देशभर से कई ऐसी घटनाएं सामने आईं हैं, जो इस खतरे की गंभीरता की पुष्टि करती हैं। ताजा मामला मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले का है, जहां आठ साल की मासूम बच्ची स्कूल गेट पर पहुंचते ही गिर पड़ी और उसकी मौत हो गई। इससे पहले गुजरात, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र जैसे राज्यों से भी स्कूली बच्चों की हार्ट अटैक से हुई मौत की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। इंडियन मेडिकल जर्नल्स के अनुसार, 2021 और 2022 के बीच 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों में अचानक कार्डियक अरेस्ट से मौत के मामलों में 35% की वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2022 में अकेले भारत में 32,457 युवाओं की मौत हृदयाघात से हुई। इनमें बड़ी संख्या 10 से 18 वर्ष के बीच के किशोरों की थी।

सवाल यह है कि ऐसा हो क्यों रहा है? क्या यह सिर्फ अनुवांशिकता का मामला है? क्या बच्चों में जन्मजात हृदय रोग अचानक सक्रिय हो रहे हैं? या फिर इसके पीछे हमारी बदलती जीवनशैली, खान-पान, स्क्रीन टाइम, मोटापा, मानसिक तनाव और शारीरिक निष्क्रियता का कोई बड़ा योगदान है?

विशेषज्ञ कहते हैं कि इसका कारण ₹मल्टी फैक्टोरियल₹ है—अर्थात यह कई कारकों का मिश्रण है। आज के बच्चे ब्रेड-बर्गर, पिज़्ज़ा, कोल्ड ड्रिंक और पैकेज्ड स्नैक्स पर निर्भर हैं। पौष्टिक आहार, जैसे हरी सब्जियाँ, दालें, फल, दूध अब उनके भोजन का हिस्सा नहीं रह गया है। पहले बच्चे गली-मोहल्ले में दौड़ते-खेलते थे। अब मोबाइल और गेमिंग कंसोल्स ने उनका बचपन छीन लिया है। खेल के मैदानों की जगह टैबलेट ने ले ली है। स्कूलों में अत्यधिक होमवर्क, कोचिंग की दौड़, माता-पिता की अपेक्षाएं और हर क्षेत्र में 'बेस्ट' बनने का दबाव बच्चों में मानसिक तनाव पैदा कर रहा है। यह तनाव शरीर में कोर्टिसोल और अन्य हॉर्मोन को असंतुलित कर देता है, जिससे हृदय पर असर पड़ता है।

देर रात तक मोबाइल चलाना, रील्स देखना और ऑनलाइन गेम खेलना बच्चों की नींद को प्रभावित करता है। नींद की कमी सीधे दिल की सेहत से जुड़ी है। बाल हृदय रोग विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों में हार्ट अटैक आमतौर पर ₹कॉन्जेनिटल हार्ट डिजीज₹, ₹कार्डियोमायोपैथी₹, ₹इलेक्ट्रिकल डिसऑर्डर्स₹ या ₹मायोकार्डिटिस₹ के कारण होता है। लेकिन इनका समय पर पता न चलने के कारण

बच्चे अचानक मौत का शिकार हो जाते हैं। दुर्भाग्यवश, हमारे देश में बाल स्वास्थ्य की जांच प्रणाली बहुत कमजोर है। अधिकतर स्कूलों में नियमित हेल्थ चेकअप नहीं होते, और माता-पिता भी बच्चों के थकान या सांस फूलने जैसे लक्षणों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

इस संकट से निपटने के लिए हमें एक बहुआयामी रणनीति अपनानी होगी। सरकार को सभी निजी और सरकारी स्कूलों में हर 6 महीने में हृदय जांच, ईसीजी और सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण अनिवार्य करना चाहिए। स्कूलों में 'फिट इंडिया' जैसे अभियानों को गंभीरता से लागू किया जाए। बच्चों को योग, प्राणायाम, ध्यान और नियमित शारीरिक व्यायाम के लिए प्रेरित किया जाए। माता-पिता को अपने बच्चों के खान-पान, नींद और स्क्रीन टाइम पर सतर्क निगरानी रखनी होगी। बच्चे की थकान, चिड़चिड़ापन या किसी भी असामान्य शारीरिक लक्षण को गंभीरता से लें।

विद्यालयी पाठ्यक्रम में 'पोषण शिक्षा' को शामिल किया जाए ताकि बच्चे कम उम्र से ही हेल्दी फूड और शरीर के महत्व को समझ सकें। टेलीविजन और डिजिटल मीडिया को केवल उत्पाद बेचने के बजाय समाज को स्वस्थ जीवनशैली के लिए शिक्षित करने की भूमिका निभानी चाहिए। यह विडंबना ही है कि जब भारत "विकसित राष्ट्र" बनने की दौड़ में है, तब उसका भविष्य यानी बच्चे हृदय रोगों से जूझ रहे हैं। नीति आयोग, स्वास्थ्य मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय को मिलकर एक समन्वित नीति बनानी चाहिए, ताकि बच्चों की स्क्रीनिंग, हेल्थ एजुकेशन और इमरजेंसी सुविधाएं हर स्कूल में सुनिश्चित हो सकें। यह केवल स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और मानव संसाधन विकास का मामला है।

बचपन धड़कनों का त्योहार होता है, न कि जीवन का अंतिम पड़ाव। जब कोई बच्चा दिल के दौरे से दम तोड़ता है, तो केवल एक जीवन नहीं जाता—एक भविष्य, एक सपना और एक परिवार उजड़ जाता है। हमें यह स्वीकारना होगा कि बच्चों का दिल अब पहले जैसा मजबूत नहीं रहा—क्योंकि हमने उसे कमजोर बना दिया है। अब समय आ गया है कि हम सिर्फ 'हार्ट डे' पर भाषण न दें, बल्कि हर दिन बच्चों के दिल की चिंता करें। नहीं तो वो दिन दूर नहीं जब स्कूल का बस्ता नहीं, स्ट्रेचर उठाना पड़ेगा।

बिहार चुनाव से पहले घोषणाओं का लगा अंबार !

हाल ही में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने महिला आरक्षण को लेकर एक बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने यह घोषणा की है कि बिहार राज्य की मूल निवासी महिलाओं को अब राज्य की सभी सरकारी सेवाओं, संवर्गों और सभी स्तरों के पदों पर सीधी नियुक्ति में 35% आरक्षण दिया जाएगा तथा यह आरक्षण सभी प्रकार की सरकारी नौकरियों पर लागू होगा। पाठकों को बताता चलूं कि

बिहार में 60% जातीय-आर्थिक आरक्षण पहले से ही लागू है। 35% मूल बिहारी महिलाओं के इस आरक्षण के बाद यह बढ़ कर 74% पर पहुंच जाएगा, जिसका सीधा असर अनारक्षित वर्ग पर पड़ेगा जिसके लिए बस 14% सीटें ही बचेंगी। वर्तमान में राज्य में 18% अतिपिछड़ा, 12% अन्य पिछड़ा, 16% एससी, एक प्रतिशत एसटी और ओबीसी महिलाओं का 3% आरक्षण लागू है। इसमें आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग का 10% भी है। बहरहाल,

पाठकों को बताता चलूं कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में इसका फैसला(आरक्षण देने का) लिया गया है। यहां यह उल्लेखनीय है कि देश में सभी राज्य सरकारें महिलाओं को कुल पदों में अपने-अपने हिसाब से आरक्षण देती रहीं हैं। जैसे कि उत्तराखंड में सरकारी भर्तियों में महिलाओं के लिए 30 फीसदी आरक्षण, मध्य प्रदेश सरकार ने हाल ही में महिलाओं के लिए सरकारी नौकरियों में 35 फीसदी आरक्षण, यूपी में राज्य सरकार की ओर से 20 फीसदी आरक्षण, केरल-कर्नाटक, तेलंगाना-पंजाब में 33 फीसदी, और त्रिपुरा में 33 फीसदी पद नौकरियों में आरक्षित किए गए हैं। संशोधन संविधान के अनुच्छेद 309 के तहत राजस्थान की भजनलाल सरकार ने कुछ समय पहले राजस्थान पुलिस अधीनस्थ सेवा नियम-1989 में संशोधन करते हुए सीधी भर्ती में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण देने का फैसला लिया था। इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भाजपा सरकार के 100 दिन पूरे होने पर महिलाओं को शिक्षक भर्ती में 50 फीसदी आरक्षण देने का ऐलान किया था।

हालांकि , विधि विभाग ने इस प्रस्ताव पर आपत्तियां जताई और फाइल लौटा दी।इसी प्रकार से महिला आरक्षण बिल के पास होने के बाद संसद और विधानसभाओं(विधायिका) की 33 फीसदी सीटों पर महिला आरक्षण की बात कही गई है,जो साल 2023 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली सरकार के कार्यकाल में पास हुआ था। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि बिहार में चार माह के भीतर विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, ऐसे में यह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का एक प्रकार से महिलाओं पर लगाया गया बड़ा दांव ही कहा जा सकता है, ताकि आने वाले विधानसभा चुनावों में उनकी पार्टी जीत हासिल कर सके। गौरतलब है कि साल 2005 में महिला सशक्तिकरण की बात करके ही नीतीश कुमार सत्ता में आए थे। बहरहाल, राजनीतिक दल और उनके नेता यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि आज के समय में महिला वोटरों की चुनावों में बहुत बड़ी भूमिका होती है और महिला वोटर नायिका बनकर उभरतीं हैं। स्वयं नीतीश कुमार भी इस बात से अच्छी तरह से वाकिफ हैं कि आज के समय में बड़ी संख्या में महिला मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने लगी हैं। आंकड़े बताते हैं कि बिहार में साल 2020 के विधानसभा चुनाव में तो पुरुषों के मुकाबले 5.24 फीसदी अधिक महिलाओं ने वोट डाले थे। जानकारी के अनुसार वर्ष 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में 59.69 फीसदी महिलाओं ने वोट दिए थे और 26 महिलाएं जीतकर आगे आईं थीं। हालांकि, वर्ष 2015 में 28 महिलाएं जीतकर विधानसभा पहुंचीं थीं। नीतीश कुमार जानते हैं कि महिलाओं के वोट हासिल कर वे सत्ता की चाबी तक आसानी से पहुंच सकते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि चुनाव से पहले नीतीश कुमार, ने मतदाताओं को लुभाने के लिए लाभकारी योजनाओं की राशि भी बढ़ाई। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सरकार ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि बढ़ाकर 60 लाख परिवारों को फायदा पहुंचाया है। इतना ही नहीं, नीतीश कैबिनेट ने सीता मंदिर के लिए ₹883 करोड़ की बड़ी राशि देने का ऐलान किया।इसी प्रकार से बिहार में बुजुर्गों और दिव्यांगजनों को मिलने वाली पेंशन राशि 400 रुपये से बढ़ाकर 1100 रुपये प्रतिमाह कर दी गई, जिसे जुलाई से मिलने की बात कही गई है। और तो और नीतीश ने राज्य की युवा आबादी को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए बिहार युवा आयोग की भी घोषणा की है। पाठकों को बताता चलूं कि युवा आयोग इस बात की निगरानी करेगा और सुनिश्चित करेगा कि राज्य के युवाओं को राज्य के भीतर निजी क्षेत्र के रोजगार में प्राथमिकता दी जाए। चुनावों से पहले उच्च जाति आयोग, अनुसूचित जाति (एससी) आयोग, महादलित आयोग और मछुआरा आयोग का गठन करने की बात भी मुख्यमंत्री ने कुछ समय पहले कहीं थी। कहना ग़लत नहीं होगा कि नीतीश कुमार इस प्रकार की घोषणाओं से सामाजिक संतुलन और सियासी समीकरणों को साध रहे हैं।कुल मिलाकर, सच तो यह है कि बिहार चुनाव से पहले जनता दल (यूनाइटेड) ने 'पच्चीस से तीस, फिर से नीतीश' का नारा दे दिया है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि बिहार देश के उन शुरुआती राज्यों में एक है, जिसने पंचायत और स्थानीय निकायों में आधी आबादी के लिए पचास फीसदी सीटें आरक्षित की हैं और बिहार सरकार के इस कदम ने यहां की स्त्रियों में जबर्दस्त राजनीतिक जागरूकता पैदा की है। नीतीश कुमार ही नहीं, बिहार में अब हरेक राजनीतिक दल विशेषकर महिला वर्ग को व युवाओं को आकर्षित करने में जुट गया है। गौरतलब है कि कांग्रेस महागठबंधन ने बिहार राज्य में इस वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव के पूर्व राज्य महिलाओं को सशक्त करने के लिये 'माई बहिन मान योजना' कैंपेन लॉन्च किया है। इस योजना के तहत महिलाओं को प्रतिमाह 2,500 रुपये की सम्मान राशि सीधे उनके खाते में भेजी जाएगी। इधर, राजद नेता तेजस्वी यादव बेरोजगारी और डोमिसाइल के मुद्दे को जोर-शोर से उठा रहे हैं। ऐसे में, नीतीश सरकार के महिला आरक्षण के इस नीतिगत दांव व अन्य दावों को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। वैसे भी महिला आरक्षण बिहार जैसे राज्य में एक बड़े सामाजिक बदलाव का वाहक बन सकता है। वैसे देखा जाए तो नीतीश कुमार का महिलाओं को 35 फीसदी आरक्षण का यह फैसला स्वागत योग्य ही कहा जा सकता है, क्यों कि इससे महिलाओं को आगे बढ़ने के सुअवसर प्राप्त होंगे और वे स्वावलंबी, सशक्त बन सकेंगी। समाज से लैंगिक खाई भी कम हो सकेगी, क्यों कि बिहार जैसे राज्य में आज भी बहुत कम महिलाएं ही सरकारी नौकरियों में हैं। चुनाव अपनी जगह ठीक हैं, लेकिन यदि चुनावों के बहाने से ही समाज में कुछ अच्छा हो रहा है,तो इससे काबिले-तारीफ और बात भला क्या हो सकती है। किसी समाज में यदि कोई महिला आज आगे आती है तो इससे देश व समाज की तरक्की ही होती है। बहुत अच्छा हो यदि अन्य राज्य सरकारें भी महिलाओं के लिए ऐसे विशेष प्रबंध करने के लिए आगे आएं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

कनेक्टिविटी के इस युग में अकेलापन बन रहा महामारी

पुनीत उपाध्याय

कनेक्टिविटी के इस युग में अकेलापन एक महामारी के रूप में पैर पसार रहा है। हालात इस हद तक पहुंच चुके हैं कि दुनिया का हर छठा व्यक्ति अकेलेपन से जूझ रहा है। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन के सामाजिक जुड़ाव आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि दुनिया भर में 6 में से 1 व्यक्ति अकेलेपन का शिकार है। अकेलेपन से हर घंटे अनुमानित 100 मौतें होती हैं, यानि सालाना 8 लाख 71 हजार से ज़्यादा मौतों का कारण अकेलापन है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मज़बूत सामाजिक जुड़ाव, बेहतर स्वास्थ्य और लंबी ज़िंदगी की ओर ले जा सकते हैं। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक डॉ टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस के अनुसार इस युग में जब जुड़ने की संभावनाएं अनंत हैं अधिक से अधिक लोग खुद को अलग थलग और अकेला पा रहे हैं।

युवा और निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोग सबसे ज्यादा प्रभावित

रिपोर्ट के अनुसार अकेलापन सभी उम्र के लोगों को प्रभावित करता है, खासकर युवाओं और निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रहने वाले लोगों को। 13-29 वर्ष की आयु के 17.21 प्रतिशत व्यक्तियों ने खुद को अकेलापन से प्रभावित बताया। इसमें किशोरों में सबसे अधिक दर थी। कम आय वाले देशों में लगभग 24 फीसदी लोगों ने बताया कि वे अकेलापन के शिकार हैं। उच्च आय वाले देशों में लगभग 11 प्रतिशत की दर पाई गई है। डब्ल्यूएचओ के सह अध्यक्ष चिडो मपेम्बा के अनुसार डिजिटल रूप से जुड़ी दुनिया में भी कई युवा लोग अकेलापन महसूस करते हैं।

जैसे.जैसे तकनीक हमारे जीवन को नया आकार दे रही है, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह मानवीय संबंधों को मजबूत करे न कि कमजोर करे। रिपोर्ट से पता चलता है कि खराब स्वास्थ्य, कम आय और शिक्षा, अकेले रहना, अपर्याप्त सामुदायिक बुनियादी ढांचा और सार्वजनिक नीतियां और डिजिटल प्रौद्योगिकियां अकेलेपन के प्रमुख कारणों में शामिल हैं। रिपोर्ट युवा लोगों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर अत्यधिक स्क्रीन समय या नकारात्मक ऑनलाइन बातचीत के प्रभावों के बारे में सतर्कता की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

अकेले रहने वाले लोगों में अवसाद होने की संभावना दोगुनी

सामाजिक संबंध जीवन भर स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं। यह गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के जोखिम को कम कर सकता है, मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे सकता है और समय से पहले मृत्यु को रोक सकता है। यह सामाजिक ताने.बाने को भी मजबूत कर सकता है जिससे समुदायों को स्वस्थ, सुरक्षित और अधिक समृद्ध बनाने में योगदान मिलता है। इसके विपरीत अकेलापन और सामाजिक अलगाव स्ट्रोक, हृदय रोग, मधुमेह, संज्ञानात्मक गिरावट और समय से पहले मृत्यु के जोखिम को बढ़ाता है। यह मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है, अकेले रहने वाले लोगों में अवसाद होने की संभावना दोगुनी होती है। अकेलेपन से चिंता और खुद को नुकसान पहुंचाने या आत्महत्या के विचार भी आ सकते हैं। इसका प्रभाव सीखने और रोजगार तक फैला हुआ है। अकेलेपन को महसूस करने वाले किशोरों में कम ग्रेड या योग्यता प्राप्त करने की संभावना 22 प्रतिशत अधिक थी। अकेले रहने वाले वयस्कों को रोजगार पाना या बनाए रखना कठिन हो सकता है और समय के साथ उनकी कमाई कम हो सकती है।

सामुदायिक स्तर पर अकेलापन सामाजिक सामंजस्य को कमजोर करता है और उत्पादकता और स्वास्थ्य देखभाल में अरबों डॉलर खर्च करता है। मजबूत सामाजिक बंधन वाले समुदाय आपदाओं के जवाब में भी सुरक्षित, स्वस्थ और अधिक लचीले होते हैं। सामाजिक संपर्क पर डब्ल्यूएचओ आयोग की रिपोर्ट में वैश्विक कार्रवाई के लिए एक रोडमैप की रूपरेखा दी गई है जिसमें पांच प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया- नीति, अनुसंधान, हस्तक्षेप, बेहतर माप (एक वैश्विक सामाजिक संपर्क सूचकांक विकसित करना शामिल है), और सार्वजनिक जुड़ाव। सामाजिक कनेक्शन पर डब्ल्यूएचओ आयोग के सह अध्यक्ष और संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व सर्जन जनरल डॉ. विवेक मूर्ति ने कहा कि इस रिपोर्ट में हम अपने समय की एक परिभाषित चुनौती के रूप में अकेलेपन और अलगाव पर से पर्दा हटाते हैं। हमारा आयोग इस बात के लिए एक रोड मैप तैयार करता है कि हम कैसे अधिक जुड़े हुए जीवन का निर्माण कर सकते हैं और स्वास्थ्य, शैक्षिक और आर्थिक परिणामों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ सकता है।

मॉनसून मूड स्विंग' - उदासी भरे दिन जल्द ही ढलेंगे

बीमारी नहीं, अस्थाई दौर है सावन का अवसाद

हरीश शिवनानी

सावन की बरखा बहार का अपना ही उमंग भरा आनंद है। यह समय है जब प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। समूची प्रकृति नहाई हुई -सी तरो-ताज़ा लगती है। इसीलिए वसंत और पावस ऋतुओं को सदा मनोहारी माना गया है। सावन यानी मॉनसून का एक ओर जहाँ यह पक्ष है, वहीं इसका दूसरा पहलू थोड़ा निराशा भरा है। कई लोगों के लिए मॉनसून उदासी भरे दिन भी हो सकते हैं। अगर आप उन लोगों में से हैं जो वर्षा ऋतु में उदास और अवसाद महसूस करते हैं, तो यह सिर्फ़ आपका भ्रम नहीं है। मौसम में परिवर्तन के कारण 'मॉनसून मूड स्विंग' हो सकता है, खासकर उन लोगों में जो डिप्रेशन और एंग्जायटी जैसी समस्याओं से जूझते रहे हैं। मॉनसून मूड स्विंग्स का मतलब बारिश के मौसम में मूड में होने वाले उतार-चढ़ाव से है। कुछ लोगों के लिए बारिश का मौसम आशिकाना और उल्लसित करने वाला हो सकता है तो दूसरी ओर कुछ लोग उदास, चिड़चिड़े, या ऊर्जाहीन महसूस कर सकते हैं। ऐसे लोगों को मूड मानसून आते ही स्विंग होने लगता है। कभी वो बहुत खुश रहते हैं, तो कई बार अचानक परेशान होने लगते हैं। स्ट्रेस और एंग्जाइटी के चलते वे दिन भर परेशान, उदास, खिन्न-से रहते हैं। ये केवल मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक अवस्थाएँ हैं, कोई बीमारी नहीं। इस बदलाव को 'सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर' भी कहा जाता है।

'जर्नल ऑफ़ साइकियाट्रिक रिसर्च' में प्रकाशित एक शोध पत्र के अनुसार जब मौसम बादल छाने या बरसात का होता है तो कुछ लोगों में, विशेषकर महिलाओं में अवसाद की संभावना अधिक होती है। दरअसल सूर्य की रोशनी हमें ऊर्जा देती है और हमें उठने और अपनी दैनिक गतिविधियों को करने के लिए सक्रिय करती है। आम तौर पर लंबे समय तक बारिश होने पर 'सर्केडियन रिदम' गड़बड़ा जाती है। जिससे मूड स्विंग होने लगता है।

सर्केडियन लय शरीर की जैविक घड़ी है, जो 24 घंटे के चक्र में हमारे शारीरिक, मानसिक और व्यावहारिक प्रक्रियाओं को समयबद्ध तरीके से नियंत्रित करती है और सोने-जागने का चक्र, हार्मोन प्रोडक्ट, शरीर के तापमान के साथ भूख और पाचन की प्रक्रिया और मानसिक सतर्कता व एकाग्रता का स्तर को संचालित करती है। यह लय मुख्य रूप से सूरज की रोशनी और अंधेरे जैसे पर्यावरणीय संकेतों से प्रभावित होती है।

मॉनसून मूड स्विंग के लक्षणों को पहचानने के कुछ संकेत होते हैं। एक संकेत यह है कि प्रभावित लोग

मॉनसून में हर वक्त उदास बने रहते हैं। रोजमर्रा के कामकाज करने में चिड़चिड़ापन महसूस करते हैं और ज्यादा समय बिस्तर पर पड़े रहना पसंद करते हैं और सोने और उठने में उन्हें परेशानी तो होती ही है। उन्हें बार-बार खाने की तलब भी होती रहती है।

मॉनसून मूड स्विंग की वज़ह

कम धूप और विटामिन डी की कमीः मॉनसून में बादल छाए रहने से सूरज की रोशनी कम मिलती है, जिससे मस्तिष्क में मेलाटोनिन (नींद का हार्मोन) बढ़ता है और शरीर में विटामिन डी और सेरोटोनिन (खुशी का हार्मोन) का स्तर कम हो सकता है।

चारदीवारी में रहने की मजबूरीः लगातार बारिश के कारण लोग बाहर कम निकल पाते हैं, जिससे उनकी सामाजिक गतिविधियाँ और शारीरिक गतिविधियां कम हो जाती हैं। बारिश और नमी के चलते बॉडी ज़्यादा एक्टिव भी नहीं होती है। इसके कारण सुस्ती और कमजोरी, उदासी और अवसाद-सा महसूस होता रहता है।

नमी और गंधः उच्च आर्द्रता, गीले कपड़े, और फफूंदी की गंध से चिड़चिड़ापन बढ़ सकता है।

हॉर्मोनल बदलावः मौसम के बदलाव से मस्तिष्क में रासायनिक संतुलन प्रभावित हो सकता है, जिससे मूड स्विंग्स होते हैं।

आख़िर इस दर्द की दवा क्या है ?

पारिवारिक-सामाजिक मेलजोल बनाए रखें- कई लोगों के मूड स्विंग्स इसलिए होते हैं, क्योंकि उनके सोशल कनेक्शन कम हो जाते हैं। बरसात की वजह से लोग अपने दोस्तों, परिचितों, करीबियों से मिल नहीं पाते हैं। कनेक्शन कम होने से वो अकेलापन महसूस करते हैं।

घर-परिवार है संसार - मूड स्विंग्स पर कंट्रोल करने के लिए फैमिली लाइफस्टाइल अपनाना जरूरी है। इसलिए बाहर से जंक फूड खाने के बजाय घर का ताज़ा, परंपरागत खाने को प्राथमिकता दें। परिवार के साथ गपशप, हास-परिहास करते रहें।

अपनी रुचियों पर ध्यान दें- मूड स्विंग्स कंट्रोल करने के लिए आपको अपनी रुचि वाले काम करने चाहिएं। इससे आपका स्ट्रेस कम होगा। इससे आप ज्यादा बेहतर महसूस करेंगेऔर खुश रहेंगे।

जो दर्द दें उनसे दूरी है ज़रूरी- उन चीजों और बातों-यादों से दूरी बनाए रखें जिनसे आपको तनाव बढ़ता है। पुराने मनमुटावों, कटु स्मृतियों, व्यर्थ की बहसों आदि पर ध्यान न देकर स्ट्रेस मैनेजमेंट टेक्निक पर ध्यान दें।

ध्यान, व्यायाम और योग भगाए रोग- ध्यान करने से हमारा दिमाग फोकस होता है। मेडिटेशन, डीप ब्रीदिंग, या माइंडफुलनेस प्रेक्टिस से तनाव कम कर सकते हैं। इसके अलावा योग या इंडोर गेम वर्कआउट, एंडोर्फिन हार्मोन को बढ़ाता है, जो मूड को बेहतर करता है।

कुछ पढ़िए, कुछ लिखिये- पढ़ना-लिखना बहुत बड़ी थैरेपी है। उदासी, निराशा, अवसाद के दौर में अपनी रुचि की कोई क़िताब पढ़िए। क़िताबों की खुशबू आपको तरो-ताज़ा कर देगी। अपने मन की बात, दिल के जज़्बात को कहानी, कविता, डायरी लिखिये। इससे मन हल्का होता है और मूड भी बदल जाएगा और यकीन मानिए उदासी भरे ये दिन जल्दी ही ढलेंगे!

बचपन में दिल का दर्दः क्या हमारी जीवनशैली मासूम धड़कनों की दुश्मन बन गई है?

भारत में बच्चों में हार्ट अटैक की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। इसका संबंध बच्चों की बदलती जीवनशैली, खान-पान, मानसिक तनाव और स्क्रीन टाइम से है। स्कूलों में नियमित हेल्थ जांच, योग, पोषण शिक्षा और अभिभावकों की जागरूकता से ही इस खतरे को रोका जा सकता है। यह केवल स्वास्थ्य नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय चेतावनी है।

प्रियंका सौरभ

जब भी हम ₹हार्ट अटैक₹ शब्द सुनते हैं, हमारे ज़ेहन में पचास-पैंसठ साल का कोई अधेड़ उम्र का व्यक्ति सामने आता है—भागदौड़ भरी ज़िंदगी में उलझा, तनाव और थकान से लदा हुआ। पर आज हकीकत इससे कहीं अधिक डरावनी और चौंकाने वाली है। आज दिल के दौरे सिर्फ बड़ों का ही नहीं, बल्कि मासूम बच्चों का भी पीछा कर रहे हैं। देश के कई हिस्सों से ऐसी खबरें सामने आ रही हैं, जहां स्कूल जाते बच्चे अचानक गिर जाते हैं और डॉक्टर उसे "कार्डियक अरेस्ट" या "सडन हार्ट फेल्योर" बता देते हैं। क्या यह केवल संयोग है? या फिर हमारी जीवनशैली ने नन्हे दिलों पर हमला बोल दिया है?

पिछले कुछ महीनों में देशभर से कई ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जो इस खतरे की गंभीरता की पुष्टि करती हैं। ताजा मामला मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले का है, जहां आठ साल की मासूम बच्ची स्कूल गेट पर पहुंचते ही गिर पड़ी और उसकी मौत हो गई। इससे पहले गुजरात, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र जैसे राज्यों से भी स्कूली बच्चों की हार्ट अटैक से हुई मौत की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। इंडियन मेडिकल जर्नल्स के अनुसार, 2021 और 2022 के बीच 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों में अचानक कार्डियक अरेस्ट से मौत के मामलों में 35% की वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2022 में अकेले भारत में 32,457 युवाओं की मौत हृदयाघात से हुई। इनमें बड़ी संख्या 10 से 18 वर्ष के बीच के किशोरों की थी।

सवाल यह है कि ऐसा हो क्यों रहा है? क्या यह सिर्फ अनुवांशिकता का मामला है? क्या बच्चों में जन्मजात हृदय रोग अचानक सक्रिय हो रहे हैं? या फिर इसके पीछे हमारी बदलती जीवनशैली, खान-पान, स्क्रीन टाइम, मोटापा, मानसिक तनाव और शारीरिक निष्क्रियता का कोई बड़ा योगदान है?

विशेषज्ञ कहते हैं कि इसका कारण ₹मल्टी फैक्टोरियल₹ है—अर्थात यह कई कारकों का मिश्रण है। आज के बच्चे ब्रेड-बर्गर, पिज़्ज़ा, कोल्ड ड्रिंक और पैकेज्ड स्नैक्स पर निर्भर हैं। पौष्टिक आहार, जैसे हरी सब्जियाँ, दालें, फल, दूध अब उनके भोजन का हिस्सा नहीं रह गया है। पहले बच्चे गली-मोहल्ले में दौड़ते-खेलते थे। अब मोबाइल और गेमिंग कंसोल्स ने उनका बचपन छीन लिया है। खेल के मैदानों की जगह टैबलेट ने ले ली है। स्कूलों में अत्यधिक होमवर्क, कोचिंग की दौड़, माता-पिता की अपेक्षाएं और हर क्षेत्र में 'बेस्ट' बनने का दबाव बच्चों में मानसिक तनाव पैदा कर रहा है। यह तनाव शरीर में कोर्टिसोल और अन्य हॉर्मोन को असंतुलित कर देता है, जिससे हृदय पर असर पड़ता है।

देर रात तक मोबाइल चलाना, रील्स देखना और ऑनलाइन गेम खेलना बच्चों की नींद को प्रभावित करता है। नींद की कमी सीधे दिल की सेहत से जुड़ी है। बाल हृदय रोग विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों में हार्ट अटैक आमतौर पर ₹कॉन्जेनिटल हार्ट डिजीज₹, ₹कार्डियोमायोपैथी₹, ₹इलेक्ट्रिकल डिसऑर्डर्स₹ या ₹मायोकार्डिटिस₹ के कारण होता है। लेकिन इनका समय पर पता न चलने के कारण बच्चे अचानक मौत का शिकार हो जाते हैं। दुर्भाग्यवश, हमारे देश में बाल स्वास्थ्य की जांच प्रणाली बहुत कमजोर है। अधिकतर स्कूलों में नियमित हेल्थ चेकअप नहीं होते, और माता-पिता भी बच्चों के थकान या सांस फूलने जैसे लक्षणों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

इस संकट से निपटने के लिए हमें एक बहुआयामी रणनीति अपनानी होगी। सरकार को सभी निजी और सरकारी स्कूलों में हर 6 महीने में हृदय जांच, ईसीजी और सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण अनिवार्य करना चाहिए। स्कूलों में 'फिट इंडिया' जैसे अभियानों को गंभीरता से लागू किया जाए। बच्चों को योग, प्राणायाम, ध्यान और नियमित शारीरिक व्यायाम के लिए प्रेरित किया जाए। माता-पिता को अपने बच्चों के खान-पान, नींद और स्क्रीन टाइम पर सतर्क निगरानी रखनी होगी। बच्चे की थकान, चिड़चिड़ापन या किसी भी असामान्य शारीरिक लक्षण को गंभीरता से लें।

विद्यालयी पाठ्यक्रम में 'पोषण शिक्षा' को शामिल किया जाए ताकि बच्चे कम उम्र से ही हेल्दी फूड और शरीर के महत्व को समझ सकें। टेलीविजन और डिजिटल मीडिया को केवल उत्पाद बेचने के बजाय समाज को स्वस्थ जीवनशैली के लिए शिक्षित करने की भूमिका निभानी चाहिए। यह विडंबना ही है कि जब भारत "विकसित राष्ट्र" बनने की दौड़ में है, तब उसका भविष्य यानी बच्चे हृदय रोगों से जूझ रहे हैं। नीति आयोग, स्वास्थ्य मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय को मिलकर एक समन्वित नीति बनानी चाहिए, ताकि बच्चों की स्क्रीनिंग, हेल्थ एजुकेशन और इमरजेंसी सुविधाएं हर स्कूल में सुनिश्चित हो सकें। यह केवल स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और मानव संसाधन विकास का मामला है।

बचपन धड़कनों का त्योहार होता है, न कि जीवन का अंतिम पड़ाव। जब कोई बच्चा दिल के दौरे से दम तोड़ता है, तो केवल एक जीवन नहीं जाता—एक भविष्य, एक सपना और एक परिवार उजड़ जाता है। हमें यह स्वीकारना होगा कि बच्चों का दिल अब पहले जैसा मजबूत नहीं रहा—क्योंकि हमने उसे कमजोर बना दिया है। अब समय आ गया है कि हम सिर्फ 'हार्ट डे' पर भाषण न दें, बल्कि हर दिन बच्चों के दिल की चिंता करें। नहीं तो वो दिन दूर नहीं जब स्कूल का बस्ता नहीं, स्ट्रेचर उठाना पड़ेगा।

4 राज्य के 70 प्रतिनिधियों के साथ 27 वीं क्षेत्रीय परिषद बैठक संपन्न

ओड़िशा या झारखंड किसी ने भी नही उठाया विवादास्पद सरायकेला का ओडिया मुद्दा !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में गुरुवार को झारखंड की राजधानी रांची के होटल रेडिसन ब्लू में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक शुरू हुई. इसमें झारखंड को विशेष सहायता और योजनाओं की मंजूरी मिलने की उम्मीद है. इस बैठक में पूर्वी भारत के 4 राज्यों के 70 प्रतिनिधि भाग ले रहे थे . पूर्वी राज्यों में झारखंड, बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के प्रतिनिधि शामिल हुए। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी बैठक में शामिल थे जहां सरायकेला खरसावां एवं झारखंड में ओड़िया विकास विहीन रखे जाने पर किसी प्रकार का मुद्दा न तो हेमंत सोरेन ने उठाया नही मोहन चरण मांझी ने ,जिसको लेकर झारखंड के ओड़िआ समुदाय खास नाराज हैं ।वही ओडिशा का एक राजस्व जिला सरायकेला को जबरन बिहार द्वारा लेकर आज तक ओडिशा को लौटाये नहीं जाने के कारण ओडिशा एवं झारखंड के लोग आज भी नाराज रहते हैं ।तब से अब तक षडयंत्र पोषक राजनीति से ।

सनद रहे कि बिहार विभाजन विल बहस के दौरान सन 2000 में ओड़िया भाषा में केंद्र का दोनों सदन चला था जहां सरायकेला खरसावां के ओड़िया लोगों को किस कदर समाप्त किया गया बड़ा ही सनसनीखेज मामला है राष्ट्रीय स्तर का ।आज लोकसभा, राज्यसभा , विधानसभा स्तर से लेकर पंचायत तक राजनीति एक भी ओडिया सदस्यों का नहीं होना आश्चर्य की बात है गणतंत्र के लिये ।उन्हे राजनीतिक षड्यंत्र से समाप्त कर दिये जाने के कारण ओडिया भाषा भी झारखंड में दम तोड रही है ।

इस बैठक में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की जगह वित्त मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य आयीं थी , तो बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जगह विजय चौधरी और सम्राट चौधरी इस सम्मेलन मौजूद रहे ।

इससे पहले झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोशल मीडिया साइट 'एक्स' पर पोस्ट किया, 'धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की पावन धरती झारखंड के रांची में आयोजित 27वीं पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक की अध्यक्षता हेतु माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह जी का स्वागत किया.जानकारी के अनुसार, परिषद की बैठक में झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने केंद्र के सामने 31 प्रमुख मांगे रखीं ।इनमें प्रमुख हैं: कोल कंपनियों पर बकाया 1.40 लाख करोड़ रुपये शीघ्र दिलवाया जाए ।हकारी संघवाद की भावना से आगे बढ़ने का आह्वान ।18 से 50 वर्ष की महिलाओं को ₹2500 प्रतिमाह सहायता देने वाली मंईयां सम्मान योजना, ट्राइबल यूनिवर्सिटी की स्थापना और रांची मेट्रो जैसी संरचनाओं को तेजी से आगे बढ़ाने की मांग ।मुख्यमंत्री ने कहा, रांची मेट्रो परियोजना का शीघ्र क्रियान्वयन हो ।पर्यटन और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सहायता दे ।MSME सेक्टर के माध्यम से युवाओं को रोजगार और गांवों की अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाया जाए। डी एम एफ टी नीति में सुधार और पीएसयू क्षेत्रों में स्थानीयों को प्राथमिकता देने पर बल । शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के लिए केंद्र की सहायता की मांग ।इन मांगों को रखते हुए सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि झारखंड के समग्र विकास के लिए केंद्र सरकार का सहयोग नितांत आवश्यक है। सहकारी संघवाद की भावना से आगे बढ़ना चाहिए ।

बलांगीर से नुआपाड़ा तक नई रेलवे लाइन का निर्माण किया जाएगा

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वरः रेलवे बोर्ड ने बलांगीर-नुआपाड़ा से पटनागढ़ तक 100 किलोमीटर नई रेल लाइन के निर्माण के लिए राज्य सरकार से परियोजना लागत का 50 प्रतिशत और निःशुल्क भूमि उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। राज्य सरकार ने रेलवे बोर्ड के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है और परियोजना से संबंधित नियमों, डीपीआर और वित्तीय लागत के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराने के लिए पत्र लिखा है ।वाणिज्य एवं परिवहन विभाग की अतिरिक्त सचिव सरोज राउत ने ईस्ट कोस्ट रेलवे के महाप्रबंधक को यह पत्र लिखा है।

ट्रंप की वापसी और व्यापार युद्ध की वैश्विक आगः दुनिया के लिए चेतावनी की घंटी

डोनाल्ड ट्रंप की संभावित वापसी के साथ वैश्विक व्यापार युद्ध का खतरा फिर गहराने लगा है। उन्होंने विभिन्न देशों को शुल्क बढ़ोतरी की चेतावनी देते हुए पत्र भेजे हैं। इससे भारत सहित दुनिया भर में आर्थिक अस्थिरता बढ़ सकती है। भारत को आत्मनिर्भर बनते हुए, नए साझेदारियों पर ध्यान देना चाहिए और विश्व मंचों पर व्यापार नीति में संतुलन की वकालत करनी चाहिए। व्यापार को सहयोग का माध्यम बनाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

- डॉ सत्यवान सौरभ

जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, युद्ध और महंगाई जैसे संकटों से जूझ रही है, ऐसे में एक बार फिर अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की वापसी की संभावनाओं के साथ वैश्विक व्यापार युद्ध की आहट सुनाई देने लगी है। हाल ही में ट्रंप द्वारा कई देशों को भेजे गए पत्रों और उनकी सख्त व्यापार नीति के बयान इस बात का संकेत हैं कि यदि वे फिर से सत्ता में आते हैं, तो 'अमेरिका सर्वप्रथम' की नीति के तहत विश्व व्यापार व्यवस्था को झकझोर देने में वे पीछे नहीं हटेंगे।

यह केवल अमेरिकी चुनावी राजनीति का हिस्सा नहीं, बल्कि एक ऐसी सोच है जो पूरी दुनिया की आर्थिक स्थिरता, व्यापारिक समझौतों और राजनयिक संतुलन को प्रभावित कर सकती है। ट्रंप ने अपने पहले कार्यकाल में ही यह स्पष्ट कर दिया था कि वे व्यापार को कोई कूटनीतिक माध्यम नहीं, बल्कि दबाव बनाने का साधन मानते हैं। चीन, मैक्सिको, यूरोपीय संघ, भारत—किसी को भी नहीं छोड़ा। उन्होंने आयात शुल्क को हथियार बनाकर अपने हित साधे और जबरदस्ती शर्तें मनवाईं। अब एक बार फिर, ट्रंप ने अपने बयानों में यह चेताया है कि यदि अन्य देश अमेरिका के साथ 'उचित' व्यापार समझौते नहीं करते, तो उन्हें भारी शुल्क देना होगा। उनके हालिया पत्रों में स्पष्ट रूप से 10 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक शुल्क लगाने की चेतावनी दी गई है। यह सिर्फ धमकी नहीं, बल्कि एक रणनीति है जो वैश्विक व्यापार सहयोग को प्रतिस्पर्धा और भय में बदल देती है।

भारत को ट्रंप की इन नीतियों से दोहरे परिणाम मिल सकते हैं। एक ओर, अमेरिका चीन से दूरी बनाकर भारत जैसे देशों की ओर रुख कर सकता है, जिससे भारत को व्यापारिक अवसर मिल सकते हैं। दूसरी ओर, ट्रंप की 'कड़ी शर्तों वाली' व्यापार नीति भारत को अमेरिकी दबाव में ला सकती है। भारत पहले भी ट्रंप प्रशासन के दौरान कुछ उत्पादों पर शुल्क बढ़ोतरी का शिकार बन चुका है — जैसे इस्पात और एल्यूमिनियम। यदि ट्रंप फिर सत्ता में लौटते हैं, तो यह दबाव और अधिक हो सकता है। विशेष रूप से औषधि उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं, और वस्त्र उद्योग जैसे क्षेत्रों में भारत को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

व्यापार युद्ध किसी एक देश की समस्या नहीं होती — यह पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। जब अमेरिका शुल्क बढ़ाता है, तो बदले में अन्य देश भी प्रत्युत्तर में शुल्क लगाते हैं। इससे वैश्विक आपूर्ति तंत्र टूटता है, महंगाई बढ़ती है, और आर्थिक मंदी का खतरा मंडराता है। 2018-19 के दौरान ट्रंप और चीन के बीच चले व्यापार युद्ध से अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अस्थिरता आई थी। विश्व व्यापार संगठन को भी झटका लगा था, और अंतरराष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि दर में गिरावट देखी गई थी। वही स्थिति अब फिर से उत्पन्न हो सकती है।

ट्रंप के पत्रों में स्पष्ट रूप से लिखा है — "या तो आप व्यापार समझौता करें, या 60 प्रतिशत शुल्क भरें।" यह भाषा किसी सभ्य कूटनीतिक वार्ता की नहीं, बल्कि व्यापारिक दबाव की है। वे अमेरिका को 'व्यापार का सर्वश्रेष्ठ केंद्र' समझते हैं और अन्य देशों को केवल ग्राहक। उनकी यह शैली 'राजनयिक आतंकवाद' जैसी प्रतीत होती है — जहां व्यापार एक हथियार है, और विरोध का अर्थ है दंड। यह नीति न केवल व्यापारिक संतुलन को प्रभावित करती है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों को भी तनावपूर्ण बना सकती है। उनके दृष्टिकोण में दीर्घकालिक सहयोग के लिए कोई स्थान नहीं है, केवल तात्कालिक लाभ सर्वोपरि है।

ट्रंप ने उच्च तकनीक उद्योगों और सेमीचालक निर्माण क्षेत्र को भी निशाना बनाया है। वे चाहते हैं कि अमेरिका के बाहर बनने वाले उन्नत तकनीकी उत्पादों पर भारी शुल्क लगाया जाए, ताकि कंपनियाँ अमेरिका में उत्पादन करें। इससे भारत की सूचना प्रौद्योगिकी आधारित कंपनियों को भी झटका लग सकता है, जो अमेरिकी तकनीकी कंपनियों को सेवाएं देती हैं। यदि ट्रंप ने कामकाजी वीज़ा नीति को फिर से कठोर किया, तो भारतीय तकनीकी विशेषज्ञों को अमेरिका में नौकरी पाने में कठिनाइयाँ होंगी।

ट्रंप का 'अमेरिका सर्वप्रथम' नारा वैश्वीकरण की भावना के विपरीत है। यह राष्ट्रवाद को व्यापार के केंद्र में रखता है और सहयोग की बजाय प्रतियोगिता को महत्व देता है। लेकिन आज की अंतरसंबंधित विश्व अर्थव्यवस्था में कोई देश अकेले आगे नहीं बढ़ सकता। आज की दुनिया साझेदारी आधारित विकास की मांग करती है — जहां तकनीक, व्यापार और नवाचार एक साथ चलते हैं। ट्रंप की नीति इस ताने-बाने को तोड़ सकती है।

ट्रंप की इस नीति से अमेरिका और अन्य देशों के बीच अविश्वास बढ़ सकता है। चीन और रूस पहले से अमेरिका से दूरी बनाए हुए हैं। अब यदि ट्रंप दक्षिण एशियाई और यूरोपीय देशों पर भी इसी प्रकार दबाव डालते हैं, तो एक नया राजनयिक विभाजन देखने को मिल सकता है। यह व्यापार युद्ध धीरे-धीरे एक नया वैश्विक ध्रुवीकरण बन सकता है — जहां देश अलग-अलग समूहों में बंट जाएंगे।

पाकिस्तान में तख्तापलट की दस्तकः मुनीर बनाम जरदारी की जंग

[मुनीर का तख्तापलट अभियानः क्या पाकिस्तान इतिहास दोहराएगा?]

पाकिस्तान की धरती पर सियासी तूफान की आहट एक बार फिर गूंज रही है, मानो इतिहास का चक्र अपनी अनवरत यात्रा में फिर उसी भयावह मोड़ पर लौट आया हो। इस्लामाबाद के सत्ता के गलियारों में साजिशों की काली छाया मंडरा रही है, जहां सत्ता का ताज तलवारों की धार पर नाच रहा है। सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर और राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के बीच गहराता तनाव न केवल पाकिस्तान को, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया को एक नए संकट की कगार पर ले आया है। यह वह क्षण है जब भारत, अपने पड़ोसी मुल्क की इस उथल-पुथल को नजदीक से देख रहा है, अपनी रणनीति को और धार दे रहा है, क्योंकि इस खेल का हर दांव भारत की सुरक्षा, स्थिरता और क्षेत्रीय प्रभुत्व से जुड़ा है।

पाकिस्तान में सैन्य तख्तापलट कोई नई बात नहीं है। 1958 में अयूब खान ने सत्ता हथियाई, 1977 में जिया-उल-हक ने 'ऑपरेशन फेयर प्ले' के जरिए जुल्फिकार अली भुट्टो को अपदस्थ किया, और 1999 में परवेज मुशर्रफ ने नवाज शरीफ को सत्ता से बेदखल कर शासन की बागडोर संभाली। आज, जुलाई 2025 में, आसिम मुनीर के नेतृत्व में एक और तख्तापलट की सुगबुगाहट ने वैश्विक मंच पर हलचल मचा दी है। पाकिस्तानी समाचार पत्रों और स्वतंत्र विश्लेषकों के अनुसार, मुनीर न केवल जरदारी को हटाने की योजना बना रहे हैं, बल्कि संसदीय ढांचे को ध्वस्त कर राष्ट्रपति प्रणाली लागू करने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। यह कदम पाकिस्तान को सैन्य तानाशाही की गहरी खाई में धकेल सकता है, जिसके भारत पर गहरे और दीर्घकालिक प्रभाव होंगे।

मुनीर की महत्वाकांक्षा को हाल के घटनाक्रमों ने और बल दिया है। मई 2025 में, शहबाज शरीफ सरकार ने उन्हें फील्ड मार्शल के पद पर पदोन्नत किया, जो अयूब खान के बाद दूसरा ऐसा उदाहरण है। यह पदोन्नति तब हुई जब भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' ने पाकिस्तानी सेना को करारी शिकस्त दी, जिसमें पीओके और पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को नष्ट किया गया, और मसूद अजहर का परिवार मारा गया। इसके बावजूद, मुनीर को आजीवन कानूनी संरक्षण और विशेषाधिकार प्राप्त हुए, जिसने उनकी ताकत को अभूतपूर्व स्तर पर पहुंचा दिया। उनकी हाल की अमेरिका, चीन और सऊदी अरब की यात्राएं, विशेष रूप से जून 2025 में व्हाइट हाउस में डोनाल्ड ट्रंप के साथ उनकी गुप्त मुलाकात, तख्तापलट की अटकलों को और पुख्ता करती हैं।

इस सियासी तूफान में जरदारी और उनके बेटे बिलावल भुट्टो की भूमिका भी उलझन भरी है। मार्च 2024 में दूसरी बार राष्ट्रपति बने जरदारी, सेना के फैसलों में बार-बार हस्तक्षेप कर रहे हैं, जो मुनीर को नागवार गुजर रहा है। दूसरी ओर, बिलावल भुट्टो ने एक साक्षात्कार में हाफिज सईद और मसूद अजहर जैसे आतंकियों को भारत को सौंपने की बात कहकर तहलका मचा दिया। इस बयान ने न केवल जिहादी समूहों को भड़काया, बल्कि सेना को भी नाराज किया, जो इन समूहों को अपने रणनीतिक हितों के लिए इस्तेमाल करती रही है। बिलावल का यह कदम शायद अपने पिता के लिए समर्थन जुटाने की कोशिश था, लेकिन इसने उनके परिवार को और संकट में डाल दिया। खबरें हैं कि उनके परिवार के कुछ सदस्य कनाडा भाग गए हैं, जो भारत के कड़े रुख और ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान में डर के माहौल को दर्शाता है।

भारत के लिए इस स्थिति के कई आयाम हैं। पहला, अगर मुनीर सत्ता हथियाते हैं, तो पाकिस्तान में सैन्य शासन का और सख्त होना भारत के लिए खतरे की घंटी है। मुनीर, जो 2019 के पुलवामा हमले के समय आईएसआई प्रमुख थे, भारत के खिलाफ 'हजार जख्मों से खून बहाने' की नीति में यकीन रखते हैं। उनके शासन में सीमा पर आतंकी गतिविधियां बढ़ सकती हैं, जैसा कि अप्रैल 2025 के पहलगाम हमले में देखा गया, जिसमें 26 लोग मारे गए। भारत ने इसका जवाब ऑपरेशन सिंदूर से दिया, जिसमें 12 आतंकी ठिकाने नष्ट किए गए और 150 से अधिक आतंकी मारे गए। लेकिन मुनीर के सत्ता में आने से ऐसी घटनाएं और तेज हो सकती हैं। उनकी हाल की टिप्पणियां, जिसमें उन्होंने 1971 की हार का बदला लेने और भारत को तोड़ने की बात कही, इस खतरे को और स्पष्ट करती हैं।

दूसरा, मुनीर की अमेरिका से बढ़ती नजदीकी भारत के लिए चिंता का विषय है। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि ट्रंप प्रशासन पाकिस्तान को बिटकॉइन खनन और अन्य व्यावसायिक हितों के लिए एक रणनीतिक केंद्र बनाना चाहता है, जिसके लिए जरदारी जैसे चीन-समर्थक नेताओं को हटाना जरूरी है। जून 2025 में ट्रंप और मुनीर की मुलाकात, जिसमें शहबाज शरीफ को दरकिनार किया गया, इस बात का संकेत देती है। भारत को न केवल पाकिस्तान, बल्कि अमेरिका-चीन के बीच बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव से भी जूझना होगा। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने हाल ही में कहा कि भारत आतंकवाद के खिलाफ 'गहराई में जाकर' कार्रवाई करेगा, और मुनीर का सत्ता में आना इस नीति को और मजबूत करने की जरूरत को रेखांकित करता है।

तीसरा, पाकिस्तान की आंतरिक अस्थिरता भारत के लिए अवसर भी ला सकती है। जेल में बंद इमरान खान अभी भी पाकिस्तान के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। उनकी पार्टी, पीटीआई, ने 2024 के चुनाव में 93 सीटें जीतीं, लेकिन सेना के हस्तक्षेप से सत्ता से बाहर रखी गई। तख्तापलट की स्थिति में, जनता का गुस्सा, जैसा कि #ReleaseKhanForPakistan जैसे सोशल मीडिया अभियानों में दिखा, सड़कों पर उतर सकता है। यह अस्थिरता पाकिस्तान को कमजोर कर सकती है, जिससे भारत को कूटनीतिक और रणनीतिक लाभ मिल सकता है। भारत ने हाल ही में सिंधु जल संधि को निलंबित करने और ऑपरेशन सिंदूर जैसे कड़े कदमों से पाकिस्तान पर दबाव बढ़ाया है।

हालांकि, भारत को सावधानी बरतनी होगी। इतिहास गवाह है कि तख्तापलट के बाद नया शासक अपनी वैधता साबित करने के लिए भारत के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाता है। जिया-उल-हक ने 1977 में सत्ता हथियाने के बाद कश्मीर में अस्थिरता बढ़ाई, और मुशर्रफ ने 1999 में करगिल युद्ध छेड़ा। मुनीर, जिनका भारत-विरोधी रुख उनकी आईएसआई पृष्ठभूमि से स्पष्ट है, ऐसा ही कुछ कर सकते हैं। भारत को जम्मू-कश्मीर में सतर्कता बढ़ानी होगी और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान के आतंकवाद-प्रायोजित रुख को और उजागर करना होगा।

पाकिस्तान का यह सियासी संकट यह साबित करता है कि वहां लोकतंत्र केवल एक दिखावा है। सेना की लोहे की पकड़ और विदेशी ताकतों का हस्तक्षेप वहां की जनता को असली आजादी से वंचित रखता है। भारत के लिए यह समय है कि वह अपनी रक्षा और कूटनीति को और मजबूत करे। मुनीर का संभावित तख्तापलट न केवल पाकिस्तान की अस्थिरता को बढ़ाएगा, बल्कि दक्षिण एशिया में शांति के लिए खतरा पैदा करेगा। भारत को इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा, ताकि वह अपनी सुरक्षा सुनिश्चित कर सके और क्षेत्रीय स्थिरता का नेतृत्व कर सके।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023